हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 6, अंकः 240, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 16 फरवरी, 2022 दिन बुधवार गाजीपुर/वाराणसी

अमित शाह का अखिलेश पर तंज, बोले- पीला चश्मा पहनने वाले को सब पीला ही दिखता है

बहनजी और बबुआ दोनों के शासन में यूपी की अर्थव्यवस्था पूरी तरह चौपट हो गई थी

औरैया। गृह मंत्री अमित शाह ने सपा प्रमुख अखिलेश यादव पर तंज कसा है कि जो पीला चश्मा लगाए होता है उसे सब पीला ही दिखाई देता है। उन्होंने कहा है कि सपा बसपा के बहनजी और बबुआ दोनों के शासन में उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था पूरी तरह चौपट हो गई थी। सपा बसपा बसपा सपा बुआ भतीजा ने पंद्रह साल तक सरकार चलाई लेकिन गरीबों के लिए कुछ नहीं किया। वह मंगलवार को औरैया की दिबियापुर विधानसभा क्षेत्र अच्छल्दा में जनसभा को संबोधित कर रहे थे।

पूर्व प्रस्तावित कार्यक्रम से कुछ देरी से गृहमंत्री अमित शाह औरैया की दिबियापुर विधानसभा क्षेत्र में आयोजित जनसभा में पहुंचे। उनका हेलीकाप्टर अछल्दा रामलीला मैदान पर दोपहर 1:05 बजे उतरा। यहां से वह सीधे जनसभा स्थल पर बने मंच पर गए और संबोधन शुरू किया। उन्होंने कहा कि आज यमुना नदी के तट पर औरैया के देवकली मंदिर में विराजमान भगवान शिव और महामाई मंदिर में विराजमान महामाई को प्रणाम करके अपनी बात शुरू कर रहा हूं। कहा, आप सभी लोगों ने वैक्सीन लिया है ना। जब वैक्सीन मोदी जी वैक्सीन लेकर आए तो अखिलेश बाबू कहते थे मोदी वैक्सीन है मत लीजिएगा, पंद्रह-बीस दिन इधर उधर घूमते रहे और ट्विट करते रहे और फिर डरकर खुद भी लगवा लिया। मोदी जी ने एक सौ तीस करोड़ लोगों को वैक्सीन देने का काम किया है। ये जो अखिलेश है उन्होंने अपनी पार्टी का नाम तो समाजवादी पार्टी रखा है। बसपा सपा बुआ भतीजा ने पंद्रह साल तक सरकार चलाई। किसी के घर में गैस का सिलिंडर पहुंचा है क्या, नरेन्द्र मोदी जी ने एक करोड़ 67 लाख महिलाओं को गैस चूल्हा देने का काम किया है। जिन माताओं को गैस का चूल्हा दिया है, सभी को होली और दीवाली पर एक एक गैस सिलिंडर फ्री देने का काम करेगी। उन्होंने कहा कि सत्तर साल तक कांग्रेस ने शासन किया लेकिन गरीब के घर में शौचालय था क्या। मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाया तो दो करोड़ से ज्यादा घरों में शौचालय बने और गांवों में बिजली भेजने का काम किया। अखिलेश बाबू के शासन में बिजली रानी क्या चौबीस घंटे बिजली आती थी क्या लेकिन अब शहरों में 24 और गांव में 22 से 24 घंटे बिजली मिल रही है। गरीबों को मुफ्त राशन मिल रहा है और पांच लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज मिल रहा है। इसमें कोई भी काम अखिलेश की सरकार ने क्या।

भारतीय जनता पार्टी की सरकार ऐसी सरकार है जो गरीबों के लिए काम करती है। पांच साल तक किसी भी किसान बिजली बिल नहीं भरना पड़ेगा। अखिलेश कहते हैं कि क्या हुआ है, जिसका चश्मा पीला हो उसे सब पीला ही दिखाई पड़ता है। उन्होंने कहा कि सपा बसपा के बहनजी और बबुआ दोनों शासन करते थे, इतने बड़े उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था चौपट हो गई थी। अर्थतंत्र में उत्तर प्रदेश देश में सातवें नंबर पर था और पांच साल में योगी जी ने दूसरे नंबर पर ला दिया। अब एक और पांच साल में पहले नंबर पर ले जाने का काम करना है।

गुरुग्राम में बुर्का और हिजाब पहने विदेशी महिला ने कैब ड्राइवर को मारा चाकू

गुरुग्राम। देशभर में हिजाब को लेकर जारी विवाद के बीच मंगलवार को दिल्ली से सटे गुरुग्राम में बुर्का और हिजाब पहने हुई एक विदेशी महिला ने कथित तौर पर एक कैब ड्राइवर को चाकू मार दिया। घायल कैब ड्राइवर को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। पुलिस आरोपी महिला को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। महिला मिस्र की नागरिक बताई जा रही है। जानकारी के अनुसार, गुरुग्राम के राजीव चौक पर मंगलवार सुबह 11 बजे के आसपास कथित तौर पर बुर्का और हिजाब पहने हुई एक विदेशी महिला ने चौक पर खड़े कैब ड्राइवर को चाकू मारकर घायल कर दिया। वारदात को अंजाम देने के बाद महिला वहां से भागने लगी। घायल कैब चालक ने उसका पीछा किया। वहीं, जब चौक के पास तैनात पुलिसकर्मियों को घटना की जानकारी मिली तो वह भी मौके पर पहुंच गए और महिला को काबू कर लिया। इस दौरान महिला ने पुलिसकर्मियों से भी हाथापाई की। पुलिस ने महिला को थाने ले जाकर पूछताछ कर रही है। फिलहाल हमले की वजह अभी पता नहीं चल सकी है। उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर के निवासी रघुराज ने पुलिस को बताया कि वह किराये पर कैब चलाते हैं और सवारियों को गुरुग्राम से दिल्ली के आनंद विहार तक लाते- ले जाते हैं।

जो कहते थे गर्मी निकाल देंगे, दो चरणों के मतदान ने उन्हें ठंडा कर दिया : अखिलेश

फतेहपुर। विधानसभा चुनाव प्रचार के लिए जनसभा को संबोधित करने फतेहपुर पहुंचे पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने भाजपा पर निशाना साधा। सीएम योगी के गर्मी निकाल देने के बयान पर पलटवार करते हुए उन्होंने कहा कि जबसे दो चरणों का मतदान हुआ है, तब से भाजपाइयों की भाप निकल गई है और भाजपाई ठंडे पड़ गए हैं। अखिलेश ने फतेहपुर के एमआईसी मैदान से खागा प्रत्याशी रामतीर्थ परमहंस, हुसैनगंज प्रत्याशी ऊषा मौर्या, अयाह शाह प्रत्याशी विशम्भर निषाद और फतेहपुर प्रत्याशी सीपी लोधी के समर्थन में मत मांगे। इसके बाद उन्होंने जहानाबाद में दूसरी सभा संबोधित कर प्रत्याशी मदन गोपाल वर्मा और बिंदकी से दावेदार रामेश्वर दयाल दयालू के पक्ष में वोट मांगे। अपने संबोधन में उन्होंने सीएम योगी पर तंज कसते हुए कहा कि बाबा सीएम खुद लैपटॉप नहीं चला पाते तो बाटेंगे क्या? किसानों के बारे में उन्होंने कहा कि मंडियों में धान लुट गया, खाद मिल नहीं पा रही। डबल इंजन की सरकार में भ्रष्टाचार भी डबल हो गया। रोजगार के विषय पर उन्होंने कहा कि सपा की सरकार बनी तो आईटी क्षेत्र में अपने प्रदेश में 22 लाख युवाओं को रोजगार दिया जाएगा। बाबा अपने पंसदीदा जानवरों को नहीं संभाल पा रहे हैं। अखिलेश ने कहा कि हमारी सरकार बनती है तो जानवरों से मरने वालों को 5-5 लाख रुपए मुआवजा दिया जाएगा।

सेंसेक्स फिर 58 हजार के पार निकला, निफ्टी में 510 अंक की तेजी

नई दिल्ली। सप्ताह के दूसरे दिन मंगलवार को शेयर बाजार हरे निशान पर खुला और दिनभर बढ़त के साथ कारोबार करते हुए अंत में जोरदार तेजी लेते हुए बंद हुआ। स्टॉक मार्केट के दोनों सूचकांकों ने बीते दिन की सुस्ती से उबरते हुए मंगलवार लंबी छलांग लगाई। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 1736 अंक उछलकर 58,142 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी इंडेक्स 510 की बढ़त के साथ 17,352 के स्तर पर बंद हुआ। इससे पहले कारोबार की शुरूआत तेजी के साथ करते हुए सेंसेक्स 296 अंक चढ़कर 56,701 के स्तर पर खुला था, निफ्टी ने 85 अंकों की तेजी के साथ 16,928 के स्तर पर कारोबार शुरू किया था। दोपहर दो बजे के बाद सेंसेक्स 1650 अंकों की जबरदस्त तेजी के साथ एक बार फिर 58 हजार के स्तर को पार कर 58,056 के स्तर पर आ गया। इस दौरान निफ्टी में भी जोरदार तेजी आई और यह 483 अंकों की तेजी के साथ 17,325 के स्तर पर आ गया है। गौरतलब है कि पिछले कारोबारी सत्र में सोमवार को बाजार की शुरूआत लाल निशान पर हुई थी और अंत तक जारी रही। दिनभर के कारोबार के बाद सेंसेक्स 1747 अंक टूटकर 56,406 के निचले स्तर पर बंद हुआ था। जबकि, निफ्टी सूचकांक 531 अंक फिसलकर 16,843 के स्तर पर बंद हुआ था।

कर्नाटक के स्कूलों में कई छात्राओं ने छोड़ी परीक्षा, बोलीं- एग्जाम से ज्यादा हिजाब जरूरी

शिवमोगा। कर्नाटक के स्कूलों में हिजाब पहनने का मामला अभी शांत नहीं हुआ है। शिवमोगा और उडुपी के स्कूलों में कुछ छात्राओं को अलग कैमरे में बैठने के लिए कहा गया, क्योंकि इन छात्राओं ने बिना हिजाब पहने परीक्षा देने से इनकार कर दिया था। उधर, कोडागु जिले के नेल्लीहुडिकेरी में कर्नाटक पब्लिक स्कूल के कुछ छात्रों ने हिजाब प्रतिबंध के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। स्कूलों के बाहर खड़े अभिभावकों ने बताया कि स्कूल प्रशासन ने भी छात्रों को बिना हिजाब के परीक्षा में बैठने को कहा है। कुछ छात्राओं ने परीक्षा छोड़ दी क्योंकि उन्हें हिजाब के साथ स्कूल परिसर में प्रवेश करने से मना कर दिया गया था। एक छात्रा ने कहा, 'मैं हिजाब नहीं हटाऊंगी। मैं पहले केवल हिजाब के साथ स्कूल जाती थी। स्कूल प्रशासन ने हमसे कहा कि या तो हिजाब हटाओ या जगह छोड़ दो। उन्होंने हमें हिजाब पहनकर परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी।' वहीं, एक अन्य छात्रा ने कहा कि मैं ये स्कूल और अपनी परीक्षा छोड़ रही हूं क्योंकि मुझे अपना हिजाब हटाने के लिए कहा गया था। मीडियाकर्मियों से बात करते हुए एक छात्र के परिजन ने कहा, 'स्कूल में हिजाब पर प्रतिबंध के बाद मैं उसे स्कूल नहीं भेज रहा हूं। मैं उसे दो दिन से स्कूल भेज रहा था क्योंकि उसे 10वीं कक्षा की परीक्षा की तैयारी करनी थी, लेकिन कुछ छात्रों को अलग कमरे में बैठने को कहा गया क्योंकि उन्होंने हिजाब हटाने से इनकार किया था।' उन्होंने कहा, 'पहले ऐसा कुछ नहीं होता था। अब तक हमारे परिवार के कई लोग हिजाब पहनकर इस स्कूल में पढ़ चुके हैं। नियमों में अचानक बदलाव क्यों किया गया?' वहीं, एक परिजन ने कहा कि अदालत के फैसले के बाद ही मैं अपनी भतीजी को लेकर स्कूल लेकर आऊंगा। शिक्षा जरूरी है, लेकिन हमारे लिए हिजाब सबसे महत्वपूर्ण है।' एक अन्य अभिभावक ने भी कहा कि हिजाब पहनकर आए छात्रों को स्कूल में एक अलग कमरे में बैठने के लिए कहा जा रहा है।

हिजाब विवाद में कूदा इस्लामिक देशों का संगठन, हरिद्वार हेट स्पीच पर भी बोला, भारत ने दिया करारा जवाब

नई दिल्ली। कर्नाटक के स्कूलों एवं कॉलेजों में हिजाब पहनने की अनुमति न होने पर छिड़े विवाद ने अब अंतरराष्ट्रीय रूप ले लिया है। मुसलमान देशों के संगठन इस्लामिक सहयोग संगठन ने इस मुद्दे पर टिप्पणी की है और भारत को नसीहत देने की कोशिश की है। इस्लामिक सहयोग संगठन ने ट्वीट किया, 'इस्लामिक सहयोग संगठन का सचिवालय यह मांग करता है कि भारत मुस्लिम समुदाय की सुरक्षा, उनके हितों का ख्याल रखे। इस्लाम को मानने वाले लोगों की जीवनशैली की रक्षा करे। इसके अलावा हिंसा के लिए उकसाने वाले लोगों और हेट क्राइम करने वालों के खिलाफ कड़ा ऐक्शन लिया जाए।' इस्लामिक सहयोग संगठन ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से मांग की है कि वह इस मामले में दखल और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए प्रयास करे। इतना ही नहीं इस्लामिक सहयोग संगठन ने भारत को हरिद्वार में हुई धर्म संसद के दौरान हेट स्पीच को लेकर भी भारत को उपदेश देने की कोशिश की है। हालांकि भारत ने इस्लामिक सहयोग संगठन के रुख पर कड़ी प्रतिक्रिया जताई है और कहा कि भारत में हर मजहब के लोग बहुत खुशी के साथ रह रहे हैं। अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा कि कोई भी भारत को उपदेश नहीं दे सकता है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि क्या पाकिस्तान में कोई लड़की जय श्री राम का नारा लगा सकती थी। मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा कि यदि पाकिस्तान में कोई लड़की जय श्री राम का नारा लगा देती तो उसका तो सिर ही कलम किया जा सकता था। इस्लामिक सहयोग संगठन में कुल 57 मुस्लिम देश शामिल हैं, जिनमें पाकिस्तान, तुर्की, सऊदी अरब जैसे बड़े मुस्लिम देश भी हैं। संयुक्त राष्ट्र के बाद यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा संगठन माना जाता है। अकसर इस्लामिक मुद्दों को लेकर इसकी मीटिंग्स होती रहती हैं। पाकिस्तान की ओर से कई बार इसमें कश्मीर के मुद्दे को भी उठाने का प्रयास किया गया है, लेकिन अब तक उसे सफलता नहीं मिल सकी है।

मुंबई में ईडी की बड़ी कार्रवाई : दाऊद के 10 ठिकानों पर छापे, अंडरवर्ल्ड और मनी लान्ड्रिंग से जुड़ा है मामला

मुंबई। मुंबई में प्रवर्तन निदेशालय अंडरवर्ल्ड और मनी लान्ड्रिंग से जुड़े लोगों से जुड़े कई स्थानों पर छापेमारी कर रहा है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ये तलाशी हाल ही में दर्ज मनी लान्ड्रिंग मामले में की जा रही है। "ईडी अंडरवर्ल्ड से जुड़े लोगों से जुड़े कई स्थानों पर मुंबई में मनी लान्ड्रिंग मामले में तलाशी कर रहा है। इस मामले में कुछ अंडरवर्ल्ड भगोड़े और राजनेताओं की भी जांच चल रही है।" समाचार एजेंसी एएनआइ से मिली जानकारी के अनुसार ईडी के अधिकारी दाऊद इब्राहिम की बहन हसीना पारकर के मुंबई स्थित आवास पर भी गए हैं। आपको बता दें कि महाराष्ट्र की राजधानी में करीब 10 जगहों पर ईडी की तलाशी चल रही है। यह कार्रवाई प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) के तहत की जा रही है। सूत्रों ने बताया कि एक नेता के कुछ परिसरों पर भी छापेमारी की गई है। उन्होंने कहा कि ईडी को मिली कुछ खुफिया सूचनाओं और राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) द्वारा दर्ज प्राथमिकी के आधार पर कार्रवाई की जा रही है। माना जाता है कि दाऊद इब्राहिम ने 1980 के दशक में भारत से भागकर एक विशाल व्यापारिक साम्राज्य स्थापित किया था। हाल ही में पंजाब में डी-कंपनी (दाऊद इब्राहिम द्वारा नियंत्रित मुंबई अंडरवर्ल्ड संगठित अपराध सिंडिकेट) की उपस्थिति मिली थी, जो इस बात का संकेत है कि पाकिस्तान की आईएसआई ने पंजाब में आतंक फैलाने के लिए अंडरवर्ल्ड का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। मुंबई में 1993 में हुए बम धमाकों का मास्टरमाइंड दाऊद भारत का मोस्ट वांटेड भगोड़ा है। ईडी का मामला राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) द्वारा इस महीने की शुरूआत में डी-कंपनी के खिलाफ कड़े गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत दायर एक ताजा मामले पर आधारित है। दाऊद और उसके कई सहयोगियों को एनआईए ने हवाला लेनदेन सहित भारत के खिलाफ आतंकी गतिविधियों में उनकी भूमिका के साथ नामित किया है।

परिसीमन आयोग की अंतरिम रिपोर्ट पर एतराज जताने वाले आयोग के समक्ष लिखित तौर से रखें अपना पक्ष : मनोज सिन्हा

जम्मू। केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने मंगलवार को परिसीमन आयोग की अंतरिम रिपोर्ट को लेकर विभिन्न संगठनों द्वारा जताई जा रही आपत्तियों से खुद को अलग करते हुए कहा कि जिन्हें एतराज है, वे लिखित तौर पर अपना पक्ष आयोग के समक्ष रखें। परिसीमन आयोग का गठन संसद द्वारा पारित एक कानून के तहत ही हुआ है। आज यहां बजालता में एक समारोह के दौरान पत्रकारों के साथ बातचीत में उन्होंने कहा कि परिसीमन आयोग और जम्मू-कश्मीर में चुनाव, इन दोनों ही मामलों में प्रदेश सरकार कोई ज्यादा भूमिका नहीं है। चुनाव आयोग एक विधि सम्मत स्वायत्त संस्था है और परिसीमन आयोग इसके अधीन ही कार्य करता है। अगर किसी को परिसीमन आयोग की सिफारिशों पर एतराज है तो वह लिखित तौर पर अपनी आपत्तियां और सुझाव आयोग को सीधे भेजें। अगर कोई नागरिक मानता है कि परिसीमन सही नहीं हो रहा है, तो वह आयोग को इससे अवगत कराए ताकि इस मुद्दे पर एक सकारात्मक चर्चा हो सके। उन्होंने सुरक्षाबलों की सराहना करते हुए कहा कि बीते 70 साल के दौरान हमारे सुरक्षाबलों ने देश के विभिन्न हिस्सों में विशेषकर जम्मू-कश्मीर में जो भूमिका निभाई है, वह प्रशंसनीय है। जिस तरीके से हमारे सुरक्षाबल सभी चुनौतियों का सामना करते हुए उनसे पार पाते हैं, वह सराहणीय और अनुकरणीय है।

किसानों का हित पीएम मोदी जितना किसी और ने नहीं किया : जेपी नड्डा

बठिंडा। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा मौड़ मंडी रैली में पहुंच गए हैं। उन्होंने रैली को संबोधित करते हुए किसानों के नाम पर राजनीति करने वालों पर निशाना साधा। नड्डा ने कहा कि किसानों के नाम पर राजनीति करने वाले कई लोग हैं लेकिन मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि पीएम मोदी ने किसानों के कल्याण के लिए जो किया वह कभी किसी और ने नहीं किया। बता दें कि नड्डा रैली में किसान प्रदर्शनकारियों के रास्ता जाम करने की वजह से देर से पहुंचे। उनको जिस मार्ग से रैली स्थल पर आना था उस पर किसान संगठनों के सदस्यों ने जाम लगा दिया था। इस कारण उनको उस स्कूल में कुछ देर रुकना पड़ा जहां उनके हेलीकाप्टर के लिए हैलीपैड बनाया गया था। नड्डा ने कहा कि जब कांग्रेस के लोग यहां आते हैं, तो उनसे पूछें कि जब 1984 के दंगे हुए और सिख भाई मारे गए तो कांग्रेस नेताओं ने क्या कहा था उस समय कांग्रेस के नेता नेताओं ने कहा था ' जब एक बड़ा पेड़ गिरता है, तो धरती हिलती है। नड्डा ने कहा 1984 में मौत का नाच हुआ, मानव जाति को शर्मसार किया गया, सिखों को जला दिया गया और, कांग्रेस ने यह कहा। नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का पंजाब से खास लगाव रहा है और इसलिए उन्होंने पंजाब व यहां के लोगों के लिए कई कदम उठाए हैं। हरमंदिर साहब को विदेशी अंशदान (विनियमन) अधिनियम की मंजूरी नहीं मिली थी। दुनिया भर के लोग यहां प्रार्थना करना और दान करना चाहते थे। लेकिन, उस दान को विदेशी अंशदान के तहत विनियमित नहीं किया गया था। पीएम मोदी ने विदेशी चंदा की मंजूरी दी। पंजाब में 132.80 लाख मीट्रिक टन फसलों की खरीद हुई और अगर कोई राज्य है जहां पीएम मोदी ने सबसे ज्यादा एमएसपी दिया है, तो वह पंजाब है। एक साल के भीतर रिकॉर्ड 23,000 करोड़ रुपये की एमएसपी दी गई। इससे पहले वह रैली स्थल पर पहुंचे। पहले वह रैली में जाने के लिए एक स्कूल परिसर में बनाए गए हैलीपैड पर पहुंचे। वह सड़क मार्ग से रैली स्थल पर आए। किसान प्रदर्शनकारियों के सड़क पर जाम लगाने के कारण पुलिस ने नड्डा के रैली स्थल तक जाने का रूट बदल दिया। पहले जिस रास्ते से नड्डा को रैली स्थल पर पहुंचना था प्रदर्शनकारियों ने वहां पर धरना लगाकर सड़क को बंद कर दिया। रैली के मंच पर भाजपा, पंजाब लोक कांग्रेस और शिरोमणि अकाली दल (संयुक्त) के नेताओं ने जेपी नड्डा का स्वागत किया। रैली स्थल और इसके आसपास सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। इससे पहले रैली स्थल पर भाजपा कार्यकर्ता और लोग जेपी नड्डा की प्रतीक्षा कर रहे थे। किसानों के रास्ता जाम करने की वजह से भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रैली स्थल पर नहीं पहुंच पा रहे थे। वह एक स्कूल परिसर में बनाए हैलीपैड पर पहुंचे और किसानों के रास्ता जाम करने के कारण उनको स्कूल में ही रुकना पड़ा था। बाद में पुलिस ने रैली स्थल तक जाने के लिए नड्डा का रूट बदला और वह रैली में पहुंचे।

87 साल की बुजुर्ग महिला से दुष्कर्म का आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने तिलक नगर इलाके में 87 वर्षीय महिला से कथित रूप से दुष्कर्म करने के आरोप में एक सफाईकर्मी को गिरफ्तार किया है। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, उन्होंने बुजुर्ग महिला के साथ दुष्कर्म करने के आरोप में 30 वर्षीय सफाईकर्मी को गिरफ्तार किया है। बता दें कि, तिलक नगर थाना क्षेत्र में एक 87 वर्षीय बुजुर्ग महिला के साथ हुए दुष्कर्म की शिकायक उनके परिजनों ने पुलिस में की थी। इस शिकायत के आधार पर तिलक नगर थाना पुलिस ने मामला दर्ज किया। बताया जा रहा है कि घटना के समय बुजुर्ग घर में अकेली थी। बुजुर्ग के साथ रहने वाली उनकी बेटी घर से बाहर किसी काम से गई हुई थी। पुलिस के अनुसार इस मामले में पहले परिजनों की ओर से घर से चोरी की शिकायत की गई थी। लेकिन इसके बाद पीड़िता की बेटी द्वारा पुलिस को दुष्कर्म होने की शिकायत दी गई। जिसके बाद पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तिलक नगर इलाके में 87 वर्षीय महिला से कथित रूप से दुष्कर्म करने के आरोप में एक सफाईकर्मी को गिरफ्तार कर लिया है।

चिंतन मनन

चीन पर कार्रवाई

भारत सरकार ने एक बार फिर चीन पर डिजिटल स्ट्राइक की है। भारत की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करने वाले 54 चीनी ऐप्स पर भारत सरकार प्रतिबंध लगाएगी। एएनआइ के अनुसार, इन 54 चीनी ऐप्स में ब्यूटी कैमराः स्वीट सेल्फी एचडी, ब्यूटी कैमराः सेल्फी कैमरा, ईक्वलाइजर एंड बेस बूस्टर, कैमकार्ड फॉर सेल्सफोर्स एंट, इसोलैंड 2ः एशेज ऑफ टाइम लाइट, वीवा वीडियो एडिटर, टेनसेन्ट एक्सराइवर, ऐप लॉक और डुअल स्पेस लाइट शामिल हैं। दरअसल, इससे पहले पिछले साल जून में भारत ने देश की संप्रभुता और सुरक्षा के खतरे को ध्यान में रखते हुए व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे टिकटाक, वीचैट और हेलो सहित 59 चीनी मोबाइल एप्लिकेशन पर प्रतिबंध लगा दिया था। 29 जून के आदेश में प्रतिबंधित अधिकांश ऐप्स को लेकर खुफिया एजेंसियों ने चिंता जाहिर करते हुए कहा था कि, उपयोगकर्ता डेटा एकत्र कर रहे हैं और संभवतः उन्हें बाहर भी भेज रहे हैं। चीन के एप्स पर पाबंदी के फैसले के बाद निरंकुश चीनी नेतृत्व और उसकी शरारती सेना अपनी हरकतों से बाज आएगी, इस बारे में कुछ कहना कठिन है। भारत इसके पहले भी चीन के सौ से अधिक एप्स को प्रतिबंधित कर चुका है। इसके बावजूद उसकी सेना लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर छेडछाड़ करने में लगी हुई है। चीनी सेना किस तरह बेलगाम होकर अपनी करनी पर आमादा है, इसका पता इससे चलता है कि बीते दिनों उसने उस वक्त सीमा रेखा का अतिक्रमण करने की कोशिश की, जिस समय दोनों देशों के सैन्य अधिकारियों के बीच बातचीत हो रही थी। स्पष्ट है कि चीन आसानी से मानने वाला नहीं है। उसे सख्त संदेश देने के लिए यह आवश्यक है कि आर्थिक मोर्चे पर उसके खिलाफ ऐसे बड़े फैसले लिए जाएं जो उसकी अर्थव्यवस्था को तगड़ा नुकसान पहुंचाएं। इसी के साथ सैन्य मोर्चे पर और अधिक चौकसी बरतनी होगी। यह चौकसी लद्दाख के साथ-साथ उन सभी इलाकों में बरती जाए, जहां चीन की सीमा लगती है। भारत को अपनी सैन्य तैयारियों के जरिये चीन को यह संदेश देने की जरूरत है कि अगर उसने सीमा पर यथास्थिति बदलने की कोशिश की तो उसे अनुमान से अधिक करारा जवाब मिलेगा। इसके लिए प्रत्येक स्तर पर सैन्य तैयारी तेज करनी होगी और इस क्रम में सेना की हर जरूरत को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करना होगा। चूंकि चीन न केवल अहंकार के नशे में चूर है, बल्कि उसे अपने अंतरराष्ट्रीय मान-सम्मान की भी कहीं कोई चिंता नहीं, इसलिए भारत को दुनिया के प्रमुख राष्ट्रों को यह समझाना होगा कि वह केवल निंदा-भत्र्सना से सही राह पर आने वाला नहीं है। आखिर यह एक तथ्य है कि सभी प्रमुख देशों की ओर से उसके उद्दंड रवैये की निंदा की जा रही है, फिर भी उसकी सेहत पर कोई असर पड़ता नही दिख रहा है। चीनी एप्स पर यह 'स्ट्राइक हमारी सीमा में घुसी चीनी सेना को वापस लौटने पर कितना मजबूर करेगी, कहना मुश्किल है, लेकिन इससे चीन थोड़ा चिंतित जरूर हुआ है। उसने चेतावनी दी है कि 'राष्ट्रवादी तरीकों से चीन को झुकाया नहीं जा सकता। उसने अंतरराष्ट्रीय कानूनों की दुहाई भी दी है। समझने की बात यह भी है कि चीनी एप्स पर रोक से चीन को वास्तव में कितना नुकसान होगा, होगा भी या नहीं, खुद भारत पर इसका क्या असर होगा, और क्या यह चीन की सैनिक दबंगई के मुकाबिल हमारे पास 'लोकल व 'स्वदेशी का हथियार है? क्या हम इस हथियार से चीन को उसके महत्वाकांक्षी 'वन बेल्ट-वन रोडइ परियोजना पर आगे बढ़ने से रोक पाएंगे? क्या इस डिजिटल स्ट्राइक का सकारात्मक असर 'डिजिटल राष्ट्रवाद के विस्तार में होगा?

जागी महत्वाकांक्षा!

मोर्चा अलग बनाना ।
हो रहे प्रयास ।।
बांध लेना गांठ ।
हम भी तो हैं खास ।।
जागी महत्वाकांक्षा ।
छोड़नी ना आस ।।
चाहे बात किसी को ।
भले न आए रास ।।
होना है इकट्ठा ।
है समय की मांग ।।
हैं हम भी गंभीर ।
ना समझना स्वांग ।।
रास्ता पर बनाना ।
है कितना आसान ?
ऊहापोह है स्थिति ।
है फैसले में जान ?

–कृष्णेन्द्र राय

राजनीति में हो रही है दलबदुओं की बल्ले बल्ले!

विधानसभा चुनाव 14 फरवरी को उत्तराखंड में होने है ,लेकिन यहां अभी तक भी दलबदल का खेल जारी है।कांग्रेस नेत्री बृजरानी ने टिकट न मिलने पर कांग्रेस को अलविदा कह दिया तो भाजपा के भी कई बड़े नेता कांग्रेसी बन गए। नामांकन की आखिरी तारीख से पहले भाजपा को किशोर उपाध्याय के रुप में एक बड़ा चेहरा मिल गया है। किशोर उपाध्याय के भाजपा ज्वाइन करते ही टिहरी के विधायक धन सिंह नेगी ने कांग्रेस का दामन थाम लिया है। धन सिंह नेगी ने पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत से मिलकर कांग्रेस की सदस्यता ली और कांग्रेस का टिहरी से टिकट भी प्राप्त कर लिया।टिहरी के इन दोनों नेताओं के दलबदल के बाद साफ हो गया है कि टिहरी में किशोर उपाध्याय और धन सिंह नेगी के बीच फिर से मुकाबला होगा। करीब 40 वर्षों तक कांग्रेस के साथ रहे किशोर उपाध्याय अचानक ही भाजपा में शामिल नहीं हुए। किशोर उपाध्याय सन 2017 के विधानसभा चुनाव से ही कांग्रेस पार्टी में खुद को असहज महसूस कर रहे थे, किशोर उपाध्याय ने बतौर कांग्रेस अध्यक्ष कांग्रेस को मजबूत करने का काम किया था। किसी समय हरीश रावत के सबसे करीबी रहे किशोर उपाध्याय सन 2017 के चुनाव के बाद से हरीश रावत से दूर हो गए थे। किशोर उपाध्याय ने वनाधिकार आंदोलन के तहत प्रदेश के जल, जंगल, जमीन के लिए लड़ाई लड़नी शुरू की। इसके लिए उन्होंने पार्टी फोरम से बाहर आकर भी दूसरे दलों के नेताओं से संवाद स्थापित किया। उन्होंने समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव से भी मिलकर उनसे वनाधिकार को लेकर समर्थन मांगा। इसके बाद वे भाजपा के नेताओं के संपर्क में आए। करीब एक माह से चल रहा लुकाछुपी का खेल आखिर खत्म हो गया और किशोर उपाध्याय ने भाजपा की सदस्यता ले ली। किशोर उपाध्याय के भाजपा ज्वाइन करने से कुछ घंटे पहले ही कांग्रेस ने उन्हें पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिए छह साल के लिए पार्टी से निष्कासित कर दिया।1 जून 1958 को ग्राम पाली,

जाखणीधार, टिहरी गढ़वाल में जन्में किशोर उपाध्याय ने स्नातकोत्तर और पीएचडी की पढ़ाई की है। किशोर उत्तराखंड आंदोलन के समय से ही सक्रिय राजनीति में अहम भूमिका निभा चुके हैं, वे उत्तराखंड संघर्ष समिति के पदाधिकारियों में शामिल रहे। किशोर उपाध्याय गांधी परिवार के सबसे निकटतम नेताओं में शुमार रहे हैं। उत्तराखंड बनने के बाद 2002 में पहली बार टिहरी सीट से विधायक चुने गए और एनडी तिवारी सरकार में औद्योगिक राज्य मंत्री बने। इसके बाद 2007 में वे लगातार दूसरी बार टिहरी से विधायक चुने गए। लेकिन 2012 के विधानसभा चुनाव में टिहरी सीट पर निर्दलीय दिनेश धनै से 377 मामूली मतों से चुनाव हार गए। इसके बाद 2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने उन्हें देहरादून जिले की सहसपुर सीट से चुनाव लड़ाया गया, लेकिन वे भाजपा के सहदेव पुंडीर से हार गए। इस हार पर किशोर ने कहा कि उनके खिलाफ षडयंत्र रचा गया। तब से वे कांग्रेस पार्टी में हाशिए पर चले गए। सन 2014 से सन 2017 तक किशोर उपाध्याय कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रहे। प्रदेश अध्यक्ष रहते किशोर हरीश रावत और प्रीतम सिंह के भी काफी करीबी माने जाते थे। लेकिन दिनेश धनै के कैबिनेट मंत्री बनने के बाद से ही वे पार्टी से नाराज होते गए। इसके बाद सहसपुर से चुनाव हारना उनकी नाराजगी का सबसे बड़ा कारण रहा। किशोर का टिहरी और उत्तरकाशी जिले की सीटों पर अच्छा खासा प्रभाव रहा है। ऐसे में किशोर भाजपा के लिए बड़ा ब्राह्मण चेहरा साबित हो सकते हैं। साथ ही किशोर उपाध्याय टिहरी सीट से भाजपा के टिकट पर विधानसभा का चुनाव लड़ रहे हैं।दूसरी ओर भाजपा से निष्कासित डॉ हरक सिंह रावत कहते है कि कोरोना का यमराज अगर कहे कि बीजेपी से बात कर लो..तो कहूंगा मौत दे दो।इन्ही हरक सिंह रावत ने पांच साल पहले कांग्रेस की सरकार गिराकर कमल का दामन थामा था। हरक सिंह रावत के आंसुओं से बीजेपी का दिल तो नहीं पसीजा लेकिन कांग्रेस ने जरूर उन्हें गले लगा लिया है।

उत्तराखंड मंत्रिमंडल से बर्खास्त किए जाने के बाद हरक सिंह रावत कैमरे पर फफक-फफक कर रो पड़े थे, हरक को बीजेपी ने पार्टी से निकाल कर 6 साल के लिए बर्खास्त कर दिया। वे अपने परिवार और अन्य लोगों के लिए पार्टी पर टिकट का दवाब बना रहे थे।दल बदल रोकने को देश में कई बार कानून बने व कई बार कानून बदले गए, लेकिन दल बदलने वाले कभी नहीं रुके। दल बदलने के कारण कई होते हैं जिनमें सबसे ज्यादा दल बदलुओं का कारण परिवार वाद होता है। भाई, भतीजा, बेटा, बहू, पत्नी को टिकट ना मिले तो परिवार के लिए पार्टी, पार्टी के विचार, सबको खतरे में डाल दिया जाता है।उत्तराखंड में बीजेपी के मंत्री हरक सिंह रावत, उत्तर प्रदेश में बीजेपी के मंत्री रहे स्वामी प्रसाद मौर्य, उत्तर प्रदेश में ही बीजेपी संगठन के उपाध्यक्ष दयाशंकर सिंह, पंजाब में मुख्यमंत्री चन्नी के भाई मनोहर सिंह, ये वो चेहरे हैं जो चुनाव आने पर घरवालों के टिकट में ऐसे उलझे कि या तो घर जैसी पार्टियां छोड़ दीं या घर के भीतर कलह मच गई।जिस हरक सिंह रावत के कांग्रेस में रहते हुए छह साल पहले हिल जाने से हरीश रावत की सरकार हिल गई थी वही हरक सिंह रावत अब बीजेपी में मंत्री रहते हुए हिल गए । हरक सिंह को उनकी पार्टी ने छह साल के लिए एक झटके में निष्कासित कर दिया ।

हरक सिंह रावत को लेकर उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा, वह अपने परिवार के सदस्यों के लिए टिकट को लेकर पार्टी पर दबाव डाल रहे थे लेकिन हमारी एक अलग नीति है, एक परिवार के केवल एक सदस्य को चुनाव के लिए पार्टी का टिकट दिया जाएगा। हरक सिंह रावत अब लौटकर उसी कांग्रेस में आ गए हैं जिसके हाथ को छह साल पहले नौ विधायकों के साथ दल बदलकर कमजोर किया था।अब सवाल उठता है कि वो एक बार फिर बीजेपी से कांग्रेस में क्यों गए हैं ?चुनाव नजदीक आने पर दल बदलने की कुप्रथा हमारे देश में लंबे अरसे से चली आ रही है। दल बदल कर सिर्फ नेता, विधायक या सांसद ही नहीं बनते बल्कि दल बदलकर राजनेता प्रधानमंत्री तक बने हैं। देश में 1957 से 1967 तक की अवधि में करीब 542 बार सांसद-विधायकों ने अपने दल बदले थे।सन 1967 में चौथे आम चुनाव के पहले वर्ष में भारत में 430 बार सासंद- विधायक ने दल बदलने का रिकॉर्ड बनाया। सन 1967 के बाद एक और रिकॉर्ड बना, जिसमें दल बदलुओं के कारण 16 महीने के भीतर 16 राज्यों की सरकारें गिर गईं थी। उसी दौर में हरियाणा के विधायक गयालाल ने 15 दिन में ही तीन बार दल-बदल के हरियाणा की राजनीति में एक नया रिकॉर्ड बनाया था। जिसके बाद कहावत बनी आया राम-गया राम की।सन 1998-99 में गोवा दल-बदल और बदलती सरकारों के कारण सुर्खियों में रहा था, जब 17 महीने में गोवा में पांच मुख्यमंत्री बदल गए थे। वैसे दल बदलना हमेशा सबके लिए फायदे का सौदा नहीं होता।

सामाजिक समरसता के आध्यात्मिक उपासक संत रविदास

सामाजिक समरसता के आध्यात्मिक उपासक संत शिरोमणि रविदासजी का जीवन संघर्षों और चुनौतियों की महागाथा है। जहां उन्हें जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत पग-पग पर प्रताड़ना, यातना, अपमान, तिरस्कार, उपेक्षा और हैय दृष्टि का व्यवहार अनुभूत हुआ। शूद्र होने के कारण विभिन्न प्रकार की सामाजिक आर्थिक और शैक्षणिक निर्योग्यताओं से संघर्ष करते हुए संत रविदास ने मानवीय गरिमा को सही अर्थों में समझा और अस्पृश्य समाज को समझाते हुए कहा कि तुम हिंदू जाति के अभिन्न अंग हो तुम्हें शोषित पीड़ित और दलित जीवन जीने की अपेक्षा मानवाधिकारों के लिए संघर्षरत रहना चाहिए। संत रविदास का जन्म भारत में जिस काल में हुआ उस समय समाज का स्वरूप अत्यंत विक्षुब्ध, अशांत और संघर्षमय था। आतताइयों के आक्रमणों के कारण समाज किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति में था। छोटी-छोटी रियासतों में विभक्त भारतीय रियासतें मिथ्या दंभ और अभिमान में एक दूसरे से युद्ध कर रहीं थीं। जर्जर सामाजिक ढांचा रूढ़ियों, प्रथाओं, अंधविश्वासों, मिथ्या आचरणों, आडंबरों और पाखंडो से सराबोर था। छुआछूत और अस्पृश्यता के अवैज्ञानिक और औचित्यहीन अभिशाप का टीका समाज के माथे पर अदृश्य तथा अमिट स्याही से लगाया गया था। जहां आपसी विभेद, वर्ग भेद, जातिभेद, गैर बराबरी, सामाजिक अन्याय और अंतः संघर्ष की पराकाष्ठा समाज की सेहत को प्रदूषित कर रही थी।

हिंदू समाज के सवर्णों ने समाज के अन्त्यज वर्ग को मानव अधिकारों से वंचित किया। उन्हें पशु से भी बदतर स्थिति में रखा। ऐसी विषम स्थिति में प्रबुद्ध संत समाज द्वारा पुनर्जागरण का सजीव आंदोलन प्रारंभ हुआ। जिसमें संत रविदास का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। तथापि उनके समग्र आध्यात्मिक अवदान का अभी सही मूल्यांकन नहीं हो सका है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व बहुत विराट करिश्माई और चमत्कारी घटनाओं से परिपूर्ण था। उन्होंने तत्कालीन समाज की वेदना, पीड़ा और मर्म को समझा और उसके व्यावहारिक समाधान जन भाषा में प्रतिपादित किए। उनकी वाणी में लोक कल्याण का स्वर प्रमुखता से व्यक्त हुआ। वह उन संतों में नहीं थे जो गुफाओं में बैठकर केवल आत्म कल्याण के लिए स्वांतः सुखाय साधना करें। उनका दर्शन पलायनवादी नहीं था। उनकी दृष्टि में वही व्यक्ति साधु है जिसने सतरुपी परम तत्व को अनुभूत कर अपने व्यक्तित्व से ऊपर उठकर उसके साथ तादात्म्य स्थापित कर लिया हो और जिनके कार्यों से लोक कल्याण की पवित्र धारा प्रवाहित होती हो। संत रविदास का चिंतन आत्मोन्नति सहित परमात्मा के मिलन को साध्य मानकर लोकमंगल की कामना करता है। ईश्वरोन्मुख तो कोई भी व्यक्ति हो सकता है किंतु उसके जीवन में कर्मकांड रहित निर्मल प्रेम और भक्ति का ईश्वर की सहज

अनुभूति का दिव्य स्वरूप होना चाहिए।

दीनता और विनम्रता की साक्षात प्रतिमूर्ति संत रविदासजी की आध्यात्मिक चेतना सबका मंगल, सदा मंगल और मंगल ही मंगल का उद्घघोष करती है जो मनुष्य को जन्म से नहीं वरन सत्कर्म और आध्यात्मिक उपलब्धियों से बड़ा मानती है। उनकी उदार मानवीय दृष्टि दैवी संपदा से युक्त स्फटिक की भांति प्रांजल और वास्तविक अर्थ में चिरप्रणम्य है। संत रविदास ने धर्म अथवा साधना की कोई शास्त्रीय व्याख्या प्रस्तुत नहीं की किंतु सामाजिक व्यवस्था को विकृत करने वाले छुआछूत, ऊंच-नीच, भेदभाव, अन्याय, शोषण और अनाचार का प्रबल विरोध करते हुए धर्म के नाम पर की जाने वाली हिंसा, मिथ्याआडंबरों, अंधविश्वासों, मूल्यहीन परंपराओं की कटु आलोचना की। यद्यपि उनकी आलोचना में किसी प्रकार की वक्रता, उलझन, अटपटापन, कर्मकांड और ज्ञान के दिखावे का दंभ नहीं है और ना ही वर्ण तथा जाति भेद का बंधन है। रविदासजी ने समाज की प्रगति और समरसता को अवरुद्ध करने वाली अस्पृश्यता की विकृति जिसका कोई शास्त्रीय आधार नहीं है, विनम्रता पूर्वक विरोध कर समतावादी समाज की स्थापना पर बल दिया जहां किसी प्रकार की छुआछूत, जातीय भेदभाव, गैर बराबरी और सांप्रदायिक विद्वेष की भावना नहीं हो। संत रविदास ने तत्कालीन सामाजिक समस्याओं का व्यावहारिक समाधान उन्मुक्त भाव से व्यक्त करते हुए किसी संप्रदाय का विरोध नहीं किया। वरन उनकी अंतरात्मा को जागृत कर पारस्परिक सद्भाव और बंधुता का संदेश दिया। कृस्न, करीम, राम, हरि, राघव, जब लग एक न पेखा। वेद कतेब कुरान, पुरानन, सहज एक नहिं देखा।। संत रविदास का जन्म वाराणसी में संवत 1456 को एक निर्धन चर्मकार परिवार में हुआ था। पिता रघु जी जूते गांठने का काम करते थे। रविदासजी बचपन से ही आध्यात्मिक और उदार प्रवृत्ति के थे। उनका कहना था कि सच्ची साधना मनोनिग्रह है। इंद्रियों का दास बने रहने पर भौतिक संपदा पतन का कारण बनती है। परोपकार की निर्मल भावनाओं के पक्षधर रविदासजी कहते थे कि सामर्थ्य वाले लोगों को अपनी संपदा में दूसरे अभावग्रस्तों को भी भागीदार बनाना चाहिए अन्यथा संग्रह किया हुआ अनावश्यक धन विपत्ति का रूप धारण कर लेता है। वे प्रतिदिन अपने हाथ से बनाए एक जोड़े जूते जरूरतमंदों को बिना किसी भेदभाव के दान किया करते थे। लेकिन पिता को यह उदारता पसंद नहीं थी। उन्हें घर से पृथक कर दिया किंतु रविदासजी को इस बात का कोई मलाल नहीं रहा और मनोयोग पूर्वक बढ़िया जूते बनाने के काम को ही पूजा मानकर निरंतर करते रहे। संत रविदास की साधना और अन्यन भक्ति भावना की श्रेष्ठता के कारण काशी राज दंपत्ति तथा चित्तौड़ की झाली रानी और भक्त मीराबाई ने स्वप्रेरणा से बिना किसी दबाव के उन्हें अपना गुरु बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया जो तत्कालीन समाज में संत रविदास की एक असाधारण, अपूर्व और अत्यंत अविरल उपलब्धि थी जिसके कारण वह लोक नायक के रूप में समाज में श्रद्धा और आस्था के प्रतीक बन गए थे। भक्तमाल में नाभादास ने रामानंद के शिष्य रविदास की विमल वाणी को संशय और संदेह की ग्रंथि को खोलने में सक्षम माना है। रविदास के समकालीन अनेक संतों ने उनकी प्रशंसा की। संत कबीर ने कहा साधुन में रविदास संत हैं। सिखों के धर्म ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में भी संत रविदास के 40 पद सम्मान के साथ सम्मिलित किए गए। वे कहते थे यदि उंचा बनना चाहते हो तो बड़े कर्म करो। जाति से महानता नहीं मिलती जो लोग जात-पांत के आधार पर ऊंच-नीच का भेदभाव करते हैं। वे ईश्वर के प्यारे नहीं हो सकते क्योंकि ईश्वर ने सभी को बनाया है।

चुनाव पूर्व 'पीएम' व 'सीएम' का चेहरा घोषित करना कितना उचित?

भारतीय संविधान के अनुसार जो भी व्यक्ति चुनवोपरांत बहुमत प्राप्त संसदीय दल के सदस्यों द्वारा अपना नेता चुना जाता है राष्ट्रपति द्वारा वही व्यक्ति देश का प्रधानमंत्री मनोनीत कर दिया जाता है। चाहे वह लोकसभा अथवा राज्यसभा में से किसी भी सदन का सदस्य हो अथवा न हो। यदि प्रधानमंत्री नामित व्यक्ति किसी सदन का सदस्य नहीं है तो उसे छः महीने के भीतर दोनों में से किसी एक सदन का सदस्य बनना लाजिमी है। ठीक इसी प्रकार विधान सभाओं में भी बहुमत प्राप्त दल द्वारा निर्वाचित विधान मंडल दल के नेता को राज्यपाल मुख्यमंत्री मनोनीत करते हैं और उससे ही अपना मंत्रिमंडल गठित करने की सिफारिश करते हैं। यहाँ भी मुख्यमंत्री मनोनीत होने के समय किसी व्यक्ति का विधान सभा अथवा विधान परिषद का सदस्य होना कोई जरूरी तो नहीं परन्तु उसे भी मुख्यमंत्री की शपथ लेने के छः माह के अंदर विधान सभा/परिषद् का सदस्य बनना जरूरी है। इस संवैधानिक व्यवस्था से एक बात तो स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री हो अथवा मुख्यमंत्री दोनों का ही चुनाव निर्वाचित लोकसभा अथवा विधानसभा के बहुमत प्राप्त दल के सदस्यों द्वारा चुनावोपरांत ही किया जाता है। और देश अथवा राज्य को प्रधानमंत्री अथवा मुख्यमंत्री पद पर आसीन होने वाले व्यक्ति का नाम संसदीय अथवा विधान मंडल दल द्वारा अपना नेता चुनने की कार्रवाई के पूरा होने के बाद ही पता चलता है।

परन्तु अब प्रायः यह देखा जाने लगा है कि अधिकांश दल अपने प्रस्तावित प्रधानमंत्री अथवा मुख्यमंत्री के 'चेहरे ' को जनता के सामने चुनाव से पहले ही पेश कर चुनाव मैदान में उतरते हैं। इतना ही नहीं बल्कि यह भी देखा गया है कि यदि लोकसभा अथवा विधान सभा में कोई व्यक्ति चुनाव हार जाता है उसके बावजूद पार्टी पराजित नेता के राजनैतिक कद को देखते हुये अथवा उसकी उपयोगिता को महसूस करते हुये उसे राजयसभा अथवा विधानपरिषद के माध्यम से सदन का सदस्य

बनाकर उसे मंत्रिमंडल में महत्वपूर्ण पदों से नवाजती है। इसका सीधा अर्थ यह है कि जिस नेता को जनता ने नकार दिया है उसे पार्टी जबरन जनता पर थोपने का प्रयास कर रही है। जिसे जनता ने नकारा और पराजित किया उसे मंत्रिमंडल में शामिल करना यह मतदाताओं की राय का अपमान है अथवा नहीं।

इसी प्रकार विभिन्न दलों के कुछ प्रमुख नेता दो दो चुनाव क्षेत्रों से चुनाव लड़ते नजर आते हैं। ऐसा करने का एक ही मकसद होता है कि बिना कोई जोखिम उठाये हुये वे हर हाल में निर्वाचित होना चाहते हैं। अब यदि वे एक जगह से चुनाव जीत गये और दूसरे क्षेत्र से पराजित हो गये फिर तो ठीक है। और यदि दोनों ही जगहों से विजयी हो गये तो दोनों में से कोई एक सीट से वह सांसद अथवा विधायक बना रह सकता है जबकि दूसरी विजयी सीट से उसे त्यागपत्र देना पड़ता है। यानी एक व्यक्ति एक ही समय में दो सीटों से निर्वाचित होकर किसी सदन का सदस्य नहीं रह सकता। तभी उसे एक सीट से त्याग पत्र देना होता है। और चुनाव आयोग को छः महीने के अंदर उस रिक्त की गयी सीट पर उपचुनाव कराना पड़ता है। जाहिर है उस रिक्त सीट पर होने वाले उपचुनाव का खर्च भी जनता को ही अपने टैक्स के पैसों से भरना पड़ता है। आखिर इस 'एक्सरसाइज' में जनता का क्या दोष है जिसका भुगतान उसे करना पड़ता है ?

राजनेताओं के इस तरह के सुविधाजनक प्रयास भले ही संवैधानिक व्यवस्थाओं के नाम पर क्यों न किये जाते हों परन्तु नैतिकता की दृष्टि से यह कतई मुनासिब नहीं लगते। पी एम व सी एम के चेहरे को चुनाव पूर्व घोषित करने की परंपरा तो अब इतनी सामान्य होती जा रही है कि यदि कोई दल चुनाव पूर्व अपने पी एम- सी एम पद के दावेदार का नाम घोषित नहीं करता तो उसके विरोधी दल उसकी कमजोरी बताते हैं। यह प्रचारित करते हैं कि अमुक दल के पास कोई लोकप्रिय चेहरा ही नहीं है तभी वह अपना दावेदार घोषित नहीं कर पा रहा। जबकि संवैधानिक दृष्टिकोण से ऐसा करना जरूरी नहीं है।

मेरे विचार से किसी व्यक्ति के दो जगहों से चुनाव लड़ने की व्यवस्था को तो कतई समाप्त किया जाना चाहिये और यदि कोई दल अपने किसी नेता को इस योग्य समझता है कि किसी भी कीमत पर सदन में उसकी उपस्थित बेहद जरूरी है और सदन व देश उसकी मौजूदगी के बिना नहीं चल सकता तो दो सीटों पर चुनाव जीतने के पश्चात रिक्त की गयी सीट का पूरा चुनावी खर्च उसी दल से लिया जाना चाहिये जिसके नेता ने जीतने के बाद भी वह सीट छोड़ी है। अन्यथा पार्टी को उस नेता के 'विराट व्यक्तित्व ' के साथ साथ जनता की राय पर भी भरोसा रखना चहिये। इसी प्रकार चुनाव पूर्व पी एम व सी एम का चेहरा घोषित करने का भी कोई संवैधानिक औचित्य प्रतीत नहीं होता। पूर्व घोषित पी एम अथवा सी एम के चेहरे पर यदि बहुमत प्राप्त दल के निर्वाचित सदस्य अपनी मोहर लगा भी देते हैं तब भी इसे संवैधानिक रूप से निर्वाचित संसदीय /विधानमंडल दल का नेता चुनने की कार्रवाई कहने के बजाय नेता के निर्वाचन की प्रक्रिया की औपचारिकता को पूरा करना ही कहा जा सकता है।

भगवान विष्णु ने धर्म की पत्नी रुचि के माध्यम से नर और नारायण नाम के दो ऋषियों के रूप में अवतार लिया। वे जन्म से तपोमूर्ति थे, अतः जन्म लेते ही बदरीवन में तपस्या करने के लिये चले गये। उनकी तपस्या से ही संसार में सुख और शांति का विस्तार होता है। बहुत से ऋषि मुनियों ने उनसे उपदेश ग्रहण करके अपने जीवन को धन्य बनाया। आज भी भगवान नर नारायण निरन्तर तपस्या में रत रहते हैं। इन्होंने ही द्वापर में श्रीकृष्ण और अर्जुन के रूप में अवतार लेकर पृथ्वी का भार हरण किया था।

विष्णु के ऋषि अवतार

नर और नारायण

एक बार इनकी उग्र तपस्या को देखकर देवराज इंद्र ने सोचा कि ये तप के द्वारा मेरे इंद्रासन को लेना चाहते हैं, अतः उन्होंने इनकी तपस्या को भंग करने के लिए कामदेव, वसंत तथा अप्सराओं को भेजा। उन्होंने जाकर भगवान नर नारायण को अपनी नाना प्रकार की कलाओं के द्वारा तपस्या से च्युत करने का प्रयास किया, किंतु उनके ऊपर कामदेव तथा उसके सहयोगियों का कोई प्रभाव न पड़ा। कामदेव, वसंत तथा अप्सराएं शाप के भय से थर थर कांपने लगे। उनकी यह दशा देखकर भगवान नर नारायण ने कहा- ,तुम लोग तनिक भी मत डरो। हम प्रेम और प्रसन्नता से तुम लोगों का स्वागत करते हैं।

भगवान नर नारायण की अभय देने वाली वाणी को सुनकर काम अपने सहयोगियों के साथ अत्यन्त लज्जित हुआ। उसने उनकी स्तुति करते हुए कहा- प्रभो! आप निर्विकार परम तत्व हैं। बड़े बड़े आत्मज्ञानी पुरुष आपके चरण कमलों की सेवा के प्रभाव से कामविजयी हो जाते हैं। देवताओं का तो स्वभाव ही है कि जब कोई तपस्या करके ऊपर उठना चाहता है, तब वे उसके तप में विघ्न उपस्थित करते हैं। काम पर विजय प्राप्त करके भी जिन्हें क्रोध आ जाता है, उनकी तपस्या नष्ट हो जाती है। परंतु आप तो देवाधिदेव नारायण हैं। आपके सामने भला ये काम क्रोधादि विकार कैसे फटक सकते हैं? हमारे ऊपर आप अपनी कृपादृष्टि सदैव बनाये रखें। हमारी आपसे यही प्रार्थना है।

कामदेव की स्तुति सुनकर भगवान नर नारायण परम प्रसन्न हुए और उन्होंने अपनी योगमाया के द्वारा एक अद्भुत लीला दिखायी। सभी लोगों ने देखा कि साक्षात लक्ष्मी के समान सुंदर सुंदर नारियां नर नारायण की सेवा कर रही हैं। नर नारायण ने कहा- तुम इन स्त्रियों में से किसी एक को मांगकर स्वर्ग में ले जा सकते हो, वह स्वर्ग के लिए भूषण स्वरूप होगी। उनकी आज्ञा मानकर कामदेव ने अप्सराओं में सर्वश्रेष्ठ अप्सरा उर्वशी को लेकर स्वर्ग के लिए प्रस्थान किया। उसने देवसभा में जाकर भगवान नर नारायण की अतुलित महिमा से सबको परिचित कराया, जिसे सुनकर देवराज इंद्र चकित और भयभीत हो गये। उन्हें भगवान नर नारायण के प्रति अपनी दुर्भावना और दुष्कृति पर विशेष पश्चाताप हुआ।

भगवान नर नारायण के लिये यह कोई बड़ी बात नहीं थी। इससे उनके तप के प्रभाव की अतुलित महिमा का परिचय मिलता है। उन्होंने अपने चरित्र के द्वारा काम पर विजय प्राप्त करके क्रोध के अधीन होने वाले और क्रोध पर विजय प्राप्त करके अभिमान से फूल जाने वाले तपस्वी महात्माओं के कल्याण के लिए अनुपम आदर्श स्थापित किया।

महामृत्युंजय

मंत्र की महिमा

ओम त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

महामृत्यंजय मंत्र काफी असरकारी माना जाता है। इसका यदि शुद्ध उच्चारण किया जाए तो मृत्यु को दूर किया जा सकता है। यह बात इस कथा से स्पष्ट होती है। दर्शाण देश (वर्तमान मध्य प्रदेश के उत्तर पूर्व का एक भाग) के राजा वज्रबाहु की सुमति नाम की एक रानी थी। एक बार जब वह गर्भवती थी, तब उसकी सपत्नियों उसे विष दे दिया। भगवत कृपा से उसका गर्भस्थ भ्रूण विनष्ट नहीं हो पाया किंतु वह व्रणयुक्त हो गया। जिससे जो बालक उत्पन्न हुआ, उसका शरीर व्रण से भरा था। दोनों मां-बेटे के शरीर घावों से भर गये।

राजा ने अनेकों प्रकार के उपचार किये, परंतु कुछ भी लाभ न होते देख निराश हो सुमति से द्वेष रखने वाली अन्यान्य स्त्रियों की सलाह से, रानी सुमति को उसके बच्चे के साथ वन में छुड़वा दिया। वह वहां छोटी सी कुटिया बनाकर रहने लगी। वन में सुमति को दुरूसह कष्ट होने लगे, शरीर की पीड़ा से उसे बार-बार मूर्च्छा आने लगी, उसके बालक को तो पहले ही काल ने कवलित कर लिया।

उसे जब चेतना आयी तो वह बहुत ही कातरभाव से भगवान शंकर से प्रार्थना करने लगी- हे प्रभो! आप सर्वव्यापक हैं, सर्वज्ञ हैं, दीन-बन्धु-दुःखहारी हैं, मैं आपकी शरण हं, अब मुझे एकमात्र आपका ही अवलम्बन है। उसकी इस कातरवाणी को सुनते ही करुणामय आशुतोष का आसन डोल उठा। शीघ्र ही शिवयोगी वहां प्रकट हुए और उन्होंने सुमति को मृत्युंजय मंत्र का जप करने को कहा और अभिमंत्रित भस्म को उसकी तथा उसके बच्चे की देह में लगा दिया। भस्म के स्पर्श मात्र से ही उसकी सारी व्यथा दूर हो गयी और बालक भी प्रसन्नमुख हो जी उठा। सुमति ने शिवयोगी की शरण ली। शिवयोगी ने बालक का नाम भद्रायु रखा।

सुमति और भद्रायु दोनों मृत्युंजय मंत्र का जाप करने लगे और इधर राजा वज्रबाहु को अपनी निर्दोष पत्नी और अबोध बालक को व्यर्थ कष्ट पहुंचाने का दुष्परिणाम भी भुगतना पड़ा। उसके राज्य को शत्रुओं ने अपहृत कर राजा को बंदीगृह में डाल दिया।

एक दिन भद्रायु के मंत्र जप से प्रसन्न हो शिवयोगी पुनः प्रकट हुए। उन्होंने एक खड्ग और एक शंख दिया तथा बारह हजार हाथियों का बल देकर वे अर्न्तध्यान हो गये। भद्रायु ने अपने पिता के शत्रुओं पर आक्रमण कर उन्हें मार डाला और पैतृक राज्य को अधिकृत कर पिता को बंदीगृह से मुक्त किया। उसका यश चारों और फैल गया। चित्रांगद और सीमन्तिनी ने अपनी कन्या कीर्तिमालिनी का विवाह भद्रायु के साथ कर दिया।

भद्रायु ने शिवपूजा करते हुए सहस्त्रों वर्षों तक सुखपूर्वक प्रजा को सुख-शांति पहुंचाते हुए अविचल राज्य किया और अंत में शिवसायुज्य को प्राप्त हुआ। यह मृत्युंजय मंत्र के जप का लोकोत्तर माहात्मय है।

पाखण्डों के सख्त विरोधी थे गुरु नानक देव

गुरू नानक जब मात्र पांच वर्ष के थे, तभी धार्मिक और आध्यात्मिक वाताओं में गहन रूचि लेने लगे थे। अपने साथियों के साथ बैठकर वे परमात्मा का कीर्तन करते और जब अकेले होते तो घंटों कीर्तन में मग्न रहते। वे दिखावे से कोसों दूर रहते हुए यथार्थ में जीते थे।

गुरु नानक जयंती प्रतिवर्ष कार्तिक मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है लेकिन यह कारण अभी तक ज्ञात नहीं है कि उनकी जयंती किसी एक निर्धारित तिथि को न मनाकर कार्तिक मास की पूर्णिमा को ही क्यों मनाई जाती है? गुरु नानक जयंती को ह्यप्रकाश पर्वह्व भी कहा जाता है और इस बार प्रकाश पर्व की विशेषता यह है कि गुरु नानक का यह 550वां प्रकाश पर्व है और गुरु नानक जयंती मनाने के लिए देशभर के गुरुद्वारों में विशेष तैयारियां की गई हैं। सिख धर्म के आदि संस्थापक गुरु नानक देव का जन्म तलवंडी (जो भारत-पाक बंटवारे के समय पाकिस्तान में चला गया) में सन 1469 में हुआ था। गुरू नानक देव सिखों के पहले गुरू हुए हैं, जो न केवल सिखों में बल्कि अन्य

एक पिता एकस के हम बारिकह्न नामक उनका सिद्धांत समाज में ऊंच-नीच और अमीर-गरीब के भेद को मिटाता है। गुरु नानक छोटे-बड़े का भेद मिटाना चाहते थे। उन्होंने निम्न कुल के समझे जाने वाले लोगों को सदैव उच्च स्थान दिलाने के लिए प्रयास किया। गुरु नानक सदैव मानवता के लिए जीए और जीवन पर्यन्त शोषितों व पीड़ितों के लिए संघर्षरत रहे। उनकी वाणी को लोगों ने परमात्मा की वाणी माना और इसीलिए उनकी यही वाणी उनके उपदेश एवं शिक्षाएं बन गई। ये उपदेश किसी व्यक्ति विशेष, समाज, सम्प्रदाय अथवा राष्ट्र के लिए ही नहीं बल्कि चराचर जगत एवं समस्त मानव जाति के लिए उपयोगी हैं।

धर्मों के लोगों में भी उतने ही सम्माननीय रहे हैं।

गुरु नानक जब मात्र पांच वर्ष के थे, तभी धार्मिक और आध्यात्मिक वाताओं में गहन रूचि लेने लगे थे। अपने साथियों के साथ बैठकर वे परमात्मा का कीर्तन करते और जब अकेले होते तो घंटों कीर्तन में मग्न रहते। वे दिखावे से कोसों दूर रहते हुए यथार्थ में जीते थे। जिस कार्य में उन्हें दिखावे अथवा प्रदर्शन का अहसास होता, वे उसकी वास्तविकता जानकर विभिन्न सारगर्भित तर्कों द्वारा उसका खंडन करने की कोशिश करते। नानक जब 9 वर्ष के हुए तो उनके पिता कालूचंद खत्री, जो पटवारी थे और खेती-बाड़ी का कार्य भी करते थे, ने उनका यज्ञोपवीत संस्कार कराने के लिए पुरोहित को बुलाया। जब पुरोहित ने यज्ञोपवीत पहनाने के लिए नानक के गले की ओर हाथ बढ़ाया तो नानक ने पुरोहित का हाथ पकड़ लिया और पूछने लगे कि आप यह क्या कर रहे हैं और इससे क्या लाभ होगा?

पुरोहित ने कहा, ह्यह्यबेटे, यह जनेऊ है। इसे पहनने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसे पहने बिना मनुष्य शूद्र की श्रेणी में रहता है।

तब नानक ने पुरोहित से पूछा, ह्यह्ययह सूत का बना जनेऊ मनुष्य को मोक्ष कैसे दिला सकता है? मनुष्य का अंत होने पर जनेऊ तो उसके साथ परलोक में नहीं जाता।

नानक के इन शब्दों से वहां उपस्थित सभी व्यक्ति बेहद प्रभावित हुए। अंततः पुरोहित को कहना ही पड़ा कि तुम सत्य कह रहे हो, वास्तव में हम अंधविश्वासों में डूबे हुए हैं।

19 वर्ष की आयु में नानक का विवाह गुरदासपुर के मूलचंद खत्री की पुत्री सुलखनी के साथ हुआ किन्तु धार्मिक प्रवृत्ति के नानक को गृहस्थाश्रम रास न आया और वे सांसारिक मायाजाल से दूर रहने का प्रयास करने लगे। यह देखकर इनके पिता ने इन्हें व्यवसाय में लगाना चाहा किन्तु इसमें भी नानक का मन न लगा। एक बार नानक के पिता ने इन्हें कोई काम-धंधा शुरू करने के लिए कुछ धन दिया लेकिन नानक ने सारा धन साधु-संतों और जरूरतमंदों में बांट दिया और एक दिन घर का त्याग कर परमात्मा की खोज में निकल पड़े।

गुरु नानक पाखंडों के घोर विरोधी थे और उनकी यात्राओं का वास्तविक उद्देश्य लोगों को परमात्मा का ज्ञान कराना किन्तु बाह्य आडम्बरों एवं पाखंडों से दूर रखना ही था।

एक बार ऐसी ही यात्रा करते हुए जब गुरु नानक हरिद्वार पहुंचे तो उन्होंने देखा कि बहुत से लोग गंगा में स्नान करते समय अपनी अंजुली में पानी भर-भरकर पूर्व दिशा की ओर उलट रहे हैं। उन्होंने विचार किया कि ये लोग किसी अंधविश्वास के कारण ही यह सब कर रहे हैं। तब उन्होंने लोगों को वास्तविकता का बोध कराने के उद्देश्य से अपनी अंजुली में पानी भर-भरकर पश्चिम दिशा की ओर उलटना शुरू कर दिया।

कुछ लोगों ने उन्हें काफी देर तक इसी प्रकार पश्चिम दिशा की ओर पानी उलटते देखा तो उन्होंने गुरु नानक से पूछ ही लिया, ह्यह्यभाई तुम कौन हो और किस जाति के हो तथा पश्चिम दिशा में जल देने का तुम्हारा क्या अभिप्राय है?

नानक बोले, ह्यह्यपहले आप लोग बताएं कि आप पूर्व दिशा में पानी क्यों दे रहे हैं?

हम अपने पूर्वजों को जल अर्पित कर रहे हैं ताकि उनकी प्यासी आत्मा को तृप्ति मिल सकेह्नह्न लोगों ने कहा।

तुम्हारे पूर्वज हैं कहां?

वे परलोक में हैं लेकिन तुम पश्चिम दिशा में किसे पानी दे रहे हो?

ह्यह्ययहां से थोड़ी दूर मेरे खेत हैं। मैं यहां से अपने उन खेतों में ही पानी दे रहा हूं। गुरू नानक बोले।

खेतों में पानी ...! लोग आश्चर्य में पड़ गए और पूछने लगे कि पानी खेतों में कहां जा रहा है? यह तो वापस गंगा में ही जा रहा है और यहां पानी देने से आपके खेतों में पानी जा भी कैसे सकता है?

ह्यह्यअगर यह पानी नजदीक में ही मेरे खेतों तक नहीं पहुंच सकता तो इस तरह आप द्वारा दिया जा रहा जल इतनी दूर आपके पूर्वजों तक कैसे पहुंच सकता है? गुरु नानक ने उनसे पूछा।

लोगों को अपनी गलती का अहसास हो गया और वे गुरु नानक के चरणों में गिरकर उनसे प्रार्थना करने लगे कि उन्हें सही मार्ग दिखलाइये, जिससे उन्हें परमात्मा की प्राप्ति हो सके।

एक पिता एकस के हम बारिकह्न नामक उनका सिद्धांत समाज में ऊंच-नीच और अमीर-गरीब के भेद को मिटाता है। गुरु नानक छोटे-बड़े का भेद मिटाना चाहते थे। उन्होंने निम्न कुल के समझे जाने वाले लोगों को सदैव उच्च स्थान दिलाने के लिए प्रयास किया। गुरु नानक सदैव मानवता के लिए जीए और जीवन पर्यन्त शोषितों व पीड़ितों के लिए संघर्षरत रहे। उनकी वाणी को लोगों ने परमात्मा की वाणी माना और इसीलिए उनकी यही वाणी उनके उपदेश एवं शिक्षाएं बन गई। ये उपदेश किसी व्यक्ति विशेष, समाज, सम्प्रदाय अथवा राष्ट्र के लिए ही नहीं बल्कि चराचर जगत एवं समस्त मानव जाति के लिए उपयोगी हैं।

कोशिकाओं एंटीबॉडी में कोविड-19 के प्रसार को बाधित करेगी नई

लॉस एंजिल्स (भाषा)। अमेरिकी शोधकर्ताओं ने एक नए एंटीबॉडी का निर्माण किया है, जो एक कोशिका से दूसरी कोशिका में फैलने की सार्स-कोव-2 वायरस की क्षमता को बाधित कर सकता है।

एफयूजी-1 नाम का एंटीबॉडी फ्यूरिन एंजाइम को निशाना बनाता है, जिसका इस्तेमाल वायरस मानव कोशिकाओं में कोविड-19 संक्रमण की कुशल शृंखला बनाने के लिए करता है। 'जर्नल माइक्रोबायोलॉजी स्पेक्ट्रम' के हालिया अंक में प्रकाशित इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने उम्मीद जताई कि नए एंटीबॉडी को मौजूदा एंटीबॉडी के कॉकटेल में शामिल किया जा सकता है, जिससे सार्स-कोव-2 वायरस के नए और ज्यादा संक्रामक स्वरूपों से बेहतर तरीके से लड़ने में मदद मिलेगी।

अध्ययन दल में शामिल यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, डेविस के वरिष्ठ शोधकर्ता जोगिंदर तुषीर-सिंह ने कहा, हमने एक ऐसा एंटीबॉडी विकसित किया है, जो सार्स-कोव-2 वायरस की प्रसार शृंखला में बाधा डालता है। उन्होंने कहा, कोविड रोधी टीके संक्रमण के गंभीर रूप अख्तियार करने और मरीजों के अस्पतालों में भर्ती होने की आशंका घटाकर बेहतरीन जीवनरक्षक साबित हो रहे हैं। पर अब हमें पता चल रहा है कि ये वायरस के प्रसार पर लगाम लगाने में उतने प्रभावी नहीं हो सकते हैं। शोधकर्ताओं ने दावा किया कि एफयूजी-1 एंटीबॉडी फ्यूरिन एंजाइम की क्रिया में उल्लेखनीय बाधा उत्पन्न करता है। सार्स-कोव-2 वायरस को ज्यादा संक्रामक बनने के लिए इस

- एफयूजी-1 नाम का यह नया एंटीबॉडी फ्यूरिन एंजाइम को निशाना बनाती है
- इसी फ्यूरिन एंजाइम का इस्तेमाल वायरस मानव कोशिकाओं में कोविड-19 संक्रमण की कुशल शृंखला बनाने के लिए करता है

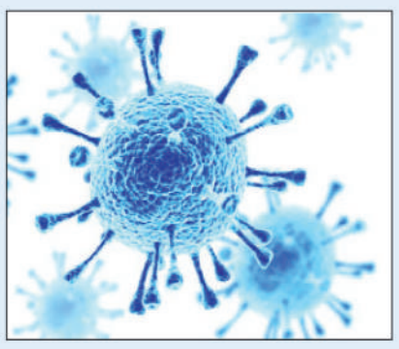

एंजाइम की जरूरत पड़ती है। शोधकर्ताओं ने बताया कि फ्यूरिन पूरे मानव शरीर में पाया जाता है और कोशिकाओं की विभिन्न क्रियाओं में शामिल है। यह प्रोटीन में मौजूद पॉलीबेसिक पेप्टाइड बॉन्ड की काट-छांट करके उसे छोटे-छोटे घटकों में तोड़ने में सक्षम है। शोधकर्ताओं के अनुसार, फ्यूरिन मानव कोशिकाओं में प्रवेश करने वाले वायरस को नष्ट या सक्रिय भी कर सकता है। उन्होंने बताया कि मानव कोशिकाओं में फैलने के लिए फ्यूरिन का इस्तेमाल करने वाले रोगाणुओं में एचआईवी, इंफ्लुएंजा, डेंगू और सार्स-कोव-2 वायरस शामिल हैं।

शोधकर्ताओं ने कहा कि सार्स-कोव-2 वायरस जब किसी मानव कोशिका को संक्रमित करता है, तब फ्यूरिन सक्रिय अवस्था में होता है और उसके स्पाइक प्रोटीन को तोड़ चुका होता है। स्पाइक प्रोटीन का इस्तेमाल वायरस कोशिकाओं में प्रवेश करने और संक्रमण फैलाने के लिए करता है। उन्होंने बताया कि हालांकि, संक्रमित कोशिका में जब वायरस की प्रतिकृति बनने की प्रक्रिया चलती है, तब स्पाइक प्रोटीन निष्क्रिय अवस्था में होता है। शोधकर्ताओं की मानें तो स्पाइक प्रोटीन को दो हिस्सों-एस1 और एस2 में तोड़ने के लिए वायरस को संक्रमित कोशिका के फ्यूरिन की जरूरत पड़ती है, जिससे वायरल कणों में मौजूद स्पाइक सक्रिय हो जाते हैं और वायरस का तेजी से प्रसार करने लगते हैं। शोधकर्ताओं ने कहा कि फ्यूरिन की क्रिया पर लगाम लगाकर सार्स-कोव-2 वायरस की प्रसार शृंखला बाधित की जा सकती है। हालांकि, यह एक जटिल प्रक्रिया है, क्योंकि फ्यूरिन पूरे शरीर में मौजूद है और कोशिकाओं में कई अहम क्रियाओं के संचालन के लिए जरूरी है।

बुल्गारिया के अमेरिकी दूतावास में मिला स्वास्तिक चिह्न

■ **वाशिंगटन (वार्ता/स्पुतनिक)।**

बुलगारिया में अमेरिकी दूतावास के अंदर एक विंडो शेड पर स्वास्तिक चिह्न बना हुआ मिला है। एक्सियोस की रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई। यह चिह्न बैंगनी स्याही से दूतावास के सुरक्षित हिस्से में बनाया गया है और 28 जनवरी को अंतरराष्ट्रीय प्रलय स्मरण दिवस के एक दिन बाद यह चिह्न उकेरा गया मिला है। एक्सियोस ने अज्ञात सूत्रों का हवाला देते हुए कहा कि जिसने भी स्वास्तिक बनाया, उसकी अमेरिकी दूतावास तक पहुंच थी।

दूसरी ओर अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता नेड प्राइस ने एक्सियोस के हवाले से कहा कि मंत्रालय कार्यस्थल में घृणा या पूर्वाग्रह के किसी भी उदाहरण की निंदा करता है और यह एक ऐसा ही मामला नजर आता है। गौरतलब है कि पिछले साल जुलाई में भी वाशिंगटन में अमेरिकी विदेश विभाग के मुख्यालय में एक स्वास्तिक चिह्न को एक लिफ्ट में उकेरा गया पाया गया था। मीडिया ने बताया कि स्वास्तिक की नक्काशी विशेष दूत के कार्यालय में मॉनिटर एंड कॉम्बैट एंटी-सेमिटिज्म (एसईएएस) के पास पाई गई थी।

'रॉकेट्री : द नंबी इफेक्ट' एक जुलाई को होगी रिलीज

मुंबई (भाषा)। अभिनेता आर माधवन ने सोमवार को ऐलान किया कि 'रॉकेट्री : द नंबी इफेक्ट' एक जुलाई को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज की जाएगी। बतौर निर्देशक माधवन की यह पहली फिल्म है। यह फिल्म भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के पूर्व वैज्ञानिक और एयरोस्पेस इंजीनियर नंबी नारायणन की जिंदगी पर आधारित है।

नारायणन पर जासूसी का आरोप लगाया गया था। अभिनेता ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर टीजर पोस्टर के संग फिल्म की नई तारीख साझा की। पहले यह फिल्म एक अप्रैल को रिलीज की जानी थी। इस फिल्म में माधवन के अलावा सिमरन बग्गा, रजीत कपूर, रवि राघवेंद्र, मिशा घोषाल, गुलशन ग्रोवर, कार्तिक कुमार, दिनेश प्रभाकर हैं। साथ ही अभिनेता शाहरूख खान और सूर्य कुछ देर के लिए अतिथि भूमिका निभाते दिखेंगे। यह फिल्म हिंदी, अंग्रेज़ी, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ में रिलीज की जाएगी।

पेड़ों की तुलना में महासागर कार्बन भंडारण में बेहतर

■ **मैड्रिड (द कन्वरसेशन)।**

- समुद्र में अधिकांश जीव छोटे होते हैं, वे अदृश्य रहते हैं, लेकिन जैसे ही वे मरते और डूबते हैं, वे कार्बन को गहरे समुद्र में ले जाते हैं
- जब सतह पर चट्टानें बदलती हैं और सीप समुद्र तल पर जमा हो जाते हैं, तो पृथ्वी कार्बन डाइऑक्साइड का भंडारण करती है

हम पेड़ों और मिट्टी को कार्बन का भंडार मानते हैं, लेकिन दुनिया के महासागरों में कार्बन का बड़ा भंडार है और वह कार्बन को स्थायी रूप से संग्रहीत करने में अधिक प्रभावी हैं। नए शोध में न्यूजीलैंड के पास प्लवक (समुद्र की सतह पर तैरने वाले सूक्ष्म जीवों) के शैवाल द्वारा स्थायी कार्बन हटाने की दीर्घकालिक दर की जांच की जा रही है। जांच से मालूम हुआ कि सीपियों ने कार्बन डाइऑक्साइड के क्षेत्रीय उत्सर्जन के रूप में कार्बन की उतनी ही मात्रा को नीचे खींच लिया और यह प्रक्रिया जलवायु वार्मिंग के प्राचीन काल के दौरान और भी अधिक थी। लाखों साल पहले जमा जीवाश्म ईंधन को जलाकर और कार्बन डाइऑक्साइड के रूप में वातावरण में डाल कर मनुष्य कार्बन को जमीन से बाहर निकाल रहा है। नए जीवाश्म ईंधन के निर्माण की वर्तमान दर बहुत कम है। इसके बजाय कार्बन भंडारण का मुख्य भूवैज्ञानिक (दीर्घकालिक) तंत्र आज समुद्री शैवाल का निर्माण है, जो समुद्र तल पर तलछट के रूप में संरक्षित हो जाते हैं।

जीलैंडिया महाद्वीप ज्यादातर दक्षिण-पश्चिम प्रशांत महासागर के नीचे डूबा हुआ है, लेकिन इसमें न्यूजीलैंड और न्यू कैलेडोनिया के द्वीप शामिल हैं। महाद्वीप पर जीवाश्म ईंधन के जलने से कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन प्रति वर्ष लगभग साढ़े चार करोड़ टन तक बढ़ जाता है, जो कि वैश्विक उत्सर्जन का 0.12 प्रतिशत है। जीलैंडिया के समुद्र तल में ड्रिल किया गया ताकि यह पता लगाया जा सके कि महाद्वीप कैसे बना और इसके तलछट में दर्ज प्राचीन पर्यावरणीय परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया।

मृत पौधों, शैवाल और जानवरों के रूप में कार्बनिक कार्बन समुद्र और भूमि पर मौजूद ज्यादातर अन्य जीवों, मुख्यतः बैक्टीरिया द्वारा खाया जाता है। समुद्र में अधिकांश जीव इतने छोटे (आकार में 1 मिमी से कम) होते हैं, वे अदृश्य रहते हैं, लेकिन जैसे ही वे मरते और डूबते हैं, वे कार्बन को गहरे समुद्र में ले जाते हैं। उनके खोल समुद्र तल पर जमा हो जाते हैं और चाक और चूना पत्थर के विशाल भंडार बनाते हैं। सीप, जो कैल्शियम कार्बोनेट से बने होते हैं, कार्बन की महत्वपूर्ण मात्रा को जज्ब करते हैं। पिछले दस लाख वर्षों में औसतन सीप की संचय दर लगभग 20 टन प्रति वर्ग किलोमीटर प्रति वर्ष थी।

पृथ्वी स्वाभाविक रूप से खनिज झरनों और ज्वालामुखियों से कार्बन डाइऑक्साइड को बाहर निकालती है, क्योंकि चट्टानें गहराई में गर्म होती हैं। जब सतह पर चट्टानें बदलती हैं और जब सीप समुद्र तल पर जमा हो जाते हैं, तो पृथ्वी कार्बन डाइऑक्साइड का भंडारण करती है। ये दोनों तंत्र जलवायु परिवर्तन से प्रभावित हो सकते हैं। जीवमंडल और महासागरों में भी महत्वपूर्ण कार्बन भंडार हैं जो निश्चित रूप से बदलते हैं। यह एक जटिल प्रणाली है और कई वैज्ञानिक यह समझने की कोशिश कर रहे हैं।

लंबे समय तक संक्रमण से वेगस तंत्रिका की कार्यक्षमता में कमी

■ **लंदन (आईएएनएस)।**

लंबे समय तक कोरोना संक्रमण से शरीर की वेगस तंत्रिका की कार्यक्षमता में कमी आ सकती है। एक शोध में यह जानकारी दी गई है।

यह तंत्रिका शरीर के काफी प्रकार्यात्मक कार्यों को पूरा करती है और दिल की धड़कन तथा बोलचाल की क्षमता को निर्धारित करती है। यह तंत्रिका मस्तिष्क से लेकर धड़ तक जाती है और दिल, फेंफड़ों तथा आंतों तक इसका विस्तार होता है। यह भोजन निगलने में हमारी गले की मांसपेशियों को नियंत्रित भी करती है। इसके अलावा यह दिल की धड़कन, बोलचाल, मुंह से भोजन को आंतों तक ले जाने की आंतो की मांसपेशियों की क्षमता, पसीना आने तथा अन्य गतिविधियों को नियंत्रित करती है।

- एक शोध में दी गई जानकारी

इस शोध को स्पेन में यूनिवर्सिटी अस्पताल जर्मांस ट्राएस आई पुंजोल के शोधकर्ताओं ने अंजाम दिया है। उनका कहना है कि लंबे समय तक कोविड रहने से वेगस तंत्रिका की कार्यक्षमता में कमी आ जाती है और इसकी वजह से कोरोना संक्रमित लोगों में बोलने की क्षमता में कमी, निगलने में कठिनाई, सुस्ती और चक्कर आने, दिल की असामान्य और तेज धड़कन, निम्न रक्त चाप तथा दस्त लगने जैसे कारणों की स्पष्ट व्याख्या की जा सकती है। शोधकर्ता डा. गेम्मा लाडोस ने बताया कि हमारे निष्कर्ष लंबे समय तक कोविड संक्रमित लोगों में पाई जाने वाली अन्य व्याधियों को समझने में मदद कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि दीर्घकालीन अवधि तक कोविड संक्रमण संभावित रूप से कई अंगों को निष्क्रिय करने वाला सिंड्रोम है जो अनुमानित 10-15 प्रतिशत लोगों को प्रभावित करता है। इन लक्षणों के हफ्तों से लेकर एक साल तक बने रहने की संभावना है।

टीम ने इस तंत्रिका से जुड़े लक्षणों के साथ 348 मरीजों को अवलोकन कर इमेजिंग और कार्यात्मक परीक्षणों किए। इस दौरान वेगस तंत्रिका का एक प्रायोगिक, व्यापक रूपात्मक और कार्यात्मक मूल्यांकन किया गया। लगभग 66 प्रतिशत मरीजों ने इस तंत्रिका की अक्षमता से जुड़े कम से कम एक लक्षण के 14 महीने तक बने रहने की शिकायत की। उन्होंने कहा कि 'वेगस नर्व डिसफंक्शन के लक्षणों तंत्रिका का मोटा होना, निगलने में परेशानी और हुआ सांस लेने में अनियमितता जैसे लक्षण शामिल थे।' इस शोध के संबंध में अप्रैल में लिस्बन में होने वाले यूरोपियन कांग्रेस ऑफ क्लिनिकल माइक्रोबायोलॉजी एंड इंफेक्शियस डिजीज (ईसीसीएमआईडी 2022) में प्रायोगिक अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा।

'नूरानी चेहरा' की शूटिंग शुरू

मुंबई (आईएएनएस)। नवाजुद्दीन सिद्दीकी और नवोदित अभिनेत्री नुपुर सेनन की प्रेम कहानी 'नूरानी चेहरा' सोमवार को वैलेंटाइन डे के मौके पर फ्लोर पर चली गई है। फिल्म के निर्माताओं ने एक टीजर पोस्टर भी जारी किया है। फिल्म के बारे में बात करते हुए नवाजुद्दीन ने कहा कि लुक्स धारणा का विषय है। यह एक ऐसी फिल्म है जो समाज की इस सबसे बड़ी गलतफहमियों में से एक को आईना दिखती है। उनकी सह-अभिनेत्री नूपुर सेनन ने रोमांस उपन्यासकार केट एंजेल के हवाले से कहा कि बाहरी सुंदरता आकर्षित करती है, लेकिन आंतरिक सुंदरता मोह लेती है। नवानियत सिंह द्वारा निर्देशित 'नूरानी चेहरा', पल्प फिक्शन एंटरटेनमेंट के सहयोग से पैनोरमा स्टूडियो, वाइल्ड रिवर पिक्च र्स द्वारा प्रस्तुत की गई है। पैनोरमा स्टूडियोज के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक कुमार मंगत पाठक ने फिल्म के पीछे के विचार के बारे में बात करते हुए कहा कि विचार एक ऐसी फिल्म बनाने का था जो दर्शकों को हंसने के साथ-साथ सोचने पर मजबूर करे। ऐसे समय में जब मुख्यधारा की कहानी कहने में त्वचा का रंग, शरीर की सकारात्मकता और गंजापन जैसे विषय उभरे हैं, यह एक फिल्म के लिए एक विषय से निपटने और एक योग्य संदेश साझा करने का समय था! 'नूरानी चेहरा' कुमार मंगत पाठक, आरुषि मल्होत्रा, नंदिनी शर्मा, नीता शाह और भरतकुमार शाह द्वारा निर्मित है।

बॉलीवुड में डेब्यू करेंगी नूपुर सैनन

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेत्री कृति सैनन की बहन नूपुर सैनन जल्द ही बॉलीवुड में डेब्यू करने जा रही हैं। नूपुर सैनन, अक्षय कुमार के साथ म्यूजिक वीडियो में नजर आ चुकी है। बताया जा रहा है कि नूपुर एक पंजाबी फिल्म के हिंदी रीमेक से बॉलीवुड में अपनी शुरुआत करेंगी। इस फिल्म में नूपुर, नवाजुद्दीन सिद्दीकी के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी। बताया जा रहा है कि यह फिल्म 'काला शाह काला' की रीमेक है और इसे अस्थायी रूप से 'नूरानी चेहरा' नाम दिया गया है। फिल्म की तैयारी शुरू हो गई है और फिल्म का निर्माण पैनोरमा स्टूडियो, वाइल्ड रिवर पिश्चर्स और पल्प फिक्शन एंटरटेनमेंट द्वारा किया जा रहा है। सोशल मीडिया पर नूपुर सैनन और नवाजुद्दीन सिद्दीकी की एक झलक इस बात का साफ संकेत है कि ये दोनों फिल्म के लिए साथ आ रहे हैं। नवाजुद्दीन ने नूपुर संग एक तसवीर शेयर की है जिसमें दोनों मुस्कुराते दिख रहे हैं।

चार मार्च को रिलीज होगी 'रुद्रः द एज ऑफ डार्कनेस'

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड के सिंघम स्टार अजय देवगन की क्राइम ड्रामा वेब सीरीज 'रुद्र : द एज ऑफ डार्कनेस' 04 मार्च को ओटीटी प्लेटफार्म पर रिलीज होगी। अजय देवगन 'रुद्रः द एज ऑफ डार्कनेस' के जरिये अपना डिजिटल डेब्यू करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। यह सीरीज फेमस ब्रिटिश सीरीज 'लूथर' की रीमेक है। राजेश मापुस्कर द्वारा निर्मित, इस साइकोलॉजिकल क्राइम ड्रामा सीरीज में अजय दमदार पुलिस अधिकारी के रूप में नजर आयेंगे। बीबीसी स्टूडियोज इंडिया के सहयोग से अप्लॉज एंटरटेनमेंट द्वारा निर्मित इस क्राइम ड्रामा शो में राशी खन्ना, ईशा देओल, अतुल कुलकर्णी, अश्विनी कालसेकर, तरुण गहलोत, आशीष विद्यार्थी और सत्यदीप मिश्रा भी प्रमुख भूमिकाओं में नजर आएंगे। यह सीरीज डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर 04 मार्च को रिलीज होगी।06 एपिसोड्स की सीरीज में अजय के किरदार का नाम रूद्रवीर सिंह है। रूद्र अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी उलझा हुआ है।

कंगना ने 'लॉकअप' का दूसरा पोस्टर किया जारी

मुंबई (आईएएनएस)। बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर 'लॉक अप' का दूसरा पोस्टर शेयर किया है। वह रियलिटी शो की मेजबानी करेंगी, जिसमें 16 हस्तियां शामिल होंगी, जिन्हें जेल के अंदर बंद कर दिया जाएगा। उन्होंने पोस्टर को कैप्शन दिया, यहां सब समान रूप से खतरे में हैं (यहां सभी समान हैं ... समान रूप से खतरे में हैं)। क्योंकि यह मेरा लॉक अप है! ये 27 फरवरी से एमएक्स प्लेयर और ऑल्ट बालाजी पर स्ट्रीम करेगा। मुफ्त में लाइव देखें! इसका ट्रेलर 16 फरवरी को जारी किया जाएगा। एक पोस्टर में वह एक चमकदार हथकड़ी और एक बड़ा काला डंडा पकड़े हुए हैं और एक नुकीला, चमकदार गाउन पहने हुए हैं। कंगना के पीछे उनके साथ कैदियों का एक झुंड देखा जा सकता है, जो दर्शाता है कि निडर रियलिटी शो की अभिनेत्री और मेजबान 16 सेलिब्रिटी प्रतियोगियों को जेल के अंदर कैसे ले जा रही है। 'लॉक अप' 16 लोकप्रिय हस्तियों को सबसे बुनियादी सुविधाओं के लिए प्रतिस्पर्धा करते हुए दिखाएगा, क्योंकि वे विजेता के खिताब के लिए लड़ेंगे।'लॉक अप' 27 फरवरी से ऑल्ट बालाजी और एमएक्स प्लेयर पर प्रसारित होगा।

'एफ3' 27 मई को होगी रिलीज

हैदराबाद (आईएएनएस)। वेंकटेश दग्गुबाती और वरुण तेज की आने वाली मस्ती से भरपूर फिल्म 'एफ3' 27 मई को रिलीज होगी। निर्माताओं ने रिलीज की तारीख की घोषणा की है, साथ ही वेंकटेश और वरुण तेज का एक पोस्टर साझा किया है। निर्माताओं ने ट्वीट किया कि प्रिय बच्चों, कृपया अपनी परीक्षा समाप्त करें और बड़ों, कृपया गर्मियों की मस्ती के लिए कमर कस लें। हमने आपके गर्मियों में जश्न मनाने की तारीख तय कर दी है। अब तारीख में कोई बदलाव नहीं होगा। 'एफ3' अनिल रविपुडी की ब्लॉकबस्टर हिट 'एफ2' की एक फ्रेंचाइजी है, फिल्म में क्रमशः वेंकटेश और वरुण तेज के साथ तमन्ना भाटिया और मेहरीन पीरजादा मुख्य भूमिका में हैं, जबकि सोनल चौहान फिल्म में एक और महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं। राजेंद्र प्रसाद, सुनील और अन्य अन्य भी मुख्य भूमिकाओं में दिखाई देंगे।

निर्माता बनना चाहती है आलिया

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड की जानी-मानी अभिनेत्री आलिया भट्ट फिल्म निर्माता बनना चाहती है। आलिया भट्ट इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म 'गंगूबाई काठियावाड़ी' के प्रमोशन्स में व्यस्त हैं। आलिया भट्ट ने बताया है कि वह वह नए टैलेंट को सपोर्ट करना चाहती है। उन्होंने कहा कि हमेशा फिल्म में एक्टिंग नहीं हो सकती। आलिया ने कहा, 'यदि मैं एक निर्माता बनूंगी, तो मुझे प्रॉफिट का एक हिस्सा मिलेगा, जो मेरे लिए काफी बड़ी बात होगी। मेरे लिए ये केवल पैसा नहीं है। ये उस बारे में है, जब मैं करीब 10 सालों में एक निश्चित मुकाम पर पहुंच जाउंगी। जहां मुझे लगता है कि मैं नए टैलेंट को सपोर्ट करने के लिए एक अच्छी पोजीशन पर होउंगी।' आलिया ने कहा, 'मुझे एहसास हुआ कि मैं उन लोगों में से एक क्यों नहीं हो सकती हूं, जो एक क्रिएटिव पोजीशन प्रोसेस का हिस्सा है। क्रिएटिव रूप से एक प्रोजेक्ट को एक साथ रखना, डायरेक्टर या राइटर का हाथ पकड़ना होता है। हमेशा फिल्म में एक्टिंग नहीं हो सकती है, यह कुछ ऐसा है जो मैं करना चाहती हूं। यदि आप मुझसे अगले 10 साल की प्लानिंग के बारे में पूछते हैं, तो उसमें मेरा प्रोडक्शन हाउस बन रहा है।'

कृति शेट्टी की 'द वारियर' का लुक जारी

चेन्नई (आईएएनएस)। एन लिंगुसामी के निर्देशन में दो भाषा में बनी एक्शन एंटरटेनर 'द वारियर' की टीम ने वेलेंटाइन डे पर फिल्म में अभिनेत्री कृति शेट्टी का पहला लुक जारी करने का फैसला किया है। फर्स्ट लुक पोस्टर में कृति शेट्टी दोपहिया वाहन की सवारी कर रही हैं। अभिनेत्री ने फिल्म में 'सीटी' महालक्ष्मी नामक एक किरदार निभाया है। श्रीनिवास सिल्वर स्क्रीन के बैनर तले श्रीनिवास चित्तूरी द्वारा निर्मित फिल्म पवन कुमार द्वारा प्रस्तुत की जा रही है।

दिलचस्प बात यह है कि प्रोडक्शन हाउस की पिछली फिल्म 'सीटीमार' 2021 में रिलीज हुई थी, जो जबरदस्त सफल हुई थी। 'द वारियर' ने प्रशंसकों के बीच अत्यधिक रुचि पैदा कर दी है। इसमें अभिनेता आधी पिनिसेटी एक प्रतिपक्षी की भूमिका निभाएंगे। अभिनेत्री अक्षरा गौड़ा भी फिल्म में एक महत्वपूर्ण और दिलचस्प किरदार निभा रही हैं, जिसका संगीत देवी श्री प्रसाद ने दिया है।

कैलाश खेर 'भीमला नायक' टीम में शामिल

हैदराबाद (आईएएनएस)। बहुप्रतीक्षित तेलुगु फिल्म 'भीमला नायक' के लिए गायक कैलाश खेर टॉलीवुड के संगीत निर्देशक थमन के साथ टीम में जुड़ गए हैं। तेलुगु में कई गाने गा चुके गायक पवन कल्याण और राणा दग्गुबाती अभिनीत फिल्म के एक गाने के लिए अपनी आवाज देने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। संगीत निर्देशक एस. थमन ने ट्विटर पर इसकी घोषणा की। हैशटैग भीमलानायक के लिए हमारा नया क्रेजी एडिशन जल्द ही आपका एडिक्शन भी होगा कैलाश खेर। थमन एल्बमों में व्यस्त हैं। वह अब 'भीमला नायक' के एक गीत पर काम करना शुरू कर रहे हैं। गाने को तेलुगु के लोकप्रिय गीतकार रामजोगय्या शास्त्री ने लिखा है, जबकि कैलाश इसे गाएंगे। 'भीमला नायक' हिट मलयालम फिल्म 'अय्यप्पनम कोशियुम' का रूपांतरण है।

2017 से अधिक मतदान नहीं, चुनाव आयोग से अंतिम आंकड़े जारी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 में दूसरे चरण के मतदान का आधिकारिक प्रतिशत राज्य निर्वाचन आयोग ने मंगलवार को जारी किया है। सोमवार को नौ जिलों के 55 विधानसभा क्षेत्र में मतदान हुआ था। सुबह सात बजे से शाम छह बजे तक कुल मतदान 64.42 प्रतिशत हुआ है। राज्य निर्वाचन आयोग ने इस चरण के मतदान के अंतिम आंकड़े मंगलवार को जारी किए हैं। दूसरे चरण में कुल 64.42 प्रतिशत मतदान हुआ है।

2017 में इस नौ जिलों में कुल मतदान का प्रतिशत 65.53 था। सहारनपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, संभल, रामपुर, अमरोहा, बदायूं, बरेली तथा शाहजहांपुर के 55 विधानसभा क्षेत्रों में सोमवार को मतदान हुआ था। इस दौरान कई जगह पर झड़प तथा ईवीएम में खराबी के बाद भी मतदाता जोश के साथ उमड़े थे। सोमवार को सहारनपुर में 71.13, बिजनौर में 65.91, मुरादाबाद में 67.26, संभल में 62.87, रामपुर में 64.26, अमरोहा में 71.98, बदायूं में 59.24, बरेली में 61.67 तथा शाहजहांपुर में 59.31 प्रतिशत मतदान हुआ था। इन नौ जिलों में रामपुर तथा मुरादाबाद में ही 2017 के विधानसभा चुनाव से अधिक मत पड़े हैं। 2017 में सहारनपुर में 73.09, बिजनौर में 66.51, मुरादाबाद में 66.76, संभल में 65.48, रामपुर में 63.92, अमरोहा में 73.34, बदायूं में 59.67, बरेली में 62.94 तथा शाहजहांपुर में 61.69 प्रतिशत मतदान हुआ था। सोमवार को सर्वाधिक 75.78 प्रतिशत मतदान सहारनपुर के बेहट में हुआ। बेहट ने 2017 के चुनाव का भी रिकार्ड तोड़ा। बिजनौर के नजीबाबाद तथा नगीना में भी बीते चुनाव से मतदान प्रतिशत बढ़ा है। मुरादाबाद के ठाकुरद्वारा तथा मुरादाबाद नगर में बीते चुनाव से अधिक मतदाता उमड़े। रामपुर के स्वार, बिलासपुर तथा रामपुर नगर में 2017 से अधिक वोट पड़े। अमरोहा में अमरोहा नगर, बदायूं की बिसौली तथा दातागंज और बरेली के बहेड़ी, बरेली शहर व आंवाला में बीते विधानसभा चुनाव से अधिक मतदान हुआ है। चुनाव आयोग ने निष्पक्ष एवं भयमुक्त मतदान के लिए सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए थे। कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच दूसरे चरण का मतदान सुबह सात बजे से शुरू हुआ। पहले दो घंटे में यानी सुबह नौ बजे तक करीब साढ़े नौ प्रतिशत मतदान हुआ। इसके बाद मतदान में तेजी आई और दोपहर एक बजे तक 39 प्रतिशत मत पड़ चुके थे। शाम पांच बजे मतदान 60 प्रतिशत से ऊपर हो गया था। मतदान शाम छह बजे तक चला। कई जिलों के पोलिंग बूथों पर लंबी कतारें होने के कारण छह बजे के बाद तक चलता रहा। बरेली की बहेड़ी विधान सभा में 72.60 व मुरादाबाद की ठाकुरद्वारा में 73.84 व कांठ में 70.40 प्रतिशत वोट पड़े। रामपुर की स्वार में भी 71.53 प्रतिशत मतदान हुआ। सहारनपुर की रामपुर मनिहारान में 70.10 व सहारनपुर में 70.50 प्रतिशत वोट पड़े। देवबंद में भी 70.59 व गंगोह में 70 प्रतिशत से अधिक मतदान हुआ।

अमरोहा व धनौरा दोनों ही सीटों पर 70 प्रतिशत से अधिक वोट पड़े। मुख्य निर्वाचन अधिकारी अजय कुमार शुक्ला ने बताया कि दूसरे चरण में नौ जिलों के 12,544 मतदान केंद्रों के 23,404 पोलिंग बूथों पर वोट डाले गए। इनमें से 252 आदर्श मतदान केंद्र थे जबकि 127 पिंक बूथ बनाए गए थे। अपर मुख्य निर्वाचन अधिकारी बीडीआर तिवारी ने बताया कि इस बार एनकोर साफ्टवेयर में मतदान का डाटा जिलों से सीधे अपलोड किया जा रहा है। यह काम पूरी रात चलेगा। ऐसे में मतदान का अंतिम आंकड़ा मंगलवार को जारी किया जाएगा।

1.70 प्रतिशत बदली गई ईवीएम : दूसरे चरण में 1.70 प्रतिशत ईवीएम में खराबी आई। सुबह माकड्रिल के समय 1.29 प्रतिशत बैलट यूनिट, 0.85 प्रतिशत कंट्रोल यूनिट व 1.30 प्रतिशत वीवीपैट खराबी आने के कारण बदली गईं। इसके बाद मतदान के दौरान भी 0.41 प्रतिशत बैलट व इतनी ही कंट्रोल यूनिट बदली गईं। इसी प्रकार वीवीपैट भी 1.55 प्रतिशत बदली गईं।

विकास की राह में जो आएगा उसके लिए बुलडोजर तैयार : योगी आदित्यनाथ

आगरा। फिरोजाबाद में जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि फिरोजाबाद देश दुनिया में सुहागनगरी के नाम से जाना जाता है। आलू उत्पादन में किसानों ने रिकॉर्ड बनाया हैं। आगरा मथुरा की तरह टूंडला में भी शुद्ध पेय जल की व्यस्था बना रहे हैं। बाजार से पानी नहीं खरीदना पड़ेगा। हमारी सरकार किसानों के लिए समर्पित है। ये सिर्फ नारा नहीं हैं। किसानों के नेता मंच पर हैं। 54 हजार से ज्यादा फिरोजाबाद के किसानों का लोन माफ हुआ हैं। सम्मान निधि आ रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कहा कि अयोध्या में हमला करने वाले, काशी में हमला करने वाले आतंकियों के मुकदमे सपा सरकार ने आते ही वापस लिए। हमने आते ही किसानों का लोन माफ किया। बूचड़ खाने बंद किए और एंटीरोमियो स्कॉड बनाया। गोवंश परेशान कर रहा है। हम प्रयास करेंगे। अन्नदाता परेशान नहीं होगा और गौ माता भी नहीं कटेगी टूंडला और फिरोजाबाद में आलू चिप्स फैक्ट्री खोली जाएगी। चाचा भतीजा भर्ती में वसूली के लिए निकल पड़ते थे। अब नौकरी में कोई भ्रष्टाचार नहीं होता।

सपा की सरकार में पांच साल में यूपी में 18 हजार आवास स्वीकृत हुए। हमने 43 लाख से ज्यादा आवास दिए। फिरोजाबाद में 54 हजार आवास दिए। सपा ने पेंशन रोक दी थी, हम 12 हजार रुपए सालाना पेंशन दे रहे हैं। फिरोजाबाद में पेंशन दी जा रही है। कोरोना से अमेरिका में लाखों लोग मारे गए। हमें जीवन बनाया और रोजगार दिलाए। वैक्सीन फ्री लगवाई और दुनिया में सबसे अच्छी वैक्सीन बनी। यूपी में सौ फीसदी लोगों ने वैक्सीन लगवाई है। डबल इंजन सरकार के राशन फ्री दिया। सपा वाले बिजली इसलिए नहीं देते थे की रात में इन्हें डकैती करनी होती थी। तब डकैती होती थी अब कावड़ यात्रा निकलती हैं। बम नहीं फूटते हर हर बम बम होता है। एक हाथ से हम विकास करेंगे और जो बाधक होगा उनके लिए बुलडोजर तैयार है। दो चरणों के मतदान से चाचा भतीजे परेशान हैं। सोच रहे हैं कि जिन्हें चुनाव के लिए निकाल कर लाए हैं उन्हें कहां छुपाएंगे। कासगंज में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जमकर विपक्ष पर हमला बोला। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि पौराणिक तीर्थ की धरती को नमन करता हूं। भगवान विष्णु ने वराह के रूप में अवतार लिया। स्वतंत्रता संग्राम में भी सोरों का बड़ा योगदान रहा है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने आस्था का सम्मान किया।

पीलीभीत में नवोदय विद्यालय के छात्र की मौत हॉस्टल के कमरे में फंदे से लटकता मिला शव

बरेली। पीलीभीत के बीसलपुर में स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में कक्षा 11 के छात्र का शव हास्टल में उसके कमरे में फंदे से लटका मिला है। मृतक छात्र लखीमपुर खीरी जिले के कस्बा मोहम्मदी का रहने वाला था। सूचना पर पहुंची पुलिस जांच पड़ताल शुरू कर दी है। शिवपुरी नवदिया ग्राम में जवाहर नवोदय विद्यालय के कक्षा 11 का छात्र आशीष कुमार वर्मा तीन दिन पूर्व विद्यालय में अध्ययन के लिए आया था। वह अपने अन्य साथियों के साथ छात्र सदन शिवालिक वरिष्ठ हास्टल के रूम में रह रहा था। मंगलवार को सुबह वह अपने कक्षा में पढ़ने के लिए गया था। उसके पश्चात पूर्वाह्न लगभग 11 बजे ब्रेक होने पर वह अपने हास्टल में कमरे में पहुंच गया। इसके कुछ देर बाद ही उस रूम में रहने वाले अन्य छात्र जब वहां पहुंचे तो आशीष का शव कपड़े सुखाने वाली रस्सी के फंदे से पंखे पर लटकता देखा। घबराए

छात्रों ने इसकी सूचना प्रधानाचार्य को दी। उन्होंने फोन पर पुलिस को बताया। सूचना पाते ही सीओ प्रशांत सिंह तथा प्रभारी निरीक्षक कोतवाली नरेश कुमार त्यागी मौके पर पहुंच गए। जिला मुख्यालय से फॉरेंसिक टीम बुलाई गई है। इसके पश्चात ही शव को फंदे से नीचे उतारा जाएगा।

संत रविदास जयंती पर प्रियंका गांधी का आज वाराणसी दौरा

लखनऊ। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में बेहद एक्टिव हो चुकीं पार्टी की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में किसी भी मौके को गंवाना नहीं चाह रही हैं। कांग्रेस के तीन दशक से सत्ता के सूखे को हरियाली देने के आस में प्रियंका गांधी को उत्तर प्रदेश कांग्रेस का प्रभारी बनाया गया है। प्रियंका गांधी वाड्रा उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 में जमकर मेहनत भी कर रही हैं। उनका संत रविदास जयंती पर बुधवार को वाराणसी का दौरा है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा का कल उत्तर प्रदेश का दौरा है। मंगलवार को मणिपुर विधानसभा चुनाव के प्रचार में व्यस्त रहने के बाद प्रियंका गांधी वाड्रा बुधवार को फिर उत्तर प्रदेश के दौरे पर रहेंगी। वह उत्तर प्रदेश में अपने दौरे की शुरूआत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी से करेंगी। वह बुधवार को दिन में 11.30 बजे वाराणसी पहुंचेंगी। वाराणसी में उनका रविदास जयंती पर होने वाली प्रार्थना सभा तथा लंगर में शामिल होने का कार्यक्रम है। पंजाब तथा उत्तर प्रदेश के

विधानसभा चुनाव को देखते हुए प्रियंका गांधी वाड्रा का यह कार्यक्रम तय किया गया है। वाराणसी के बाद प्रियंका गांधी वाड्रा बुधवार को कानपुर जाएंगी। कानपुर में वह पार्टी के प्रत्याशी अजय कपूर के पक्ष में प्रचार करेंगी। जनसंपर्क के साथ उनका छोटी सभाएं करने का भी कार्यक्रम भी है। इसके बाद उनका सीसामऊ और आर्यनगर में प्रचार का कार्यक्रम है। कल देर शाम को गोविंद नगर में वह महिला शक्ति गर्जना कार्यक्रम में शामिल होने के बाद नई दिल्ली वापसी करेंगी। उत्तर प्रदेश के साथ ही पंजाब, गोवा, उत्तराखंड तथा मणिपुर विधानसभा चुनाव में प्रचार के लिए भी प्रियंका गांधी संत रविदास जयंती पर प्रियंका गांधी वाड्रा की डिमांड काफी बढ़ी है। इसके साथ ही कांग्रेस में भी पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा की भूमिका और महत्वपूर्ण होती जा रही है। पार्टी के संकटमोचक के साथ वह बड़ी स्टार प्रचारक हैं। उत्तर प्रदेश और अन्य चुनावी राज्यों में हर उम्मीदवार उन्हें प्रचार के लिए बुलाना चाहता है। प्रियंका गांधी भी उनकी उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश करते हुए सभी प्रदेशों के विधानसभा चुनाव में प्रचार कर रही हैं।

हस्ताक्षर की मासिक काव्य गोष्ठी संपन्न

प्रखर डेस्क मुंबई। साहित्यिक ,सामाजिक, सांस्कृतिक संस्था " हस्ताक्षर " की मासिक काव्य गोष्ठी संस्था कार्यालय दहिसर (पूर्व) में संपन्न हुई । कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्युत ध्वनि के संपादक व पत्रकारिता मिशन संस्था के अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार राकेशमणि तिवारी ने किया तथा संचालन कवि राम सिंह द्वारा किया गया । काव्यपाठ संस्था अध्यक्ष जवाहरलाल निर्झर , पत्रकार कवि - रवि यादव , शिवनारायण कनौजिया, डॉ. जे पी बघेल, सूर्यकान्त शुक्ला , कल्पेश यादव , कवि राम सिंह व राकेशमणि तिवारी द्वारा किया गया । अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री तिवारी ने कहा कि, काव्य ही वह विधा है जो बगैर किसी हथियार के भी समाज मे पसरी कुरीतियों पर जोरदार प्रहार कर दर्पण दिखाने का कार्य करती है । आगे अपने वक्तव्य में उन्होंने संस्थापक अध्यक्ष स्वर्गीय निराला जी को शब्दों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये कहा कि , वे बड़े भाग्यशाली रहे जिनको उनके स्वर्गीय होने पर भी हस्ताक्षर के माध्यम से अमर बनाये रखने का

कार्य परिजनो द्वारा किया जा रहा है । अंत में संस्था सचिव शील कुमार निराला ने सबके प्रति आभार व्यक्त किया । आपको अवगत करा दें कि , हस्ताक्षर द्वारा प्रत्येक माह के दूसरे रविवार को काव्य गोष्ठी आयोजित कर नवोदित कवियों को मंच प्रदान करने का कार्य किया जा रहा है।

पूर्व सांसद धनंजय सिंह बुधवार को दाखिल करेगें अपना नामाकंन

शहर के एक होटल में पत्रकारों से खुद रूबरू हुए पूर्व बाहुबली सांसद धनंजय सिंह

प्रखर जौनपुर। जिले के पूर्व बाहुबली सांसद धनंजय सिंह बुधवार को मल्हनी विधानसभा सीट से जद यू के बैनर से पर्चा दाखिल करेगें। यह जानकारी खुद धनंजय सिंह ने नगर के एक होटल में मंगलवार को पत्रकार वार्ता के दरम्यान दी है। इस दरम्यान सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव द्वारा लगातार ट्वीट करने का करारा जवाब देते हुए कहा कि वे लगातार झूठा ट्वीट कर रहे है मेरे ऊपर न तो इनाम न ही फरार हूं। मेरा इनाम कोर्ट ने समाप्त कर दिया है। एसटीएफ जांच कर रही है। मेरे खिलाफ जो धारा लगायी गयी है वह जमानती है। पूर्व सांसद ने कहा कि मै बुधवार को दिन बजे नामाकंन करने जा रहा हूं। जिस तरह से मल्हनी की जनता का आशीर्वाद मिल रहा है उससे मै इस बार भारी बहुमत से जीत दर्ज करने जा रहा हूं। धनंजय सिंह ने कहा कि मैं 2002 में राजनीति में कदम रखा था। रारी की जनता ने मुझे आशीर्वाद देकर विधायक चुना

गया। यहां की जनता ने पुनः जनमत देकर 2007 में जीत का सेहरा मेरे सिर पर बांधा, 2009 लोकसभा चुनाव में मुझे मल्हनी समेत जौनपुर की जनता सांसद बनाया है। उसके बाद मेरे पिता राजदेव सिंह को विधायक बनाया। उप चुनाव 2020 मैं जीतने जा रहा था लेकिन तत्कालीन प्रशासन ने मुझे हराने का काम किया था। लेकिन इस बार मल्हनी की जनता का पूरा आशीर्वाद मेरे साथ है। जिले की मल्हनी विधानसभा में धनंजय सिंह का खासा प्रभाव है। इस मौके पर एमएलसी ब्रजेश सिंह प्रिंशू , पूर्व जिला पंचायत सदस्य कैलाश सोनी समेत भारी संख्या में समर्थक मौजूद रहे।

सियासी संग्राम में हुई दिग्गज नेताओं की एंट्री

मैनपुरी। दूसरे चरण के चुनाव के बाद अब मैनपुरी के भी सियासी संग्राम में दिग्गज नेताओं की एंट्री हो गई है। सोमवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनसभा से इसकी शुरूआत की। वहीं मंगलवार को गृहमंत्री अमित शाह मैनपुरी और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य बरनाहल और किशनी क्षेत्र में जनसभा करेंगे,14 फरवरी को दूसरे चरण के मतदान के बाद अब इन नेताओं को रुख तीसरे चरण की ओर हो गया है। इसी के चलते मैनपुरी की चारों सीटों के सियासी संग्राम में भी दिग्गज नेताओं की एंट्री हो गई है। सोमवार को भाजपा के स्टार प्रचारक और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किशनी के पतारा में जनसभा को संबोधित किया। वहीं अब मंगलवार को केंद्र सरकार के गृह मंत्री अमित शाह मैनपुरी आ रहे हैं। वे सुबह 11 बजे क्रिश्चियन मैदान में जनसभा करेंगे। वहीं, दूसरी ओर मंगलवार को ही प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य भी आ रहे हैं। भाजपा के मीडिया प्रभारी सौरभ दुबे ने बताया कि वे करहल विधानसभा क्षेत्र के नवाटेढ़ा में अपराह्न तीन बजे एक जनसभा को संबोधित करेंगे।

जौनपुर की सदर विधानसभा सीट से कांग्रेस पार्टी ने बदला अपना प्रत्याशी, नदीम जावेद को उतारा मैदान में

जिलाअध्यक्ष फैसल हसन तबरेज का टिकट काटा, सिंबल ले चुके थे फैसल

प्रखर जौनपुर (संवाददाता-मोहम्मद अरशद) । जौनपुर की सदर विधानसभा सीट से कांग्रेस ने अपना उम्मीदवार बदल दिया है। जिलाध्यक्ष फैसल हसन तबरेज की जगह पार्टी में पूर्व विधायक नदीम जावेद को अपना प्रत्याशी बनाया है। नदीम जावेद 2012 में सदर विधानसभा सीट से विधायक चुने गए थे। सिंबल ले चुके थे फैसल, नामांकन करने वाले कांग्रेस के जिला अध्यक्ष को पार्टी ने सदर विधानसभा से उम्मीदवार बनाया था। चुनाव को लेकर फैसल तैयारियों में जुट चुके थे । लेकिन ऐन वक्त पर पार्टी ने फैसल का टिकट काट दिया। तबरेज पार्टी का सिंबल तक ले चुके थे और वो 16 तारीख को नामांकन करने वाले थे। नदीम जावेद कांग्रेस महाराष्ट्र सरकार के पूर्व मंत्री स्वर्गीय प्रोफेसर जावेद खान के पुत्र हैं, और खेतासराय थाना क्षेत्र के पाराकमाल गांव के मूल निवासी हैं। दिल्ली में राष्ट्रीय छात्र संगठन से उन्होंने कांग्रेस की राजनीति शुरूआत की थी।

पहले भी चुनाव लड़ चुके हैं नदीम जावेद

जौनपुर। नदीम जावेद 2012 में सदर विधानसभा से चुनाव लड़े थे। लगभग 1200 वोट के अंतर से उन्होंने चुनाव में जीत दर्ज की थी। कांग्रेस और सपा गठबंधन से 2017 में भी नदीम सदर विधानसभा से प्रत्याशी रह चुके हैं। 2017 के विधानसभा चुनाव में उन्हें 78000 वोट मिले थे। 2017 के विधानसभा चुनाव नदीम जावेद को हार का सामना करना पड़ा था। बीजेपी के गिरीश चंद्र यादव 12 हजार वोट के अंतर से चुनाव जीत गए थे।

राज्यसभा सांसद की कार पर पथराव, ड्राइवर घायल

मैनपुरी। कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत नगला भंत गांव के पास सोमवार शाम कुछ लोगों ने राज्यसभा सदस्य गीता शाक्य की कार पर पथराव कर दिया। पथराव में राज्यसभा सदस्य को तो बाल-बाल बच गईं, लेकिन उनके ड्राइवर को चोट आई। जानकारी मिलते ही भाजपा नेता मौके पर पहुंचे, तब तक पथराव करने वाले भाग चुके थे। औरैया निवासी राज्यसभा सदस्य गीता शाक्य सोमवार को भाजपा के सदर सीट से प्रत्याशी जयवीर सिंह के समर्थन मैनपुरी आई थीं। वह ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंपर्क करने के बाद सोमवार शाम को वापस लौट रही थीं, तभी कोतवाली क्षेत्र में औंछा रोड पर स्थित गांव नगला भंत के पास कुछ लोगों ने सड़क पर अवरोध डालकर उनकी कार को रोक लिया। जब तक कोई कुछ समय पाता वहां मौजूद लोगों ने कार पर मिट्टी फेंकने के साथ ही पथराव कर दिया। वारदात के वक्त सांसद के साथ मौजूद भाजपा नेता वीरेंद्र सिंह शाक्य ने बताया कि तत्काल उन्होंने इसकी सूचना पार्टी नेताओं और पुलिस को दी।

सुभासपा से मुख्तार अंसारी के बेटे अब्बास अंसारी ने किया पर्चा दाखिल

19 अन्य प्रत्याशियो ने भी किया पर्चा दाखिला, नामांकन के साथ-साथ कुल 35 फॉर्म की हुई बिक्री

मऊ। विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 के दृष्टिगत सोमवार को जनपद मऊ में विधानसभा वार नामांकन पत्रों का विक्रय किया गया, विधानसभा 354 घोसी में 06, विधानसभा 355 मोहम्मदाबाद गोहना (अनुसूचित जाति) में 17, विधानसभा 356 मऊ में 08 नामांकन प्रत्याशियो ने नामांकन किया। जिसका विधानसभावार विवरण निम्नवत है- विधानसभा 353 मधुबन में सुर्य कुमार निर्दल, अमरेश चन्द्र पाण्डेय प्रियंका यादव कांग्रेस, शरदचंन्द्र बहुजन मुक्ति पार्टी, विजय राजभर भारतीय जनता पार्टी, वशिम इकबाल बहुजन समाज पार्टी, किशुन देव धर्म सिंह गौतम बहुजन समाज पार्टी, रामधारी बहुजन मुक्ति पार्टी, विधानसभा 356 मऊ में भीम राजभर बहुजन समाज पार्टी, जितेन्द्र निर्दल,

साथ ही नामांकन कार्य भी सम्पन्न हुआ। विक्रय नामांकन फार्मो का विवरण विधानसभावार निम्नवत है- विधानसभा 353 मधुबन में 04, फार्मो का विक्रय किया गया। इस प्रकार नामांकन के दुसरे दिन सभी विधानसभाओं को मिलाकर कुल 35 फार्म बिके। आज जनपद में कुल 20 कांग्रेस पार्टी, उमेश पाण्डेय सामजवादी पार्टी, रामविलाश चैहान भारतीय जनता पार्टी, विधानसभा 354 घोसी में हरिशंकर यादव निर्दल, चैहान निर्दल, विधानसभा 355 मोहम्मदाबाद गोहना में राजेन्द्र कुमार समाजवादी पार्टी, प्रेम प्रकाश सहाय अम्बेडकराइट पार्टी आफ इण्डिया, माधवेन्द्र सिंह कांग्रेस पार्टी, राजपत चैहान निर्दल, अब्बास अंसारी सुभासपा, मुनौवर ने पीस पार्टी से नामांकन किया।

रिटायर्ड प्रधानाध्यापक का देर रात्रि किया गया अंतिम संस्कार

मुहम्मदाबाद गोहना, मऊ। स्थानीय विधानसभा की महिला भाजपा प्रत्याशी पूनम सरोज के चचिया ससुर रिटायर्ड प्रधानाध्यापक रामाधार सरोज का रविवार रात्रि लगभग 9 बजे पोस्टमार्टम के बाद उनको घर लाया गया। शव आते ही एक बार पुनः स्वजनों की चीख-पुकार से हर किसी की आंखें नम हो गई। उनका देर रात्रि गाजीपुर जनपद में अंतिम संस्कार कर दिया गया। सुरहुरपुर गांव के प्रसिद्ध हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉक्टर उमेश सरोज के चाचा रविवार की दोपहर को अपने घर के बाहर टहल रहे थे कि इसी दौरान डंपर की चपेट में आ गए। जिससे कि बुरी तरह से जख्मी हो गए। उन्हें स्वजन गंभीरावस्था में आनन-फानन आजमगढ़ एक प्राइवेट चिकित्सालय लेकर गए जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। स्वजन शव को लेकर कोतवाली पहुंचे। घटना की सूचना पर कोतवाली में काफी लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई। आरोपी वाहन चालक के विरुद्ध मृतक के बड़े पुत्र धीरेंद्र सरोज ने मुकदमा पंजीकृत कराया। पंचनामा के बाद पीएम के लिए भेज दिया गया। सोमावर के दिन भी घर पर सांत्वना देने के लिए समर्थकों शुभचिंतकों कार्यकताओं का लगातार आवागमन जारी रहा। परिवार के लोग उन के मृदुल स्वभाव को भूल नहीं पा रहे हैं।

टी-20 सीरीज से पहले भारतीय टीम को लगा झटका

वॉशिंगटन सुंदर हैमस्ट्रिंग की चोट को कारण बाहर

कोलकाता (एजेंसी)। भारत और वेस्टइंडीज के बीच तीन मैच की टी20 सीरीज का पहला मुकाबला कोलकाता के ईडन गार्डन मैदान पर 16 फरवरी को खेला जाना है। इस सीरीज के शुरू होने पहले टीम इंडिया को बड़ा झटका लगा है। ऑफ स्पिनर वॉशिंगटन सुंदर चोटिन होने की वजह से पूरी सीरीज से बाहर हो गए हैं। बीसीसीआई ने सोमवार को इसकी जानकारी दी। वॉशिंगटन सुंदर के रिप्लेसमेंट के रूप में कुलदीप यादव को चुना गया है जो वनडे टीम का हिस्सा थे।

तमिलनाडु क्रिकेट एसोसिएशन (टीएनसीए) के एक अधिकारी ने बताया कि यह ग्रेड 1 हैमस्ट्रिंग की चोट है और उन्हें मंगलवार (15 फरवरी) को एनसीए में रिपोर्ट करना होगा। जाहिर तौर पर उन्हें एनसीए में तीन हफ्ते बिताने होंगे। वॉशिंगटन सुंदर टी20 सीरीज से बाहर होने वाले तीसरे भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। उनसे पहले उप कप्तान केएल राहुल और अक्षर पटेल भी सीरीज से बाहर हो चुके हैं। उनके रिप्लेसमेंट के रूप में ऋतुराज गायकवाड़ और दीपक हुड्डा को टीम में शामिल किया गया है। बीसीसीआई ने एक प्रेस रिलीज जारी करते हुए बताया था कि राहुल वेस्ट इंडीज के खिलाफ दूसरे वनडे मैच में फील्डिंग के दौरान मांसपेशियों में खिंचाव आने के कारण, जबकि अक्षर कोरोना वायरस से उबरने के बाद अपने रिहैबिलिएटेशन के अंतिम चरण में होने के कारण टी-20 सीरीज नहीं खेल पाएंगे। वे अब अपनी चोट के आगे की निगरानी के लिए बेंगलुरू में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी जाएंगे। गौरतलब है कि 22 वर्षीय ऑलराउंडर ने चोट से उबरने के बाद हाल ही में लंबे समय बाद वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे सीरीज में

वापसी की थी। उन्होंने यहां बल्ले और गेंद दोनों से शानदार प्रदर्शन भी किया था। सुंदर को शनिवार को आईपीएल के मेगा ऑक्शन में सनराइजर्स हैदराबाद की टीम ने 8.75 करोड़ रुपए की भारी भरकम राशि के साथ अपने खरीदा है। वह पिछली बार रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर का हिस्सा थे।

टी20 सीरीज से पहले भारतीय खिलाड़ियों ने किया अभ्यास

टी20 सीरीज के लिए टीम इंडिया कोलकाता पहुंच चुकी है और खिलाड़ियों ने अभ्यास करना भी शुरू कर दिया है। बीसीसीआई ने सोमवार को टीम इंडिया के पहले प्रैक्टिस सेशन की कुछ तस्वीरें अपने अधिकारिक ट्विटर हैंडल पर पोस्ट की है। एक तस्वीर में जहां कप्तान रोहित शर्मा बड़ा शॉट लगाते हुए दिखाई दे रहे हैं वहीं एक अन्य तस्वीर में कोच राहुल द्रविड़ खिलाड़ियों से बात कर रहे हैं। कोहली सबसे पहले अभ्यास के लिए आए और उन्होंने भारत के सहयोगी स्टाफ के साथ थ्रो-डाउन पर अभ्यास किया। बाद में उन्होंने नेट्स पर 45 मिनट से भी अधिक समय तक बल्लेबाजी की।

मोहम्मद शमी ने की रोहित शर्मा की तारीफ

भारत के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने रोहित शर्मा की तारीफ करते हुए कहा कि वह एक अच्छे और बहुत सपोर्टिव कैप्टन हैं। रोहित की अगुआई वाली टीम ने वेस्टइंडीज के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज 3-0 से जीती। मोहम्मद शमी ने कहा, इसमें कोई संदेह नहीं है कि रोहित एक अच्छे कप्तान हैं। उन्होंने कई आईपीएल सीजन जीते हैं और एक बेहतरीन लीडर हैं। वह वास्तव में मेरे लिए सहायक रहे हैं, क्योंकि हम दोनों लंबे समय से खेल रहे हैं।

पंत ऊपरी क्रम में बल्लेबाजी करने के लिए सक्षम: राठौर

ऋषभ पंत कितने धाकड़ बल्ले बाज हैं, यह किसी को बताने की जरूरत नहीं है। उनका जब दिन होता है, तो वह दुनिया के किसी भी बॉलिंग अटैक की धज्जियां उड़ा सकते हैं। वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे सीरीज के दौरान पंत ने एक मैच में कप्तान रोहित शर्मा के साथ पारी का आगाज किया था, अब क्या फ्यूचर में वह टीम इंडिया के लिए इस रोल में नजर आएंगे? इसको लेकर सवाल खड़े होना लाजमी है, इसका जवाब बैटिंग कोच विम राठौर ने दिया है। जब विक्रम राठौर से सवाल किया गया कि क्या टीम मैनेजमेंट फ्यूचर में पंत से पारी का आगाज करा सकता है? इस पर उन्होंने जवाब में कहा, यह बहुत आगे की बात है। मुझे नहीं पता कि 2023 के बाद मैं टीम के साथ रहूंगा या नहीं। जहां तक ऋषभ पंत की बात है तो वह ऊपर बल्लेबाजी कर सकता है। यह टीम की जरूरत पर निर्भर करेगा। लेकिन हम उन्हें लोअर मिडिल ऑर्डर में उतार सकते हैं, क्योंकि वहां हमारे पास खब्बू बल्लेबाज नहीं हैं। दक्षिण अफ्रीका दौरे पर नाकामी के बाद मिडिल ऑर्डर के खराब प्रदर्शन के लिए राठौर की आलोचना हुई थी। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि टी20 और वनडे में मिडिल ऑर्डर का प्रदर्शन कभी चिंता का विषय नहीं था। अहमदाबाद में विकेट पेचीदा थी, लेकिन शुरुआती विकेट गंवाने के बाद श्रेयस अय्यर, सूर्यकुमार यादव और ऋषभ पंत ने मिडिल ऑर्डर में अच्छी बल्लेबाजी की।

मुझे नहीं लगता कि कोहली खराब फॉर्म से गुजर रहे हैं: राठौर

लंबे समय से विराट कोहली के खराब फॉर्म को लेकर भारत के बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौड़ चिंतित नहीं है और उन्होंने सोमवार को कहा कि वेस्टइंडीज के खिलाफ टी20 श्रृंखला में वह फॉर्म में जरूर लौटेंगे। पिछले महीने तीनों प्रारूपों में कप्तानी से विदा लेने वाले कोहली तीन मैचों की वनडे श्रृंखला में 8.6 की औसत से 26 रन ही बना सके। राठौड़ ने कहा कि कोहली नेट्स पर अच्छा खेल रहे हैं और उन्हें नहीं लगता कि वह फॉर्म में नहीं हैं। उन्होंने कहा, मुझे नहीं लगता कि वह खराब फॉर्म में है। वेस्टइंडीज के खिलाफ श्रृंखला में वह अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सका लेकिन इसे लेकर कोई चिंता नहीं है। कोहली ने पिछले दो साल में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में शतक नहीं जड़ा है। आखिरी बार नवंबर 2019 में उन्होंने बांग्लादेश के खिलाफ दिन रात के टेस्ट में शतक बनाया था। राठौड़ ने कहा, वह नेट्स पर अच्छी बल्लेबाजी कर रहा है। मुझे यकीन है कि टी20 श्रृंखला में वह बड़ी पारी खेलेगा। यह श्रृंखला अक्टूबर में आस्ट्रेलिया में होने वाले टी20 विश्व कप की तैयारी के लिये अहम है और राठौड़ ने यकीन जताया कि उनके बल्लेबाज आस्ट्रेलिया में दमदार प्रदर्शन करेंगे। उन्होंने कहा, बल्लेबाजी में कोई समस्या नहीं है। सभी बल्लेबाज उन हालात में अच्छा खेलने में सक्षम है। हम आस्ट्रेलिया में होने वाले विश्व कप पर फोकस करके तैयारी कर रहे हैं। कुछ खिलाड़ी चोटिल है और जब तक सभी फिट नहीं हो जाते, उनकी भूमिकाओं के बारे में कुछ कहना कठिन होगा।

न्यूजीलैंड-भारतीय महिलाओं के बीच वनडे मुकाबला आज

मंधाना और मेघना दूसरे मैच में भी नहीं लेंगी हिस्सा

क्वींसटाउन। पहले मैच में शर्मनाक हार के बाद उजागर हुई कमजोरियों को दूर करके भारतीय महिला क्रिकेट टीम मंगलवार को यहां दूसरे एक दिवसीय मैच में न्यूजीलैंड के खिलाफ बल्लेबाजी और क्षेत्ररक्षण में बेहतर प्रदर्शन के इरादे से उतरेगी। पहले वनडे में भारत ने किसी भी विभाग में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। न्यूजीलैंड ने 275 रन का पहाड़ खड़ा कर डाला लेकिन जवाब में कप्तान मिताली राज को छोड़कर कोई बल्लेबाज नहीं चला। भारतीय टीम 213 रन पर आउट हो गई और 62 रन से मैच हार गई। सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना की कमी टीम को खली जो पृथकवास की अवधि बढ़ाये जाने के कारण पहला मैच नहीं खेल सकी। रेणुका सिंह और मेघना सिंह भी पहले मैच से बाहर रही। मंधाना और मेघना दूसरा मैच भी नहीं खेल सकेंगी जबकि रेणुका पृथकवास से बाहर है। पहले वनडे में एक समय भारत का स्कोर दो विकेट पर 105 रन था जो छह विकेट पर 165 रन हो गया। न्यूजीलैंड के गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन किया। पचास ओवरों का विश्व कप अब तीन सप्ताह से भी कम समय बाद खेला जायेगा। ऐसे में बल्लेबाजी भारत की चिंता का सबब है। कप्तान मिताली ने कहा, हमें 270 रन बनाने चाहिये थे जो अब महिला क्रिकेट में बन रहे हैं। उन्होंने कहा, गेंदबाजों को भी हालात के अनुकूल ढलना होगा।

यह अच्छी बात है कि विश्व कप से पहले हम यहां खेल रहे हैं। हम पहली पारी के दूसरे हाफ में वापसी कर सकते थे लेकिन तेज हवाओं के अनुरूप गेंदबाज खुद को ढाल नहीं सके।

पीकेएल: पटना ने सेमीफाइनल में बनाई जगह

तेलुगू टाइटंस को 38-30 से हराया

बेंगलुरु। तीन बार की चैम्पियन पटना वीवो प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के आठवें सीजन के सेमीफाइनल में पहुंचने वाली पहली टीम बन गई है।

पटना ने पाइरेट्स ने सोमवार को खेले गए लीग के 116वें मैच में तेलुगू टाइटंस को 38-30 से हराकर यह उपलब्धि हासिल की। पटना ने इस सीजन की 14वीं जीत के साथ अंतिम-4 दौर का टिकट कटाया जबकि टाइटंस को सीजन की 15वीं हार मिली। पटना की जीत के हीरो सचिन तंवर रहे, जिन्होंने कुल 14 अंक जुटाए। इसके अलावा डिफेंस में मोहम्मदरेजा शादलू ने हाई-5 पूरा किया। प्लेआफ की दौड़ से पहले ही बाहर हो चुकी टाइटंस के लिए रजनीश ने सुपर-10 लगाया जबकि अंकित बेनीवाल ने सात अंक जुटाए। बहरहाल, पहला हाफ वैसे तो 21-20 से पटना के हक में रहा लेकिन यह हाफ टाइटंस की वापसी

के नाम रहा। सचिन तंवर ने हालांकि दो रेड पर चार अंक लेकर स्कोर 16-8 कर टाइटंस की वापसी पर ब्रेक लगाया लेकिन टाइटंस ने लगातार पांच अंक लेकर स्कोर 12-18 कर दिया।

तालिका में तीसरे स्थान पर पहुंचा यूपी

पिछले मैच में गुजरात के हाथों मिली हार से उबरते हुए यूपी योद्धा ने जीत की पटरी पर वापसी कर अंक तालिका में तीसरा स्थान हासिल कर लिया है। यूपी ने सोमवार को खेले गए 117वें मैच में दबंग दिल्ली को 44-28 के अंतर से हराया। यूपी को 21 मैचों में नौवीं जीत मिली जबकि दिल्ली को 20 मैचों में छठी हार मिली। यूपी के लिए उसके सबसे बड़े स्टार परदीप नरवाल ने 14 अंक लिए जबकि सुरेंदर गिल ने 6 अंक जुटाए।

संक्षिप्त

बीसीसीआई ने बेंगलुरु में नए एनसीए का शिलान्यास किया

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष सौरव गांगुली और सचिव जय शाह ने सोमवार को बेंगलुरु में एक नई राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) की आधारशिला रखी।इस कार्यक्रम में गांगुली और शाह के अलावा बीसीसीआई कोषाध्यक्ष अरुण सिंह और एनसीए प्रमुख वीवीएस लक्ष्मण भी मौजूद रहे।इस अवसर पर जय शाह ने ट्वीट किया, बीसीसीआई के नए एनसीए का शिलान्यास किया। यह हम सभी का दृष्टिकोण में कि हमें उत्कृष्ट केंद्र बनाना है जो प्रतिभा को निखारेगा और देश में क्रिकेट इको सिस्टम के लिए सहायक होगा।

कैली ने मोनोबॉब में स्वर्ण पदक जीता

बीजिंग। अमेरिका की कैली हम्फ्रीस ने बीजिंग शीतकालीन ओलंपिक के उद्घाटन के दिन महिला मोनोबॉब स्पर्धा में स्वर्ण पदक हासिल किया। एथलीट हम्फ्रीस ने 4:19:27 का समय लेकर स्वर्ण पदक जीता। उनके बाद एलाना मेयर्स टेलर ने 4:19:27 समय लेकर रजत और कनाडा की क्रिस्टीन डी ब्रुइन ने 4:21:03 समय लेकर कांस्य पदक जीता। उल्लेखनीय है कि महिला एथलीटों के लिए मोनोबॉब प्रतियोगिता को शीतकालीन ओलंपिक में पहली बार शामिल किया गया है।

आईपीएल के लिए उपलब्ध हैं वेस्टइंडीज के खिलाड़ी: सीडब्ल्यूआई

सेंट जॉन्स। क्रिकेट वेस्टइंडीज (सीडब्ल्यूआई) ने सोमवार को घोषणा की कि वेस्टइंडीज के सभी खिलाड़ी आईपीएल 2022 के लिए उपलब्ध होंगे। क्रिकेट वेस्टइंडीज ने कहा, सीडब्ल्यूआई ने प्रत्येक वर्ष अपने आईसीसी फ्यूचर टूर प्रोग्राम में टूर्नामेंट के लिए एक विंडो रखी और खिलाड़ियों को उनके रिटेनर कॉन्ट्रेक्ट की गारंटी भी दी है। इसलिए वेस्टइंडीज के खिलाड़ी हर साल आईपीएल में हिस्सा लेने के लिए पूरी तरह से उपलब्ध रहते हैं। गौरतलब है कि फ्रेंचाइजियों द्वारा कीरोन पोलार्ड, सुनील नारायण और आंद्रे रसेल सहित 14 वेस्टइंडीज को नीलामी से पहले उनको रिटेन किया था। आईपीएल में वेस्टइंडीज के सबसे अधिक 17 खिलाड़ी खेलते नजर आएंगे।

चैम्पियंस लीग: आज से शुरू होंगे अंतिम-16 के मुकाबले

रीयाल मैड्रिड और पीएसजी में होगी भिड़ंत

वाशिंगटन। चैम्पियंस लीग फुटबॉल में अब नॉकआउट मुकाबले मंगलवार से शुरू होंगे और सभी की नजरें 13 बार की विजेता रीयाल मैड्रिड और पेरिस सेंट जर्मेन के मैच पर टिकी होंगी।

पीएसजी की नजरें पहली बार यह खिताब जीतने पर लगी है लेकिन उसके सामने रीयाल मैड्रिड जैसी धुरंधर टीम है। जवाबी हमले पर तेज खेलने वाली टीमों के खिलाफ पीएसजी को दिक्कत आती है और मैड्रिड इसमें माहिर है। मैड्रिड का आक्रमण हालांकि बहुत हद तक करीम बेंजमा पर निर्भर होगा जिनका चोट के कारण खेल पाना अनिश्चित है। उनके विकल्प के तौर पर जेरेथ बेल हैं जो खराब फॉर्म में हैं। दूसरी ओर पीएसजी की उम्मीदें काइलियान एमबाप्पे की टिकी होंगी। मिडफील्ड में मैड्रिड के पास लुका मोडरिच और केसमिरो जैसे दिग्गज हैं। मैड्रिड 2018 में यूरोपीय

कप खिताब की हैट्रिक लगाने के बाद से फाइनल में नहीं पहुंच सका है। दूसरे मैच में फॉर्म में चल रही मैनचेस्टर सिटी का सामना स्पोर्टिंग से होगा। वहीं साल्जबर्ग की टक्कर बायर्न म्युनिख से और इंटर मिलान का सामना लिवरपूल से होगा।

पाक दौरे तक फिट हो जाएंगे स्मिथ

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के सीनियर बल्लेबाज स्टीव स्मिथ एक सप्ताह के भीतर सिर की चोट (कनकशन) से उबर जायेंगे और अगले महीने पाकिस्तान दौरे के लिये उपलब्ध होंगे। अपने कैरियर में कई बार कनकशन का शिकार हुए स्मिथ को श्रीलंका के खिलाफ रविवार को टी20 मैच के दौरान सीमा रेखा के पास एक छक्का रोकने का प्रयास करते हुए सिर के बल गिरने से चोट लगी थी। क्रिकेट आस्ट्रेलिया ने कहा कि उनका उपचार पूरा हो गया है और वह एक सप्ताह के भीतर चोट से उबर जायेंगे। सीए ने कहा, उन्हें अगले कुछ दिन निचले स्तर के प्रोटोकॉल से गुजरना होगा और वह छह सात दिन में पूरे ठीक हो जायेंगे। स्मिथ श्रीलंका के खिलाफ मौजूदा टी20 श्रृंखला के बाकी तीन मैचों से बाहर हो गए हैं। वह हालांकि चार मार्च से शुरू हो रहे पाकिस्तान दौरे तक ठीक हो जायेंगे।

एफआईएच प्रो लीग में भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 10-2 से रौंदा

हरमनप्रीत सिंह ने दागे चार रोमांचक गोल

नई दिल्ली। ड्रैग फ्लिक विशेषज्ञ हरमनप्रीत सिंह के चार रोमांचक गोलों से भारत ने एफआईएच प्रो हॉकी लीग मैच में मेजबान दक्षिण अफ्रीका को 10-2 से करारी मात दी। भारत ने पिछले मैच में फ्रांस से मिली 0-5 की हार से उबरते हुए इस मुकाबले में बेहतर प्रदर्शन किया।

भारत की हॉकी टीम ने रविवार को ड्रैग फ्लिक विशेषज्ञ हरमनप्रीत सिंह के चार रोमांचक गोलों से दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ बढ़त बनाई। जिससे दक्षिण अफ्रीका पहले हाफ में 1-3 से पीछे रहा।

भारतीय खिलाड़ी हरमनप्रीत ने 36, 52, 60, 60 वें मिनट में गोल दागे जबकि शिलानंद लाकडा ने 27वें और 48वें मिनट पर भारत की ओर से गोल किए। इसके साथ ही सुरेन्द्र कुमार ने 15वें मिनट में, मनदीप सिंह ने 28वें मिनट में, सुमित ने 45वें और शमशेर सिंह ने 56 मिनट में गोलकर दक्षिण अफ्रीका की आशाओं में पानी फेर दिया। वहीं दक्षिण अफ्रीका की ओर से डेनियल बेल और कॉनर ब्यूचैम्प ने एक-एक गोल किया। भारत वर्तमान में प्रो हॉकी लीग रैंकिंग में चार मैचों के बाद 9 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर है। दक्षिण अफ्रीका तालिका में सबसे नीचे है। वह एक मैच भी नहीं जीत सका। भारत अगला एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2022 होम लेग में 26 और 27 फरवरी को स्पेन से खेलेगा।

एल के एफ सी की शानदार जीत

भोपाल। खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने के लिए राजधानी के कोहेफिजा अहमादाबाद पैलेस स्थित बेस्ट शॉट्स इंडोर स्पोट्स क्लब के द्वारा बीबीएस फुटबाल टूनामेंट का आयोजन किया गया। जिसमें 12 टीमों ने भाग लिया। आज खेले गए फाइनल मुकाबले में एल के एफ सी और बाबे अली यूनाइटेड के बीच संघर्षपूर्ण मैच में पेनाल्टी स्ट्रोक के द्वारा एल के एफ सी ने गोल दागकर मुकाबला अपने नाम किया। साथ ही दर्शकों ने इस रोमाचंक मुकाबले का लुत्फ उठाया। और दोनों ही टीमों का मनोबल बढ़ाया। मैच के अंत में श्री शाहबाज कौसर और सुफियान अली ने विजय टीम को 12 हजार का नगद पुरूस्कार एवं ट्राफी और रनरअप टीम को 5 हजार का नगद पुरूस्कार देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर स्टेडियम ऑनर शाहबाज कौसर और सुफियान अली ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए बताया कि आज युवा वर्ग मोबाइल व अन्य गतिविधियों में व्यस्त रहकर अपना समय बर्बाद कर रहा है। इस स्टेडियम की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई है कि युवा वर्ग खेलों की तरफ आकर्षित होकर ऊर्जावान खिलाड़ी बने और देश एवं प्रदेश का नाम रोशन करें।

अपली लॉन्ग टर्म इंडियन गर्ल से शादी करने वाले हैं ग्लेन मैक्सवेल, तमिल स्टाइल में वायरल हो रहा शादी का कार्ड

ऑस्ट्रेलियाई स्टार ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल जल्द ही अपनी मंगेतर भारतीय मूल निवासी विनी रमन के साथ शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं। बता दें कि, दोनों की सगाई साल 2020 में हुई थी। इस समय दोनों की शादी का कार्ड सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, क्योंकि यह शादी का कार्ड तमिल में पारंपरिक पीले चमकदार कागज में छपा है।दोनों की शादी 26 मार्च को मेलबर्न में होगी। लेकिन इस शादी की डेट से रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर की परेशानी बढ़ गई है। जानकारी के लिए बता दें कि, 13 मार्च, 2020 को ग्लेन मैक्सवेल और विनी रेमन की सगाई भारतीय रीति-रिवाजों के अनुसार मेलबर्न में हुई थी। इसमें मैक्सवेल ने नीली शेरवानी पहनी हुई थी और विनी ने लहंगा पहना हुआ था। कोरोना के कारण दोनों की शादी कैंसिल हो गई थी। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, मैक्सवेल ने ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट अवॉर्ड्स में पहली बार विनी का नाम लिया था। मैक्सवेल अंतरराष्ट्रीय या फ्रेंचाइजी क्रिकेट खेलने के बीच में विनी के साथ अकेले समय बिताते हैं। मालूम हो कि शादी समारोह भारतीय रीति-रिवाजों के मुताबिक होगा। शादी मेलबर्न के ब्लैकबर्न रोड पर पुसी बॉलरूम में होगी। विनी एक तमिल ब्राह्मण परिवार की बेटी हैं। उनके पिता रामानुज दासन और माता विजयलक्ष्मी रमन विनी के जन्म से पहले स्थायी रूप से ऑस्ट्रेलिया चले गए। विक्टोरिया के मेंटन गर्ल्स सेकेंडरी कॉलेज में पढ़ने वाली विनी अब पेशे से डॉक्टर हैं। उन्होंने मैक्सवेल के साथ पेरिस, लंदन, डबलिन, न्यूजीलैंड का भी दौरा किया है। मैक्सवेल से पहले ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटरों में से एक शॉन टेट ने एक भारतीय प्रेमी से शादी की थी। आरसीबी ने आईपीएल नीलामी से पहले ही मैक्सवेल को रिटेन कर लिया है। उन्हें कप्तान बनाने की भी अटकलें लगाई जा रही थीं। हालांकि फाफ डू प्लेसिस अब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से बाहर हो गए हैं, लेकिन वह पूरे समय आईपीएल में उपलब्ध रहेंगे। इसलिए प्रोटियाज के पूर्व कप्तान को आरसीबी का कप्तान घोषित किया जा सकता है। ऑस्ट्रेलिया की सीमित ओवरों की क्रिकेट टीम के क्रिकेटर पाकिस्तान दौरे के कारण आईपीएल के पहले कुछ मैच मिस कर सकते हैं। हालांकि मैक्सवेल बैचलर बैज हटाकर आईपीएल में खेलने आएंगे।

द. अफ्रीका के कीगन पीटरसन बने प्लेयर ऑफ द मंथ

हमवतन डेवाल्ड ब्रेविस और बांग्लादेश के इबादत को पछाड़कर जीता पुरस्कार

दुबई। दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाज कीगन पीटरसन ने भारत के खिलाफ टेस्ट सीरजी में शानदार प्रदर्शन की बदौलत अंडर-19 विश्व कप स्टार और हमवतन डेवाल्ड ब्रेविस तथा बांग्लादेश के तेज गेंदबाज इबादत हुसैन को पछाड़कर जनवरी का अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद का महीने का सर्वश्रेष्ठ पुरुष क्रिकेटर का पुरस्कार जीता।

पीटरसन ने भारत के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला में 0-1 से पिछड़ने के बावजूद तीन मैचों की श्रृंखला में दक्षिण अफ्रीका की 2-1 की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने दूसरे टेस्ट में पहली पारी में 62 रन बनाए जिससे उनकी टीम मामूली बढ़त हासिल करने में सफल रही। इसके बाद 240 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए उन्होंने 28 रन की पारी खेली। अंतिम टेस्ट में पीटरसन ने दोनों पारियों में अर्धशतक जड़े। उन्होंने 212 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए 82 रन की शानदार पारी खेली जिससे दक्षिण अफ्रीका ने वापसी करते हुए मैच और श्रृंखला जीती। पीटरसन श्रृंखला के शीर्ष स्कोरर रहे। उन्होंने 276 रन बनाए और उन्हें श्रृंखला का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व स्टार और वोटिंग पैनल के सदस्य जेपी डुमिनी ने कहा, श्रृंखला के प्रचार और उच्च उम्मीद के साथ, उन्होंने नंबर तीन की स्थिति में बल्लेबाजी करते हुए जो संयम दिखाया, वह चौंका देने वाला था।

महिला वर्ग में इंग्लैंड की हीथर नाइट ने जीता अवॉर्ड

महिला पुरस्कार इंग्लैंड की कप्तान हीथर नाइट ने जीता जिन्होंने श्रीलंका की कप्तान चामरी अटापट्टू और वेस्टइंडीज की स्टार डिएंड्रा डोटिन को पछाड़ा। नाइट ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ कैनबरा में एकमात्र एशेज टेस्ट में इंग्लैंड की कप्तानी की और मैच में शीर्ष स्कोरर रहीं। पहली पारी में ऑस्ट्रेलिया ने नौ विकेट पर 337 रन बनाकर पारी घोषित की। इसके जवाब में इंग्लैंड ने नियमित अंतराल पर विकेट गंवाए लेकिन ऑस्ट्रेलिया की गेंदबाजों के पास तीसरे ओवर में तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरी नाइट का कोई जवाब नहीं था जो 168 रन बनाकर नाबाद रहीं। इंग्लैंड का स्कोर एक समय आठ विकेट पर 169 रन था लेकिन नाइट ने सोफी एकलेस्टोन के साथ नौवें विकेट के लिए 100 रन की साझेदारी की जिससे टीम 297 रन बनाने में सफल रही। आस्ट्रेलिया की टीम सिर्फ 40 रन की बढ़त हासिल कर पाई। नाइट की नाबाद 168 रन की पारी महिला टेस्ट के इतिहास में किसी कप्तान द्वारा दूसरा सर्वोच्च स्कोर है।

अनाथ बच्ची को मिला एसएनसीयू का साथ - स्वस्थ होने पर बाल कल्याण समिति को सौंपी गई एक अन्य लावारिस नवजात

प्रखर जौनपुर। जिला अस्पताल की सिक न्यू बार्न केयर यूनिट (एसएनसीयू) नवजात को जीवन देने का काम कर रही है` समय से पहले जन्म लेने वाले या कम वजन के नवजात को स्वस्थ बनाने में यह यूनिट बड़ी भूमिका निभा रही है` इसी तरह की एक लावारिस नवजात को गत 11 फरवरी को यहाँ लाया गया था, जिसकी स्थिति नाजुक थी लेकिन यूनिट के सभी कर्मचारियों के प्रयास से अब वह सामान्य स्थिति में पहुँच गई है` इससे दो दिन पहले भी इसी तरह की एक और बच्ची को स्वस्थ बनाकर चाइल्डलाइन के माध्यम से बाल कल्याण समिति को सौंपा गया है`

एसएनसीयू का पूरा स्टाफ इन दिनों 11 फरवरी को आई बच्ची पर सारा प्यार लुटा रहा है। उस बच्ची को सब प्यार से परी बुलाते हैं` वहां की स्टाफ नर्स प्रतिभा पांडे बताती हैं कि 11 फरवरी को आई बच्ची बहुत ही प्यारी है। स्टाफ नर्स से लेकर सारा स्टाफ अपनी जिम्मेदारियां निभाने के साथ ही उसका ख्याल रखते हैं।

एसएनसीयू के नोडल अधिकारी डॉ संदीप सिंह ने बताया कि एक नवजात बच्ची गत 20 जनवरी को जलालपुर में एक नहर के पास तथा दूसरा नवजात (बालक) 29 जनवरी को खुटहन ब्लॉक के उंगली गांव में लावारिस हालत में मिले थे। इनमें से जलालपुर से मिली बच्ची स्वस्थ घोषित होने के बाद नौ फरवरी को चाइल्ड लाइन को सौंप दी गई। उसके जाने के दो दिन बाद 11 फरवरी को डोभी ब्लॉक के रामदत्तपुर में चाइल्ड लाइन को लावारिस हालत में एक बच्ची मिली। इस समय एसएनसीयू में इस बच्ची की तथा 29 जनवरी को मिले नवजात (मेल बेबी) की परवरिश चल रही है। उन्हें दूध पिलाने, मालिश करने के लिए सभी की जिम्मेदारी तय है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2017 में एसएनसीयू खुलने से लेकर आज तक 30 से ज्यादा ऐसे नवजात लाए गए जिनके माता-पिता का पता नहीं था। लावारिस हालत में आने वाले ज्यादातर नवजात यहां पर चाइल्ड लाइन के माध्यम से लाए जाते हैं। यहां पर लाए जाने के बाद ऐसे बच्चों के इलाज से लेकर कपड़ा और दूध सभी का खर्च एसएनसीयू ही उठाता है। ऐसे एक नवजात की परवरिस में प्रतिदिन औसतन 150 से 200 रुपये तक का खर्च आता है। स्वस्थ हो जाने पर बाल संरक्षण गृह से सम्पर्क कर इन्हें बाल संरक्षण अधिकारी को सौंप दिया जाता है। जहां से वह बाल संरक्षण गृह बलिया आदि अन्य जगहों पर अच्छे स्वास्थ्य एवं जीवन प्रबंधन के लिए भेज दिए जाते हैं।

प्रेक्षकगण द्वारा हीरालाल डिग्री कॉलेज में बनाये गये स्ट्रांग रूम एवं मतगणना स्थल का किया गया स्थलीय निरीक्षण

प्रखर संत कबीर नगर। विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 को सकुशल, शांतिपूर्ण निष्पक्ष एवं पारदर्शी सम्पन्न कराये जाने हेतु मा0 प्रेक्षक 312-विधानसभा मेंहदावल चन्द्रशेखर प्रसाद (आई0ए0एस0), मा0 प्रेक्षक 313-विधानसभा खलीलाबाद श्रावण हर्डीकर (आई0ए0एस0) एवं मा0 प्रेक्षक

314-विधानसभा धनघटा (अ0जा0) वी0 सम्पत (आई0ए0एस0) ने जिला निर्वाचन अधिकारी दिव्या मित्तल, पुलिस अधीक्षक डा0 कौस्तुभ के साथ हीरालाल डिग्री कॉलेज में पहुच कर मतगणना स्थल एवं तीनों विधानसभाओं हेतु बनाये गये स्ट्राग रूम का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मा0 प्रेक्षकगण ने मतगणना के समय कोविड-19 को दृष्टिगत रखते हुए एक पंक्ति में अधिकतम 7-7 टेबल ही लगाये जाने के निर्देश दिये। मा0 प्रेक्षकगण ने मतगणना के समय स्ट्राग रूम एवं मतगणना स्थल पर विद्युत आपूर्ति बनाये रखने तथा साफ-सफाई एवं शौचालय आदि को सुव्यवस्थित रखने का निर्देश सम्बंधित आर0ओ0 को दिये। उन्होंने सभी तीनों विधानसभाओं के आर0ओ0 को निर्देशित करते हुए कहा कि स्ट्रांग रूम सहित मतगणना स्थल पर सी0सी0 टी0वी0 कैमरें की व्यवस्था सुनिश्चित रखी जाए। उन्होंने मतगणना स्थल पर कोविड-19 के दृष्टिगत मास्क, सेनेटाइजर की भी व्यवस्था रखने हेतु निर्देशित किया। इस अवसर पर उप जिला निर्वाचन अधिकारी मनोज कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार सिंह, आर0ओ0 मेंहदावल अजय कुमार, आर0ओ0 खलीलाबाद नवीन श्रीवास्तव, आर0ओ0 धनघटा योगेश्वर सिंह, अधिशाषी अभियन्ता लो0नि0वि0, सूचना अधिकारी सुरेश कुमार सरोज सहित सम्बंधित अधिकारी आदि उपस्थित रहें।

संक्षिप्त खबरें

पुलवामा हमले में शहीद हुए जवानों को सुबोध चंद यादव ने दी श्रद्धांजलि

प्रखर सन्तकबीरनगर। पुलवामा हमले में शहीद जवानों की याद में युवा नेता व आम आदमी पार्टी के खलीलाबाद विधानसभा प्रत्याशी सुबोध चंद्र यादव ने कैंडल जलाकर श्रद्धांजलि दी।श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि 14 फरवरी 2019 को जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर भारतीय सुरक्षा कर्मियों को ले जाने वाले सीआरपीएफ के वाहनों के काफिले पर आत्मघाती हमला हुआ जिसमें 45 जवान शहीद हो गए थे। इस घटना से मर्माहत हैं और ईश्वर से वीर सपूत के महान आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की।आम आदमी पार्टी के खलीलाबाद विधानसभा प्रत्याशी सुबोध चंद्र यादव ने कहा कि देश के वीर सपूत जब जगते हैं तब देश के लोग अमन और चैन की नींद सोते है। देश की सुरक्षा में जवानों का महत्वपूर्ण योगदान है। हमारे जवान जो हमेशा देश की रक्षा में अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार रहते हैं। इस अवसर पर सुरेंद्र यादव, लालचंद यादव, सोनू पाल, मणि शंकर यादव, अखिलेश यादव, राम अशीष यादव, भोलू चौरसिया, बिरजू यादव,गौरव यादव, गिरीश चंद यादव समेत तमाम लोग मौजूद रहे है।

यूपी विधानसभा चुनाव तैयारियों के मद्देनजर नायब तहसीलदार मड़िहान ने किया बूथों का निरीक्षण

प्रखर अहरौरा (मिजार्पुर)। उत्तर प्रदेश आगामी विधानसभा चुनावों में निष्पक्ष व शांतिपूर्ण मतदान को लेकर तहसीलदार मड़िहान बिन्दुनंदन सिंह ने लेखपाल अरविंद पांडेय के साथ क्षेत्र के कई मतदेय स्थलों का निरीक्षण किया। इस दौरान नगर व ग्रामीणों में जाकर बूथों में मिली खामियों को चुनाव प्रक्रिया शुरू होने से पूर्व ही चुस्त दुरूस्त कराने के दिशा निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिया गया। सभी मतदान केंद के बूथों पर बिजली, पंखा, शौचालय, पानी, साफ सफाई से सम्बंधित सुरक्षा के उचित व्यवस्था करने के दिशा निर्देश दिए।

डीआरएम ने बाबतपुर स्टेशन का किया निरीक्षण, ग्रामीणों ने सौपा पत्रक

प्रखर पिंडरा वाराणसी। उत्तर रेलवे के मण्डल रेल प्रबंधक एस के सफरा ने मंगलवार को दोपहर में बाबतपुर रेलवे स्टेशन का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने रेलवे प्लेटफार्म, वेटिंग रूम, शौचालय, पेयजल के साथ फुट ओवरब्रिज देखा। उन्होंने शौचालय व पेयजल तथा फुट ओवरब्रिज को जल्द ठीक कराने का आश्वासन दिया। वही मंडल रेल प्रबंधक के आगमन की सूचना पर दैनिक रेलयात्री भी पहुच गए और डॉ0 कमल कुमार पटेल व पप्पू सिंह के नेतृत्व मे फैजाबाद मुगलसराय पैसेंजर, वरुणा एक्सप्रेस, वाराणसी सुल्तानपुर पैसेंजर, इण्टर सिटी (वाराणसी गोण्डा) ,डी.एम.यू. (गाजीपुर वाराणसी) वाराणसी लखनऊ पैसेंजर, बरेली एक्सप्रेस, गंगा सतलज एक्सप्रेस, डूलीकेट पंजाब एक्सप्रेस तथा ओवर ब्रिज से मंगारी बाजार व गाँव के लिंक रोड के लिये पत्रक दिया गया और जल्द पूर्ण होने की मांग की। इस दौरान विजय ,भगत पटेल, विकास सेठ ,प्रदीप श्रीवास्तव, रमेशचंद्र पटेल, पांचू गुप्ता, गौरीशंकर, राजकिशोर मिश्र ,जयनाथ, राजेंद्र कुमार पटेल, बिक्की पटेल, रामबली , सुधाकर पटेल समेत अनेक ग्रामीण रहे। लगभग 15 मिनट तक बाबतपुर रेलवे स्टेशन पर रहने के बाद गन्तव्य को रवाना हो गए।

यूपी के विकास के लिए सपा जरूरी: ललई बोले- सुशासन और मंहगाई कम करने के लिए अखिलेश का आना जरूरी

प्रखर शाहगंज,जौनपुर। पूर्व मंत्री शाहगंज विधायक सपा प्रत्याशी शैलेंद्र यादव ललई ने दर्जनों गांव में नुक्कड़ सभा व जनसंपर्क कर वोट मांगा। इस दौरान ललई यादव ने कहा, यूपी में सुशासन और मंहगाई कम करने के लिए सपा सरकार लानी होगी। गाँव सोनरा, रहीमापुर गोपालपुर, अमारी, पूरा असालतखाँ, अशोकपुर देनुआ, मयारी भिवरहा, पिपरौल, मिसिरपुर, और पूरा सम्बलशाह में जनसंपर्क के दौरान ग्राम वासियों से मिलकर ललई यादव ने वोट की अपील की। इस दौरान आम जनता का भी उन्हें भरपूर समर्थन मिल रहा है उन्होंने कहा, जनता 5 साल से महंगाई झेल रही है। इस बार सरकार बदलने के लिए तैयार है। इस बार 300 यूनिट फ्री बिजली, बच्चों की शिक्षा के लिए फ्री लैपटॉप और नई नौकरियों के सृजन के लिए जनता सपा की सरकार का गठन करेगी।

विधानसभा निर्वाचन के तृतीय चरण चुनाव कराने हेतु संतकबीरनगर पुलिस हमीरपुर हुई रवाना

प्रखर सन्तकबीरनगर। मंगलवार को पुलिस डॉ कौस्तुभ निर्देश अपर पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार सिंह के मार्गदर्शन में क्षेत्राधिकारी खलीलाबाद अंशुमान मिश्रा द्वारा विधानसभा निर्वाचन के तृतीय चरण हेतु जनपद हमीरपुर में होने वाले मतदान हेतु चुनाव ड्यूटी के लिए पुलिस लाइन संतकबीरनगर में पुलिस फोर्स को ब्रीफ करके हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। क्षेत्राधिकारी द्वारा पार्टियों को रवाना करने से पहले पुलिस लाइन परेड ग्राउंड में कर्मियों को एकत्र करके चुनाव आयोग द्वारा दिये गये दिशा निदेर्शों से अवगत कराते हुए अनुशासन में रहकर अपनी-अपनी ड्यूटी को पूरी निष्ठा के साथ करने हेतु हिदायत दी गयी, जिससे कि निष्पक्ष व निर्विघ्न मतदान संपन्न हो सके । प्रतिसार निरीक्षक पुलिस लाइन द्वारा सभी कर्मचारियों को अपने कर्तव्यों का अच्छी तरीके से निर्वहन करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गये, साथ ही साथ कोविड-19 के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए इससे सुरक्षा एवं बचाव के लिए सभी लोगों को मास्क, सैनिटाइजर का प्रयोग करने व सतर्क रहकर ड्यूटी करने हेतु निर्देशित किया गया। कोविड-19 से सुरक्षा एवं बचाव के दृष्टिगत सभी अधिकारी / कर्मचारियों को फेसशील्ड, मास्क, सैनिटाइजर वितरित किया गया व पुलिस पार्टी लेकर जा रही बसों मे प्राथमिक उपचार किट उपलब्ध कराई गई।तत्पश्चात क्षेत्राधिकारी महोदय द्वारा हरी झंडी दिखाकर पुलिस बल को रवाना किया गया।

स्कार्पियो ने बाइक में मारी टक्कर, बाइक सवार घायल

बिल्थरारोड(बलिया)। उभाँव थाना क्षेत्र के तहसील मुख्यालय के ठीक सामने इण्डियन पेट्रोल पंप पर रविवार कि देर शाम करीब 7 बजे अरविंद राजभर42वर्ष पुत्र चंदेलाल निवासी अवाया बाईक में पेट्रोल भरा कर पेट्रोल पंप के ही प्रांगण में बाइक पर बैठ कर मोबाइल से किसी से बात कर रहा था तभी एक स्कार्पियो सवार ने पीछे से आकर बाइक पर बैठ युवक के बाईक में जोरदार टक्कर मार दी जिसमें बाइक सवार बुरी तरह से जख्मी हो गया और बाइक भी क्षतिग्रस्त हो गई व पेट्रोल पंप का हवा उपकरण भी बुरी तरह से ध्वस्त हो गया स्थानीय लोगों ने आनन-फानन में घायल को समुदाय स्वास्थ्य केंद्र सीयर पहुंचाएं जहां पर प्राथमिक उपचार के बाद डॉ लालचंद शर्मा ने घायल को बलिया सदर अस्पताल के लिए रेफर कर दिया।

बच्चों को आधारभूत शिक्षा देने के लिए अध्यापकों को किया जा रहा है प्रशिक्षित

प्रखर अहरौरा मिजार्पुर। बेसिक शिक्षा में पढ़ने वाले बच्चों को भाषा एव गणित का आधारभूत शिक्षा देने के लिए अध्यापकों को चार दिवसीय प्रशिक्षण देकर जमालपुर विकासखंड के कमपोजिट विद्यालय फतेपुर में प्रशिक्षित किया जा रहा है । चार दिवसीय प्रशिक्षण का समापन मंगलवार को किया गया । प्रशिक्षण के माध्यम से अध्यापकों को बताया जा रहा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार किस तरह बच्चों को आधारभूत शिक्षा उपलब्ध कराया जाय । प्रशिक्षण दे रहे ए आर पी अजय वर्मा ने बताया कि सरकार का लक्ष्य है कि बेसिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चे को आने वाले दिनों में भाषा एवं गणित की दक्षता हासिल करें

इसके लिए अध्यापकों को प्रशिक्षित कर बच्चों को गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाने का तरीका बताया जा रहा है । ए आर पी सूर्य नारायण सिंह ने प्रशिक्षण के माध्यम से अध्यापकों को बताया कि बच्चों को खेल खेल में किस तरह से गणित के अंको का ज्ञान कराएं और उनको जोड़ घटाव गुणा कैसे बताएं । ए आर पी जितेंद्र शर्मा ने हिंदी की दक्षता के लिए प्रशिक्षण के माध्यम से बताया कि सरल ढंग से विद्यालय में पढ़ने वाले एक दो तीन सहित अन्य छोटे बच्चों को किस तरह से खेल खेल में दक्ष बनाया जाए । प्रशिक्षण में प्रशिक्षण ले रहे विभिन्न विद्यालय के अध्यापकों ने गतिविधियों के माध्यम से अपने कौशल का परिचय दिया । प्रशिक्षण देने वालों में अभिषेक कनहाई कुंदन विद्यासागर इत्यादि लोग रहें । प्रशिक्षण के अंतिम प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र दिया गया ।

ब्लाक स्तरीय क्विज प्रतियोगिता में मतदाताओं ने हर्षोल्लास के साथ सहभागिता किया

प्रखर जौनपुर (संवाददाता-मोहम्मद अरशद) । स्वीप कार्यक्रम की कड़ी में मतदाता जागरूकता वोट करेगा जौनपुर क्विज प्रतियोगिता आज नगर एवं 21 विकास खण्डों पर आयोजित हुआ। जिसमें 12 फरवरी को परिषदीय विद्यालयों पर ग्राम पंचायत स्तर पर आयोजित हुई प्रतियोगिता के प्रथम व द्वितीय स्थान पर आने वाले मतदाताओं ने बड़े ही उत्साह के साथ सहभागिता किया। परीक्षा को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने के लिए सभी खण्ड शिक्षा अधिकारी अपने अपने ब्लाकों में निगरानी करते रहे।

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी/ सहायक स्वीप प्रभारी डा गोरखनाथ पटेल ने सिरकोनी ब्लाक में जाकर परीक्षा का निरीक्षण किया। तथा उपस्थित लोगों को मतदाता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डा गोरखनाथ पटेल ने बताया कि ग्राम पंचायत स्तर पर आयोजित परीक्षा में लगभग 165678 मतदाताओं ने भाग लिया था। आज ब्लाक स्तर पर आयोजित परीक्षा में लगभग 5600 मतदाताओं ने सहभागिता किया। उन्होंने बताया कि ब्लाक

स्तरीय परीक्षा में प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतिभागियों की फाइनल परीक्षा जिला स्तर पर 18 फरवरी को डायट परिसर में होगी। जिसमें सफल होने पर प्रथम को 15 हजार, द्वितीय को 10 हजार व तृतीय स्थान पर रहने वाले को 5 हजार रूपए का नगद पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। आगे उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य मतदाताओं को 7 मार्च को मतदान करने हेतु उनके अन्दर जागरूकता पैदा करते हुए, उनमें निर्वाचन साक्षरता बढ़ाना और मतदान करने के लिए प्रेरित करना है। प्रतियोगिता को सकुशल संपन्न कराने में सभी खण्ड शिक्षा अधिकारी, डी सी प्रशिक्षण सुरेश पाण्डेय, जिला स्वीप कोआर्डिनेटर सैय्यद मोहम्मद मुस्तफा, एआरपी राजू सिंह, अखिलेश यादव सहित सभी शिक्षकों एसआरजी, आदि का विशेष योगदान रहा।

विद्यावाचस्पति अरविद को सुखपुरा गौरव से किया सम्मानित

सुखपुरा (बलिया)। शहीद स्मारक परिसर सुखपुरा में इंटर कालेज सुखपुरा के 1993 बैच के हाई स्कूल के छात्रों ने अपने एक सहपाठी अरविद उपाध्याय को संगीत के क्षेत्र में जनपद का नाम रोशन करने व विक्रमशिला विश्वविद्यालय भागलपुर से विद्यावाचस्पति का सम्मान प्राप्त करने पर सुखपुरा गौरव से सम्मानित किया। सम्मान में उन्हें अंगवस्त्रम् व स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। इसके पूर्व एक गोष्ठी को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि कस्बा निवासी अरविद उपाध्याय युवाओं के प्रेरणा हैं। वक्ताओं ने कस्बा व विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट काम करने वालों को भी भविष्य में सम्मानित करने व उन्हें मंच प्रदान करने का आश्वासन दिया। कहा कि भोजपुरी के परंपरागत गीत विलुप्त होते जा रहे हैं और उसकी जगह पर अश्लील गीत परोसे जा रहे हैं। यह भोजपुरी समाज के लिए पीड़ादायक है। इसके विरुद्ध आंदोलन छेड़ने की जरूरत है।

जनसंपर्क कर लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए मांगा मतदाताओं से समर्थन

प्रखर संतकबीरनगर । धनघटा विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न गांव में कांग्रेस प्रत्याशी शांति देवी ने किया जनसंपर्क पौली ब्लॉक के ग्राम सभा दूल्हापार, पौली, मूठही, बेराड़ी , रोस्तमपुर, कड़जी, आदि गावों में शांति देवी ने डोर टू डोर किया जनसंपर्क शांति देवी ने कहा धनघटा विधानसभा क्षेत्र की सम्मानित जनता से यही अपील है ज्यादा से ज्यादा संख्या में मतदान करें कांग्रेस पार्टी के लिए मतदान करें विकास, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, के मुद्दे पर वोट करें पार्टी ने जनता के हित के लिए सरकार में रहते हुए काम किया और विपक्ष में रहते हुए एक मजबूत विपक्ष का कर्तव्य निभाया है विपक्ष में रहते हुए जनता से जुड़े हर मुद्दे को प्रखर रूप से उठाया है सरकार बनने के बाद सबसे पहला काम युवाओं को रोजगार देना किसानों को कर्ज माफी करना संविदा आंगनवाड़ी कार्यकताओं को अस्थाई बनाना जनता के हित में काम करना ही कांग्रेस पार्टी का चुनावी मुद्दा है के साथ शांति देवी ने लड़की हु लड़ सकती हूं का नारा लगाकर लोगों को उत्साहित किया इसी के साथ पार्टी जिला महासचिव अजय सिंह ने कहा भाजपा का विकास सिर्फ कागजों में है बसपा को वोट करना मतलब भाजपा को वोट करना है लॉकडाउन में जनता जिन परेशानियों का सामना कर चुकी है अब आगे नहीं करना चाहती है भाजपा ने आम जनता को उत्तर प्रदेश के अंदर बहुत सताया है इसका परिणाम भाजपा को 10 मार्च को पता चल जाएगा इसी के साथ कांग्रेस पार्टी के कई वरिष्ठ कार्यकर्ता। पूर्व प्रदेश सचिव नन्हे यादव, जिला सचिव परशुराम सिंह, ब्लॉक अध्यक्ष पौली डॉक्टर अयाजूल हक साहब, ब्लॉक अध्यक्ष हैसर संजय पाठक, ब्लॉक अध्यक्ष नाथनगर चंद्रमणि त्रिपाठी, आदि लोग मौजूद रहे।

नवगठित गवर्निंग काउंसिल द्वारा स्कूल के नाम परिवर्तन एवं महत्वपूर्ण अनुबंधों की घोषणा की गई

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। बताते चलें कि स्वामी विशुद्धानंद फाउंडेशन के तत्वाधान में रुद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर वाराणसी में 15 फरवरी को प्रबंधन समिति एवं क्रिमसन वर्ल्ड एजुकेशन के सदस्यों के साथ एक प्रेस वार्ता का आयोजन अध्यक्ष श्री प्रदीप बिश्नोई की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें नवगठित गवर्निंग काउंसिल द्वारा स्कूल के नाम परिवर्तन एवं महत्वपूर्ण अनुबंधों की घोषणा की गई । प्रेसवार्ता को सम्बोधित करते हुए श्री प्रदीप बिश्नोई ने बताया कि स्वामी विशुद्धानंद फाउन्डेशन ने लगभग 11 वर्ष पूर्व माउंट लिट्रा जी स्कूल (सी.बी.एस.ई. से सम्बद्ध) की स्थापना की थी । स्कूल को एक प्रगतिशील और भविष्यवादी स्कूल के रूप में मान्यता दी गई है, जो न केवल विदयार्थियों के शैक्षणिक विकास पर बल्कि उनके सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है। वर्तमान परिवेश में वैश्विक महामारी एवं नई शिक्षा नीति 2020, इन दो महत्वपूर्ण कारकों के संदर्भ में जो बदलाव भारत में शिक्षा के क्षेत्र में आ रहे हैं उसके लिए स्कूलों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को इन परिवर्तनों के अनुकूल बनाने आवश्यकता है । शिक्षण समूह के साथ एक सहयोग स्थापित किया है जिसका नेतृत्व प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं शोधकर्ता कर रहे है जिन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय एवं

अतः इन दो महत्वपूर्ण पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह घोषणा की गई कि स्वामी विशुद्धानंद फाउन्डेशन ने मुंबई स्थित क्रिमसन अंतर्राष्ट्रीय बोर्ड के साथ कार्य किया है। जैसे सी.बी.एस.ई., आई. सी.एस.ई. आई.बी. एवं कैम्ब्रिज इन सभी के सहयोग से श्रीमान् प्रदीप बिश्नोई, श्रीमती लक्ष्मी राय श्रीमती अंजना देवा (प्रधानाचार्या) एवं क्रिमसन एजुकेशन के सदस्यों के कुशल नेतृत्व में स्कूल संचालन परिषद का एवं स्कूल गवर्निंग काउंसिल का गठन किया गया है जिसके तहत माउंट लिट्रा जी स्कूल अब क्रिमसन वर्ल्ड स्कूल वाराणसी के नाम से जाना जाएगा । विशुद्धानंद फाउंडेशन के सदस्य एवं क्रिमसन वर्ल्ड स्कूल द्वारा गठित गवर्निंग काउंसिल का नेतृत्व श्री प्रदीप बिश्नोई एवं गवर्निंग काउंसिल के अन्य सदस्य श्रीमती लक्ष्मी राय, श्री अनिमेष बिश्नोई, श्री प्रतीक शंकर, श्रीमती अंजना देवा (प्रधानाचार्या) के साथ-साथ स्थाई शिक्षाविद् डॉ अशोक पाण्डेय पूर्व गवर्निंग काउंसिल के सदस्य सी.बी.एस.ई. गवर्निंग काउंसिल सदस्य राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद, 2012 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार एवं शिक्षा में विशिष्ट योगदान के लिए सी.बी.एस.ई. के द्वारा 2009 में पुरस्कृत श्रीमान् फ्रांसिस जोसफ भारत में ङ-12 शिक्षा को पुनः स्थापित करने वाले 25 कुशल नेतृत्व कताओं में से एक, श्रीमती फरजाना दोहादवाला - 18 वर्ष तक आई. बी की पूर्व दक्षिण एशिया का प्रतिनिधित्व, पाठ्यक्रम विशेषज्ञा, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय अध्यापन रणनीति की कुशल विशेषज्ञा, चाइल्डहुड एसोशिएसन की उपाध्यक्ष एवं श्रीमान् हुसैन दोहादवाला आई. बी. शैक्षणिक प्रणाली (एशिया पेसेफिक रिजन) के सदस्य, गूगल प्रमाणित शिक्षाविद द्वारा किया जाएगा । गवर्निंग काउंसिल की सदस्या श्रीमती लक्ष्मी राय के द्वारा प्रतीक चिह्न का लोकार्पण किया गया। स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती अंजना देवा ने कहा कि 21वीं शताब्दी को विभिन्न शैक्षणिक कौशलों की आवश्यकता है। जिस प्रकार परिवर्तन प्रकृति का नियम है और यह परिवर्तन एक सुखद भविष्य का निमार्ता भी होता है, उसी तरह शिक्षा के क्षेत्र में भी परिवर्तन एवं अद्यतन भी नितांत आवश्यक है । इसी परिवर्तन के तहत क्रिमसन वर्ल्ड स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में नए प्रयोग एव कीर्तिमान स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है । इस अवसर पर अध्यक्ष श्री प्रदीप बिश्नोई, उपाध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मी राय एवं गवर्निंग काउंसिल के अन्य सदस्य श्री अनिमेष विश्नोई एवं श्री प्रतीक शंकर भी उपस्थित थे।

काशी विश्वनाथ दल द्वारा पुलवामा में हुए शहीदों को दी गई विनम्र श्रद्धांजलि, शहीद के पिता का किया गया सम्मान

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। काशी विश्वनाथ दल ने शहीद के पिता श्री हरिकेश बहादुर यादव जी को काशी विश्वनाथ अलंकरण स्मृति चिन्ह भारत माता की तस्वीर संस्था के सभी पदाधिकारियों सदस्यों संरक्षक मंडल सदस्यों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष जंत्रलेश्वर यादव के नेतृत्व में दीया । शहीद अवधेश यादव के पिता ने भावुक होकर अपनी नम आंखों से अपने पुत्र सहित सभी शहीदों को याद कर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित किए संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि आज पुलवामा में हुए शहीदों को हम सब नमन कर अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं एवम आज राजनीतिक दलों को भी समय नही रहा सब नामांकन में व्यस्त रहें, ए मेरे वतन के लोगों जरा आँख में भर लो पानी जो शहीद हुए हैं। उनकी जरा याद करों कुबानीं उनको काशी विश्वनाथ दल के सभी प्रदेश अध्यक्ष अपने-अपने राज्यों में शहीदों को नमन कर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं प्रोफेसर रमेश चंद्र तिवारी ने कहा कि देश की सरहद की सुरक्षा हमारे देश के जवान करते हैं और आज हम पुलवामा में हुए शहीदों को शत शत नमन और विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। शहीद अवधेश यादव के पिता ने कहा कि मेरा बेटा देश के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर किया मुझे अपने बेटे पर गर्व है। मदन यादव ने कहा कि हमें अपने शहीदों को हमेशा याद करते रहना चाहिए उनका बलिदान अतुलनीय है। अजय कुमार तिवारी ने कहा कि हमारे देश के जवानों की देन है कि हम सब अपने घरों में सुरक्षित और सकुशल रहते हुए अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं रहते हैं। प्रेमलता मिश्रा ने कहा कि हमारे देश के जवानों का बलिदान अतुल नी है जिससे हमारा देश सुरक्षित है पूनम सिंह ने शहीदों को याद कर भावपूर्ण गीत से सभी की आंखों को नम करा दिया है। आरती शर्मा ने कहा कि हम सभी को आज का दिन कभी नहीं भूलना चाहिए। रजनी जायसवाल ने कहा कि भारत माता के वीर सपूतों को कभी भुलाया नहीं जा सकता श्रद्धांजलि सभा में प्रमुख रूप से प्रोफेसर रमेश चंद्र तिवारी शहीद के पिता हरिकेश बहादुर यादव मदन यादव अजय कुमार तिवारी प्रेमलता मिश्रा रजनी जयसवाल आरती शर्मा संजय यादव सूरज यादव आरती शर्मा दो सारिका सिन्हा रजनी यादव विनय जायसवाल सीमा यादव गुड़िया रस्तोगी उमा जयसवाल पूनम सिंह नवीन श्रीवास्तव सीमा गौर इत्यादि लोग प्रमुख रूप से अपने-अपने काशी विश्वनाथ दल के टीम का नेतृत्व कर रहे थे।

द्रोणा रत्न स्पोर्ट्स अवार्ड से सम्मानित हुए अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी किशन सेठ

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। उत्तराखंड के हरिद्वार में 13 फरवरी को एक्सीलेंट वर्ल्ड रिकॉर्ड संस्था द्वाराआयोजित द्रोणा रत्न सम्मान समारोह में उत्तर प्रदेश के वाराणसी के अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी कराटे कोच किशन सेठ को द्रोणा रत्न स्पोर्ट्स अवार्ड से सम्मानित किया गया इस कार्यक्रम में देशभर के 90 कोच व खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया था इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर यूनिवर्सिटी आफ दिल्ली की वाइस चांसलर अंजू भंडारी वह कपिल देव आर्य शिरकत कियो गौरतलब है कि किशन लगभग 12 वर्षों बेटियों के आत्मरक्षा के लिए निशुल्क तौर पर आत्मरक्षा के गुण सिखा रहे हैं बात करने पर किशन ने बताया कि पूर्व में उन्हें कई सम्मान मिल चुके हैं जिसमें बॉलीवुड अभिनेता राज बब्बर द्वारा स्वर्ण रत्न अलंकरण सम्मान चंदौली एसपी संतोष सिंह द्वारा पूर्वांचल रत्न सम्मान पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव जी द्वारा सम्मान काशी गौरव रत्न काशी शिरोमणि सम्मान श्रेष्ठ नागरिक सम्मान जैसे कई सम्मान शामिल है सम्मान मिलने पर व्यापारी नेताओं एवं खिलाड़ियों ने बधाई दिया।

गांवों में होंगी शहरी स्तर की सुविधाएं : पीएन पाठक

प्रखर कुशीनगर। भाजपा की पुनः सरकार बनने पर 333 कुशीनगर के गांवों को शहरी स्तर की सुविधाओं से लैस किया जायेगा। हर गांव में बिजली, आर सी सी सड़क ,स्वच्छ पेयजल, शौचालय, स्वच्छता, मांटेसरी स्कूलों की तरह प्राथमिक विद्यालयों में सुविधाएं विकसित की जायेगी। मंगलवार को क्षेत्र के टेकुआटार बाजार में चुनाव कार्यालय के उद्घाटन के अवसर पर व कसया में ग्राम प्रधान संघ की बैठक में विधानसभा क्षेत्र कुशीनगर 333 के भाजपा प्रत्याशी पी एन पाठक ने जब यह बात कही तो पांडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। हर हर मोदी...हर हर योगी..का नारा लगाकर कार्यकताओं ने जबरजस्त तरीके स्वागत किया। कार्यकताओं ने 333 से जीत दिलाने का संकल्प लिया। हाटा के ब्लाकप्रमुख सुधीर राव ने कहा कि बीते पांच साल के दौरान प्रदेश की योगी सरकार ने माफियाओं व उपद्रवकारी तत्वों का हौसला तोड़ा है। माफिया विकास में बहुत बड़े बाधक थे। बावजूद इसके सरकार ने हौसला तोड़ने के साथ साथ विकास का भी कीर्तिमान स्थापित किया। मण्डल अध्यक्ष विनोद गुप्ता व पूर्व मण्डल अध्यक्ष अमरनाथ मद्धेशिया ने कहा कुशीनगर इंरनेशनल एयरपोर्ट का निर्माण कर भाजपा ने जता दिया है कि यही एक ऐसी पार्टी है जो विकास कर सकती है। आने वाले दिनों में यहां विकास के असीम अवसर होंगे। नौजवानों को रोजगार के लिए बाहर नही जाना पड़ेगा। पूर्व मण्डल अध्यक्ष गुलाब गुप्ता, जगदीश पटेल, पारस कुशवाहा, राजीव सिंह, मुन्ना चौधरी, उदयभान सिंह, अजय शर्मा, मनीष सिंह, ओंकार शर्मा, रजनीश शर्मा आदि ने भाजपा प्रत्याशी का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

आम आदमी पार्टी ने मुंगरा बादशाहपुर व मल्हनी से उतारे अपने प्रत्याशी

प्रखर जौनपुर। आम आदमी पार्टी के जिलाध्यक्ष एस एन सिंह मुन्ना ने बताया कि मुंगरा बादशाहपुर से जयप्रकाश पटेल तथा मल्हनी से जयप्रकाश चौहान को उतारा चुनावी मैदान में उतारा है, केंद्रीय कार्यालय पर प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए आम आदमी पार्टी के जिला अध्यक्ष श्री सिंह ने बताया कि आम आदमी पार्टी जनता के बीच दिल्ली मॉडल को लेकर जाएगी ,हम जाति धर्म में उलझे हुए उत्तर प्रदेश को साक्षर बनाने व इसकी उन्नति करने के पक्षधर हैं ,हम शिक्षा, स्वास्थ्य व ईमानदारी तथा भ्रष्टाचार के विपरीत आदि मुद्दा को लेकर के जनता के बीच में आए हैं और आशा है कि जनता का आपार जनसमर्थन हमको मिल रहा है। श्री सूर्य नारायण सिंह मुन्ना ने बताया कि अभी केराकत विधानसभा से चार पांच नाम पार्टी हाईकमान के पास गए हैं जल्दी उसकी भी घोषणा कर दी जाएगी ,उन्होंने कहा कि हम बिजली पानी रोटी कपड़ा और मकान की राजनीति करते हैं, हमको जाति धर्म से कोई लेना-देना नहीं, उन्होंने बताया कि हम सत्ता में आए तो पुराना बाकी बिजली का बिल माफ कर दिया जाएगा, स्वास्थ्य विभाग में हम अच्छा काम करेंगे ,सरकारी स्कूलों की दशा और दिशा को सुधारेंगे, सरकारी स्कूलों को मॉडल स्कूलों के रूप में हम स्थापित करेंगे। इस मौके पर दोनों ही प्रत्याशियों ने भी क्षेत्र में जीतने का दम भरा है।

18 तारीख को बरियासनपुर के किसान कैंडल मार्च शाम 6:00 बजे निकालेंगे - अशोक प्रजापति

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। किसान नेता अशोक प्रजापति किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि रिंग रोड फेज 2 जो बरियासनपुर में बन रहा है अंडरपास की मांग को लेकर किसानों का अनवरत धरनाजारी है आज धरना का 62 वां दिन है 18 तारीख को कैंडल मार्च बरियासनपुर से लेकर चिरईगांव ब्लॉक तक किसान निकालने का काम करेंगे` कैंडल मार्च निकालकर किसान शासन और प्रशासन और एनएचएआई के अधिकारियों को अवगत कराएंगे जल्द से जल्द पास बनवाया जाए यदि अंडरपास जल्द से जल्द नहीं बनता है तो किसान धरने पर भूख हड़ताल जारी कर देंगे और आंदोलन को और उग्र कर देंगे आवश्यकता पड़ी तो रिंग रोड का काम भी रोकने का काम करें क्योंकि शासन और प्रशासन एनएचएआई के अधिकारियों ने कई बार किसानों को आश्वासन दिया है कि अंडर पास बन जाएगा अभी तक नहीं बना उन्होंने कई बार सर्वे भी करवा चुके हैं और अभी तक कोई निर्णय नहीं ले सकते इसलिए किसानों में रोष है की भावना है और इसी को लेकर कैंडल मार्च निकालने का काम किया जाएगा यह कैंडल मार्च बृजेश कुमार पटेल के नेतृत्व में निकाला जाएगा जो एक अंतरराष्ट्रीय कोच हैं उक्त धरना स्थल पर श्याम जी पटेल, राम जी ,लक्ष्मी नारायण पटेल ,अजय मौर्या ,बहादुर यादव, राकेश पटेल रामकिशुन दीपक पटेल प्रेमलता पटेल, अहिल्याबाई, सरिता पटेल, संगीता पटेल ,गीता पटेल ,उर्मिला पटेल निर्मला पटेल धनेरा देवी इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

कार व बाइक की भीषण एक्सीडेंट मे दो युवक गंभीर रूप से घायल

प्रखर पूर्वांचल गोरखपुर न्यूज। जनपद गोरखपुर के कोनी गांव के पास दिनांक 13 फरवरी 2022 को रात्रि करीब 9 बजकर 30 मिनट के आस पास तेजरफ्तार बाइक व कार में भीषण टक्कर हो जाने से बाइक पर सवार दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए तथा बाइक पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई।इस संबंध में घायल युवक के भाई विनोद कुमार ने बताया कि हमारे भाई बलवंत कुमार पुत्र मिठाई लाल निवासी हक्काबाद जिला गोरखपुर अपने साथी के साथ बाइक पर जा रहे थे अचानक सामने से आ रही वढ53 ऊह 1921 नंबर की कार घने कोहरे के कारण अनियंत्रित होकर टक्कर मार दी।इस भीषण एक्सीडेंट मे बाइक सवार एक युवक का पैर टूट गया है तथा दूसरे युवक का ब्रेन में ज्यादा चोट लगी है। तत्काल नजदीकी प्राइवेट अस्पताल में घायल युवकों को स्थानीय लोगों की मदद से भर्ती कराया गया जहां से फिर जिला अस्पताल रेफर किया गया।

खून की कमी से किसी की जान ना जाए : मानव रक्त फाउंडेशन

प्रखर वाराणसी। मानव रक्त फाउंडेशन के तत्वधान में लगातार खून की जरूरत होने पर एक व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से लोगों की मदद किया जा रहा है पिछले कई वर्षों से इस संस्था के सहयोग से प्रदेश के साथ-साथ कई अन्य प्रदेशों में भी व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर लोगों की मदद किया जा रहा है।जैसे आज आजमगढ़ के सिधारी की एक बच्ची जिसकी उम्र 17 साल जो आजमगढ़ के निजी अस्पताल में भर्ती है जिसका खून का ग्रुप ए-नेगेटिव है।कहा जाता है ए-नेगेटिव ग्रुप का खून बहुत मुश्किल से मिलता है। बच्ची 2 दिन से बीमार थी अस्पताल में भर्ती थी जिले में इस ग्रुप के खून किसी रक्त कोष में ही नहीं बल्कि परिवार के कई लोगों में खोजा गया लेकिन नहीं मिला। जैसे ही मानव रक्त फाउंडेशन के लोगों को पता चला तत्काल संस्था के सक्रिय सदस्य राहुल गुप्ता ने परिवार से बात कर रक्तदान करने के लिए इच्छा जाहिर किया और रक्तकोष जाके रक्तदान किया। वहीं रक्त कोष के पदाधिकारियों द्वारा संस्था के बारे में बताया गया कि संस्था के माध्यम से लगातार कार्य हो रहा है जो बहुत ही सराहनीय कार्य है।परिवार के लोगों को खून मिलने के बाद ही खुशी का माहौल बदल गया जहां खून के लिए परेशान थे वही खून मिलने के बाद परिवार के लोग ने राहुल गुप्ता जी को धन्यवाद दिए। समाज में जहां नफरतें फैल रही हैं जाति धर्म को लेकर आपस में तनाव हो रहा है वहीं मानव रक्त फाउंडेशन के माध्यम से धर्म जाति से उठकर रक्तदान कर इंसानियत को बढ़ावा देने पे लगातार प्रयास हो रहा है। संस्था के उपाध्यक्ष फैसल आजमी ने कहा संस्था के माध्यम से लगातार व्हाट्सएप ग्रुप व सोशल मीडिया ग्रुप बनाकर जरूरतमंदों की मदद करने का प्रयास हो रहा हैं आजमगढ़ जनपद में प्रतिदिन संस्था के माध्यम से एक-दो ऐसे परिवार जो दूर से आए हैं और अस्पताल में भर्ती हैं।जिसको खून की जरूरत है।उनके पास कोई देने वाला नहीं है ऐसे परिवार को चिन्हित कर हमारे संस्था के सदस्यों के माध्यम से मदद की मुहिम चलाकर हम ऐसे परिवार की मदद कर रहे हैं और आजमगढ़ जनपद में कैंसर गर्भवती महिला जैसे मरीजों पर भी लगातार कार्य किया जा रहा है खून का इंतजाम करना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन जैसे खून का इंतेजाम होते ही खुशाहली का मौहल हो जाता है।और हमारे संस्था की युवक इंतजार करते हैं कि मेरा तीन महीना पूरा हो तो मैं किसी परिवार के लिए रक्तदान कर सकूं।आज जिस परिवार को खून की जरूरत थी हमारे संस्था के सक्रिय सदस्य राहुल गुप्ता जी का धन्यवाद करते हुए समाज के नवयुवकों को आगे आने के लिए अपील कर रहा हूं।

आल इंडिया रेलवे शु-शाईन वर्कर्स यूनियन और अम्बेकर युवा क्लब द्वारा संत शिरोमणि रविदास की जयंती समारोह का आयोजन

प्रखर रोहतास (सासाराम)। जिला ,कोचस प्रखंड ,लहेरी गाँव में आल इंडिया रेलवे शु-शाईन वर्कर्स यूनियन और अम्बेकर युवा क्लब द्वारा संत शिरोमणि रविदास की जयंती समारोह धूमधाम से मनाया की समीक्षा बैठक हुई यूनियन के रोहतास जिला अध्यक्ष चंदन ने कहा कि बुधवार को लहेरी रविदास मंदिर परिसर प्रखड कोचस, जिला रोहतास (सासाराम) में आयोजन होगा। समारोह में संत गुरू रविदास अमृतवाणी पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होगा समारोह का उद्घाटन विधायक संतोष मिश्रा करेंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में विधायक विजय कुमार मंडल होगे, मुख्य अतिथि राष्ट्रीय शोषित समाज दल के छात्र राष्ट्रीय अध्यक्ष विराट सिंह कुसवाहा, जिला परिषद विनय कुमार पाल, समाज सेवक और शिक्षक विनय कुमार मिश्रा और हमारे यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष लोकप्रिय समाज सेवक ओमप्रकाश राम शामिल हो रहे है। आल इंडिया रेलवे शु-शाईन वर्कर्स यूनियन पिछले 10 वर्षो से समाज में विभिन्न क्षेत्रों में जैसे शिक्षा, चिकित्सा एवं सामाजिक कार्यो में उत्कृष्ट कार्य करने वाले शख्सियत को हर वर्ष के तरह इस वर्ष भी यूनियन संत शिरोमणी रविदास महराज जयंती मना रही है और उन्होंने कहा की गुरू रविदास के बताये रास्ते पर चलना ही सच्ची भक्ति है। गुरू रविदास ने समाज से कुरीतियों को मिटाने का काम किया। जिससे समाज में एकता को बनाया जा सके। रविदास महाराज ने समाज से जातिवाद,छुआछुत,की भावना को मिटाने का काम किया ताकि समाज में भाईचारा,बंधुत्व भावना को बढाया जा सके। समाज को रविदास महाराज के आदर्शो पर समाज को चलने की आवश्यकता है। बैठक में तेजा कुमार,विक्रमा कमार , गोविन्द कुमार,घनश्याम राम , गोपाल राम,उपेंद्र राम , ओमप्रकाश राम, अरविंद राम,हलुमान राम, फिलीप कुमार, प्रधान कुमार,काशी राम,कमलेश रामकिसान कुमार,प्रीतम कुमार, निरहु ,खोदी कुमार, विकास कुमार आदि लोग उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय सेवा योजना सात दिवसीय शिविर का हुआ शुभारंभ

प्रखर कछवा रोड वाराणसी। स्थानीय क्षेत्र के महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी से संबंधित कॉलेज जगतपुर पीजी कॉलेज वाराणसी के राष्ट्रीय सेवा योजना के 7 दिवसीय शिविर का उद्घाटन डॉक्टर के के सिंह समन्वयक काशी विद्यापीठ वाराणसी ने किया । अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने मतदाता जागरूकता पर प्रकाश डाला कार्यक्रम अधिकारी डॉ प्रमोद कुमार श्रीवास्तव व डॉक्टर कृपाशंकर सिंह भी उपस्थित थे। डॉ प्रमोद कुमार श्रीवास्तव ने अपने भाषण में कहा राष्टीय सेवा योजना के माध्यम से छात्र व छात्राओं को सामुदायिक सेवा का अवसर मिलता है जो छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।स्वयंसेवकों ने अपने विचार भी प्रस्तुत किए हैं। वही स्वयंसेविका आस्था गोस्वामी ने मतदान वकोविड-19 से बचाओ पर अपना संक्षिप्त भाषण दिया। शिविर में आस्था गोस्वामी, निधि जैस्वाल, अभिषेक , रेखा सहित आदि लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

जिले में सभी सीटों पर कांग्रेस को मिलेगी विजय, फैसल हसन तबरेज

प्रखर जौनपुर। जिला कांग्रेस पार्टी कार्यालय जोगियापुर में सोमवार को पार्टी की अहम बैठक बुलाई गई। जिसमें राष्ट्रीय अपना दल(परशुराम निषाद एडवोकेट) के जिलाध्यक्ष मनोज कुमार नागर ने अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस पार्टी की नीतियों से प्रभावित होकर पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। इस मौके पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव बिजेंद्र मिश्रा, पार्टी के जौनपुर सदर विधानसभा से उम्मीदवार और जिला अध्यक्ष फैसल हसन तबरेज, जिला उपाध्यक्ष राकेश उपाध्याय, जिला महासचिव हीरालाल पाल,अजय सोनकर अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे। पार्टी जिला अध्यक्ष फैसल हसन तबरेज ने कहा कि जिले की सभी 9 विधानसभा सीटों पर कांग्रेस पार्टी बेहतर चुनाव परिणाम देने जा रही है। उन्होंने कार्यकताओं का आह्वान किया कि अभी से वह अपनी सक्रियता को बढ़ाये।

गुरु रविदास के जन्मदिन के 1 दिन पूर्व भी चला स्वच्छता अभियान तुलसीघाट, चेतसिह घाट से हरिचंद घाट तक

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। 95 बटालियन केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल,सृजन सामाजिक विकास न्यास तथा नगर निगम के संयुक्त तत्वधान में तुलसी घाट,चेतसिह घाट से लेकर हरिचंद घाट तक स्वक्षता अभियान चला तथा मतदान जन जागरूकता अभियान चलाया गया यह कार्यक्रम 95 बटालियन केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के कमांडेंट के मार्गदर्शन में चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री हरिराम मिश्रा सहायक कमांडेंट 95 बटालियन केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल थे इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अनिल सिंह ब्रांड एंबेसडर पर्यावरण विभाग उत्तर प्रदेश सरकार ने की श्री अनिल कुमार सिंह ने सभी को जल संरक्षण स्वच्छता अभियान मां गंगे को स्वच्छ रखने की शपथ दिलाई, साथ साथ स्वस्थ मानसिकता से मतदान करने की भी शपथ दिलाई इस कार्यक्रम में नगर निगम के स्वच्छता कर्मी भी बढ़ चढ़ कर भाग लिए । इस कार्यक्रम में 95 बटालियन केंद्रीय पुलिस बल के अधिकारी व उप निरीक्षक शिव शंकर सहायक उपनिरीक्षक पवन कुमार पाण्डेय के साथ प्रवीण सिंह तथा सृजन समाज विकास न्यास के कर्मचारी साथ साथ में व हरिश्चंद्र घाट और भदैनी घाट के सफाई कर्मी भी उपस्थित रहे।

सुनील सोनकर अजगरा 385 के होंगे प्रत्याशी 16 फरवरी को करेंगे नामांकन - ओमप्रकाश राजभर

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। सुभासपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर के वाराणसी प्रवास पर राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर ने घोषणा किया कि 385 अजगरा विधानसभा से श्री सुनील सोनकर सपा जिला उपाध्यक्ष सुभासपा के प्रत्याशी होंगे तथा सुभासपा के छड़ी चुनाव चिन्ह पर चुनाव लड़ेंगे। सपा सुभासपा गठबन्धन के संयुक्त प्रत्याशी होंगे।16 फरवरी को नामांकन करेंगे। यह जानकारी सुभासपा प्रदेश प्रवक्ता शशिप्रताप सिंह ने दिया।

संत श्री आसाराम जी आश्रम एवं युवा सेवा संघ द्वारा किया गया मातृ पितृ पूजन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। संत श्री आसाराम जी बापू की प्रेरणा से सन 2006 से पुरे विश्व में 14 फरवरी को मातृ पितृ पूजन का कार्यक्रम धूमधाम से मनाया जाता है बापू जी का कहना है कि वैलेंटाइन डे हमारी संस्कृति नहीं है इससे हमारे नौजवान गुमराह होते हैं और चरित्र भ्रष्ट होकर पतन की खाई में गिरते हैं बापूजी ने नौजवानों को चरित्रवान बनाने के लिए और माता-पिता का आदर सत्कार हो इसलिए इस कार्यक्रम को सिर्फ भारत में ही नहीं पूरे विश्व मे शुरू करवाया जिसका सभी नौजवान एवं सभी माता पिता को इसका लाभ मिल रहा है बापूजी की प्रेरणा से वाराणसी में लगभग एक जनवरी से ही गांव गांव में मातृ पितृ पूजन का कार्यक्रम संत श्री आसाराम जी आश्रम एवं युवा सेवा संघ द्वारा सम्पन्न किया गया। 14 फरवरी को वाराणसी के हरहुआ क्षेत्र के अनौरा गांव में स्थित संत श्री आसाराम जी आश्रम में मातृ पितृ पूजन का कार्यक्रम भव्यता से मनाया गया जिसका सभी नगरवासियों ने लाभ लिया एवं कार्यक्रम की सराहना की इस अवसर पर भोजन प्रसाद की भी व्यवस्था की गई थी बापूजी कि प्रेरणा से मातृ पितृ पूजन कार्यक्रम फरवरी महीने के अंत तक चलता रहेगा।

प्रखर पूर्वांचल
RNIUPHIN/2016/68754
मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित
सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001
सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802
सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।
ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com
सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं